DELHI UNIVERSITY LIBRARY SYSTEM

H4

Cl No P152:3

Ac No. 642515

Date of release of loan

This book should be returned on or before the date last stamped below An overdue charge of 20np will be charged for each day the book is kept overtime.

12 07 87	18 12/6		

अभिनव हिन्दी व्याकरण

कलकत्ता और पटना विश्वविद्यालयों, अजमेर इंटरमीजियेट बोर्ड,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा तथा राष्ट्रभाषाप्रचार
समिति द्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तक

लेखक
अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

प्रकाशक
उपेन्द्रनारायण वाजपेयी
२१, पत्थरगली, बनारस

—:o:—

सं० २००१ : सन् १९४४

मूल्य १।)

पंचम संस्करणकी भूमिका

इस संस्करणमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। नियमोंकी क्रमिक संख्यामें अवश्य ही परिवर्तन हुआ है, पर उसका अभिप्राय स्पष्टीकरणके सिवा और कुछ नहीं है।

काशी
आ० शु० ५ सं० २००१ } अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

प्रकाशकका निवेदन

इस संस्करणके प्रकाशनमें खर्च और हैरानीका विचार न करके मूल्य सवा रुपया ही रखा गया है। जल्दी करनेका जितना ही यत्न किया गया, उतनीही देर होती गयी। इसके और छापेकी सामान्य त्रुटिके लिये ग्राहक क्षमा करेंगे, क्योंकि अपने वशकी बात नहीं थी।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेसके जाब मैनेजर पं० देवीप्रसाद शर्मा और उसके अधीन कर्मचारियोंको धन्यवाद है जिन्होंने इस कामको अपना ही काम समझकर यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न किया।

उपेन्द्रनारायण वाजपेयी

विषय-सूची

नियम १–३५ १–६

पहला भाग—वर्ण-विचार ७–२७

नि० ३६-५० वर्ण और उनके उच्चारण पृ० ७; नि० ५१-५७ वर्ण लिखनेकी रीति १२; नि० ५८-६१ शब्दोंके उच्चारण १४; नि० ६२-१०७ सन्धि १५; स्वर सन्धि १५; व्यञ्जन सन्धि २१; विसर्ग सन्धि २५

दूसरा भाग—शब्द-विचार २८-११५

नि० १०८ प्राकृतिके अनुसार शब्दभेद २८; नि० १०९-१७ व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दभेद २८; नि० १११-१७ संज्ञा २९; नि० ११८-२६ लिंग—पुंलिंग और स्त्रीलिंग ३१; नि० १२७-३२ स्त्री-प्रत्यय ३४; नि० १३३ पुरुष-प्रत्यय ३७; नि० १३४ एकलिंगी शब्द ३८; नि० १३५ उभयलिंगी शब्द ३८; नि० १३६ भरमानेवाले शब्द ३९; नि० १३७ वचन ४०; नि० १३८-५० शब्द साधन ४१; नि० १५१-६३ पुंलिंग शब्दोके रूप ४४; नि० १६४-७७ सर्वनाम ५०; नि० १७८-८८ कारक ५५; नि० १८९-२०० विशेषण ५७; नि० २०१-२२१ क्रिया ५९; नि० २२२-६३ काल ६३; नि० २६४-७८ प्रेरणार्थक क्रिया ७७; नि० २७९-८१ संयुक्त क्रिया ८३; नि० २८२-८८ नाम धातु ८८; नि० २८९-३०१ कृदन्त ९०; नि० २९१-९२ कर्तृवाचक ९१; नि० २९३-९४ कर्मवाचक और कर्णवाचक ९१; नि० २९५-९८ भाववाचक ९२; नि० २९९-३०१ क्रियासे कर्तृवाचक संज्ञा ९३; नि० ३०२-३१२ उपसर्ग ९४; नि० ३१३-३१ अव्यय ९७; नि० ३२०-२१ क्रियाविशेषण ९८; नि० ३२२-२९ सम्वन्ध-सूचक अव्यय १०१; नि० ३३० समुच्चयबोधक अव्यय १०१; नि० ३३१ विस्मयादिबोधक अव्यय १०४; नि० ३३२-६७ तद्धित १०५; नि०

३३३-३७ कर्त्तृवाचक १०५; नि० ३३८-४३ ऊनवाचक १०८; नि० ३४२ स्थानवाचक १०८; नि० ३४३-५० विशेषण १०८; नि० ३५३-६४ गुणवाचक और भाववाचक ११०; नि० ३६५-६७ क्रियाविशेषण १११; नि० ३६८-८० समास ११२

तीसरा भाग—वाक्यरचना-विचार ११६-७१

नि० ३८१ **वाक्यरचना-विचारकी पद्धतियाँ** ११६; **विभक्ति-प्रत्ययोंके अर्थ और प्रयोग**—नि० ३८२ पहली विभक्ति ११६; नि० ३८३ दूसरी विभक्ति 'को' ११७, नि० ३८४ तीसरी विभक्ति 'ने' ११८; नि० ३८५ चौथी विभक्ति 'से' ११९; ३८६ पाँचवी विभक्ति 'मे' १२०; नि० ३८७-८९ सम्बोधन; नि० ३९०-४०० सम्बन्धवाचक प्रत्यय १२१; **नि० ४०१-४०६ क्रिया और क्रियापदोंके प्रयोग और अर्थ**—नि० ४०१-४०६ साधारण क्रिया १२४, नि० ४०६ विधि १२५; नि० ४०८-९ आज्ञा १२६; नि० ४१०-१६ भविष्यकाल; नि० ४१३ हेतुहेतुमदभूत; नि० ४१४ सामान्य वर्त्तमान १२७; नि० ४१५ तात्कालिक वर्त्तमान; नि० ४१६ सामान्य भूत नि० ४१७ पूर्ण वर्त्तमान; **नि० ४१६-५१० कई शब्दों और पदोंके प्रयोग १२८; नि० ५११-३१ शब्दोंकी पुनरुक्ति १४३; नि० ५३१-४७ वाक्य १४६; नि० ५४८-५३ वाक्यरचना वा पद-योजना १५०**; नि० ५५४-६३ विशेष्य, विशेषण और सर्वनाम १५२; नि० ५६४-७७ कर्त्ता और क्रिया १५३; **नि० ५७८-८८ वाच्यपरि-वर्त्तन १५६; नि० ५८९-६०३ संयुक्त वाक्य १५९**; नि० ६०४-६२९ आश्रित संयुक्त वाक्य १६२; नि० ६३०-३१ प्रश्नवाले वाक्य १६६; **नि० ६३२-३३ वाक्य-विश्लेषण १६६; नि० ६३४ पदच्छेद वा पदपरिचय १६८; नि० ६३५-३६ न्यून पदपूरण १६९**

सामान्य अशुद्धियोंका शुद्धिकरण १७१

वाक्सम्प्रदाय वा मुहावरे १८६

ॐ श्रीगणेशाय नम

अभिनव हिन्दी व्याकरण

परिभाषा (Definition)

१——मनुष्यकी बोलीका नाम भाषा (language) है। भाषाके दो रूप होते हैं, एक आंखसे देखा और पढ़ा जाता है और दूसरा मुँहसे बोला और कानोंसे सुना जाता है। पहलेको लिखित भाषा (written language) और दूसरेको कथित भाषा (spoken language) कहते हैं।

२——भारतका एक पुराना नाम हिन्द है, इसलिये हिन्दकी मुख्य भाषा हिन्दी कहाती है।

३——मनुष्योंकी भाषाओंके दो भेद होते हैं, एक नागरी वा नगरके लोगोंकी बोली (speech of the city) और दूसरी ग्राम-भाषा वा गांववालोंकी बोली (speech of the country). हिन्दीका एक नाम नागरी भी है, क्योंकि यह नगरके लोगों——नागरिकोंकी भाषा है, ग्रामीणों या देहातियोंकी नहीं।

४——जिस विषयके ज्ञानसे हमें पता लगता है कि नागरिकोंकी दृष्टिसे शुद्ध भाषा कौन है और अशुद्ध भाषा कौन, उसे व्याकरण (grammar) कहते हैं।

५——कथित भाषाका सबसे छोटा टुकड़ा ध्वनि (sound) और लिखित भाषाका अक्षर (letter) कहाता है। अक्षरका दूसरा नाम वर्ण है; जैसे, अ, क्, म्, र्।

६—भाषामें जितने अक्षर होते हैं. क्रमके अनुसार उनके सजे हुए रूपको वर्णमाला (alphabet) कहते हैं। वर्णमालाका दूसरा नाम 'ककहरा' है।

७—कई ध्वनियों वा अक्षरोंका क्रमपूर्वक जो उच्चारण होता है, उसे शब्द (word) कहते हैं; जैसे पानी, पान, भोजन।

८—भाषाके उस टुकड़ेका नाम वाक्य (sentence) है, जो कई शब्दोंसे बनता है और जिससे हम अपने मनका पूरा पूरा भाव प्रकट कर सकते हैं; जैसे, राम आता है, श्याम खाता है, मैं जाऊँगा।

९—जो शब्द-समूह सब विषयोंमें वाक्य-सा होता है पर स्वतन्त्र वाक्य न होकर किसी वाक्यका खंड होता है, वह खण्ड वाक्य वा उपवाक्य (clause) कहाता है।

१०—जो शब्द-समूह किसी वाक्यका अंश होता है और जिससे पूरी तरह मनका भाव नहीं जाना जाता तथा जिसमें कर्त्ता तथा क्रियाका अभाव रहता है, वह वाक्यांश (phrase) कहाता है; जैसे, यह जानकर।

११—हिन्दी भाषाके व्याकरणमें वर्णों, शब्दों और वाक्योंका विचार किया गया है।

१२—व्याकरणके जिस भागमें वर्णोंके नाम, भेद, आकार, मेल उच्चारण आदिका वर्णन रहता है, वह वर्णविचार (orthography) कहाता है।

१३—व्याकरणके जिस भागमें शब्दोंके भेद, साधन और व्युत्पत्तिका विचार होता है, उसे शब्दविचार (etymology) कहते हैं।

१४—व्याकरणके जिस भागमें वाक्यके अंगोंके अर्थ, पारस्परिक सम्बन्ध, वाक्योंके भेद और वाक्यरचनाके नियम रहते हैं, उसे वाक्य-विचार (syntax) कहते हैं।

१५—शब्दकी जड़का नाम धातु (root) है; जैसे, खा, पी, ले, आ।

१६—अर्थके अनुसार शब्द आठ प्रकारके होते हैं:—(१) संज्ञा (noun), (२) सर्वनाम (pronoun), (३) विशेषण (adjective), (४) क्रिया (verb), (५) क्रिया-विशेषण (adverb), (६) सम्बन्ध-बोधक (post-position), (७) समुच्चयबोधक (conjunction) और (८) विस्मयादिबोधक (interjection). अन्तिम चारो अव्यय (indeclinable) भी कहाते हैं।

१७—शब्दके आगे वा पीछे जिन टुकड़ोंके जोड़नेसे उसके अर्थ वा अवस्थामें अन्तर पड़ता है वा विशेषता आती है, उन्हें उपसर्ग और प्रत्यय कहते हैं।

१८—शब्दके आगे जो टुकड़े जोड़े जाते हैं, वे उपसर्ग (prefix) और जो पीछे जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय (suffix) कहाते हैं; जैसे, लोभ शब्दमें निर् (निः) उपसर्ग लग जानेसे निर्लोभ बना और अर्थ हुआ 'जिसमें लोभ न हो' तथा लोभ शब्दमें 'ई' प्रत्यय लगा दिया, तो लोभी शब्द बन गया, जिसका अर्थ हो गया 'जो लोभ करता हो।'

१९—प्रत्ययके पांच भेद हैं, (१) विभक्ति-प्रत्यय, (२) क्रिया-प्रत्यय, (३) कृत् प्रत्यय, (४) नाम वा तद्धित प्रत्यय तथा (५) विविध।

२०—जिन प्रत्ययोंके जुड़नेसे संज्ञा वा सर्वनाम शब्दोंके रूप बदल जाते हैं, उन्हें विभक्ति प्रत्यय (case-termination) वा (case-ending) कहते हैं।

२१—प्रत्यय-युक्त शब्दका नाम विभक्ति वा पद है। शब्दोंमें विभक्ति-प्रत्यय जोड़कर पद बनाना शब्द साधन (declension) कहाता है।

२२—जिस शब्दमें प्रत्यय जोड़नेसे दूसरे शब्द वा पद बनते हैं, उसे मूल शब्द (original word) कहते हैं।

२३—मूल शब्दमें प्रत्यय जोड़नेसे जो शब्द बनते हैं, वे साधित शब्द (derivative word) कहाते हैं; जैसे, 'बाल' मूल शब्द है। इसमें 'पन' प्रत्यय जोड़ते हैं, तो 'बालपन' साधित शब्द बन जाता है और यदि 'पन' न जोड़कर 'से' विभक्ति-चिह्न जोड़ दें, तो सिद्ध पद 'बालसे' बन जाता है। इसी प्रकार 'लाड़' मूल शब्दमें सम्बन्धसूचक प्रत्यय 'का' जोड़ दें, तो 'लाड़का' वा 'लड़का' साधित शब्द बन जाता है और इस साधित शब्दमें 'पन' प्रत्यय जोड़ देते हैं, तो 'लड़कपन' बन जाता है।

२४—दो अक्षरोंका परस्पर मिलकर तीसरा रूप धारण करना सन्धि कहाता है।

२५—दो वा अधिक शब्दों वा पदोंको जोड़नेकी पद्धतिका नाम समास (compound) है। समाससे बने यौगिक शब्द समस्त शब्द (compound word) कहाते हैं।

२६—संज्ञा, विशेषण और सर्वनामके पीछे जुड़नेवाले प्रत्यय नाम प्रत्यय (nominal affix) कहाते हैं; जैसे, पन, आई।

२७—नाम-प्रत्ययोंके जुड़नेसे जो शब्द बनते हैं, वे तद्धित (derivative noun) कहाते हैं; जैसे, लड़का + पन = लड़कपन, सुन्दर + ता = सुन्दरता, आप + ना = अपना।

२८—धातुमें 'ना' प्रत्यय जोड़नेसे क्रिया बनती है; जैसे, कर + ना = करना, खा + ना = खाना।

२९—धातुमें प्रत्ययके जुड़नेपर जो रूप बनते हैं, वे क्रियापद और जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, वे क्रिया-प्रत्यय (verbal termination)

कहाते हैं; जैसे, आ + ता = आता, खा+या = खाया। क्रियापदोंको धातुरूप भी कहते हैं।

३०—धातुमें क्रिया-प्रत्ययोंके जोड़नेकी पद्धति क्रिया-पदसाधन (conjugation) कहाती है।

३१—धातुमें जिन प्रत्ययोंके जुड़नेसे संज्ञा वा विशेषण बनते हैं, वे कृत् प्रत्यय (verbal affix) कहाते हैं।

३२—कृत् प्रत्ययोंके योगसे बने हुए शब्द कृदन्त (verbal noun or gerund) कहाते हैं; जैसे, बोल, बोल + ई = बोली; बन + आव = बनाव।

३३—जिन शब्दोंके उच्चारण एक वा एकसे होते हैं, परन्तु अर्थोंमें अन्तर होता है, वे समोच्चारित (paronyms) कहाते हैं; जैसे; 'बन्दर' शब्दका एक अर्थ बानर और दूसरा जहाजोंका अड्डा है, पर उच्चारणमें अन्तर नहीं है। इसी प्रकार 'लिये" शब्दका एक अर्थ निमित्त वा वास्ते है और दूसरा 'लिया' का बहुवचन 'गृहीत' होता है। इसी तरह, बाल (लड़का), बाल (केश); दारु (लकड़ी), दारू (शराब); कूल (किनारा), कुल (कुटुम्ब); कोशल (देश), कौशल (चातुरी); गिरिश (शिव), गिरीश (शिव वा हिमालय); चिर (दीर्घ), चीर (वस्त्र); तरणी (नौका), तरुणी (युवती); दिन (दिवस), दीन (दरिद्र)।

३४—जिन शब्दोंके अर्थ कुछ-कुछ वा बिलकुल एकसे होते हैं, वे पर्यायवाचक (synonyms) कहाते हैं; जैसे, प्रकृति और स्वभाव; निमित्त और हेतु; कौशल और चातुर्य; अनल और पावक (आग); गगन और व्योम (आकाश); चिकुर और केश (बाल); चक्षु और नयन (आंख)।

३९—जिन शब्दोंके अर्थ विपरीत होते हैं, वे विपरीतार्थक (antonyms) कहाते हैं; जैसे, ऊँचा और नीचा; गरीब और अमीर; छोटा और बड़ा; राव और रंक तथा आगे, पीछे; भीतर, बाहर; ऊपर, नीचे; उदय, अस्त इत्यादि।

अभ्यास

१—भाषा किसे कहते है ? उसके रूपोका वर्णन करो।

२—व्याकरणका क्या प्रयोजन है ? उसके भागोकी व्याख्या करो।

३—भाषाका सबसे छोटा टुकड़ा क्या है ? वर्णमाला किसे कहते है?

४—खडवाक्य और वाक्याशमे क्या भेद है ? वाक्यकी परिभाषा बताओ।

५—उपसर्ग और प्रत्ययमे क्या अन्तर है ? धातुकी व्याख्या करो।

६—विभक्ति और विभक्ति-प्रत्ययमे क्या अन्तर है ?

७—शब्द कै प्रकारके है ?

८—तद्धित और कृदन्तमे क्या अन्तर है ?

९—सन्धि और समासमे क्या भेद है ?

१०—शब्दोके कितने भेद है और उनके नाम क्या है ?

पहला भाग

वर्ण-विचार

१—वर्ण और उनके उच्चारण

३६—हिन्दी वर्णमालामें ४८ अक्षर हैं। इनके दो भेद हैं, स्वर (vowel) और व्यञ्जन (consonant).

३७—स्वर वर्ण वे कहाते हैं, जिनके उच्चारणमें किसीकी सहायता आवश्यक नहीं होती; जैसे, अ, इ, उ, ए आदि।

३८—व्यञ्जन वर्ण वे कहाते हैं, जिनके उच्चारण स्वरोंकी सहायताके बिना नहीं हो सकते; जैसे, क, ग, च, ज, द, ध।

३९—उच्चारणके सुभीतेके लिये व्यञ्जनोंमें 'अ' लगा मान लिया जाता है। जब अकार नहीं लगा रहता, तब व्यञ्जनोंके नीचे तिरछी रेखा लगा देते हैं, जिसे 'हल्' कहते हैं; जैसे, क्, म्, ल्, व्।

४०—ये ग्यारह (११) स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

४१—ये ३७ व्यञ्जन हैं—

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य र ल व

श ष स ह

ड़ ढ़

ं (अनुस्वार) और : (विसर्ग)

४२—स्वरोंके भी दो भेद होते हैं:—ह्रस्व (short) और दीर्घ (long). ह्रस्व स्वरके उच्चारणमें जितना समय लगता है, दीर्घके उच्चारणमें उससे दूना लगता है। अ, इ, उ, और ऋ ये ह्रस्व स्वर हैं और आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ ये दीर्घ स्वर हैं। ह्रस्वको एकमात्रिक और दीर्घको द्विमात्रिक भी कहते हैं।

४३—उच्चारणके अनुसार व्यञ्जनोंके तीन भेद हैं, अल्पप्राण, महाप्राण और सानुनासिक अल्पप्राण। जिन व्यञ्जनोंमें 'ह' अक्षरका उच्चारण मिला रहता है, वे महाप्राण (aspirate) कहाते हैं; जैसे, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, फ, भ। जिनमें 'ह' का उच्चारण नहीं रहता, वे अल्पप्राण (unaspirate) कहाते हैं; जैसे क, ग, च, ज, त, द, प, ब। जिन अल्पप्राण व्यञ्जनोंमें नकसुर उच्चारण भी रहता है, वे सानुनासिक अल्पप्राण (nasal unaspirate) कहाते हैं; ङ, ञ, ण, न, म। 'झ' को 'झ' और 'ण' को 'ण' भी लिखते हैं।

४४—व्यञ्जनोंके और तीन भेद हैं, स्पर्श (mute), अन्तस्थ (liquid) और ऊष्म (sibilant). 'क' से 'म' तक स्पर्श, 'य' से 'व' तक अन्तस्थ और 'श' से 'ह' तक ऊष्म कहाते हैं।

४५—जिस वर्णका जहांसे उच्चारण होता है, वह उसका उच्चारण स्थान कहाता है। उच्चारणस्थानके अनुसार वर्णोंका विभाग इस प्रकार किया जाता है:—

'अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह' और विसर्गका उच्चारण कण्ठसे होता है, इससे ये कण्ठ्य (guttural) कहाते हैं।

'इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श' का उच्चारण तालुसे होता है, इससे ये तालव्य (palatal) कहाते हैं।

'ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, ड़, ढ़,' का उच्चारण मूर्द्धासे होता है, इससे ये मूर्द्धन्य (cerebral) कहाते हैं।

'त, थ, द, ध, न, ल, स' का उच्चारण दांतोंसे होनेसे ये दन्त्य (dental) कहाते हैं।

'उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म' का ओठोंसे उच्चारण होनेसे ये ओष्ठ्य (labial) कहाते हैं।

'ए' और 'ऐ' का उच्चारण कण्ठ और तालुसे होनेके कारण ये कण्ठतालव्य (gutturo-palatal) कहाते हैं।

'ओ' और 'औ' का उच्चारण कण्ठ और ओठोंसे होनेसे ये कण्ठोष्ठ्य (gutturo-labial) कहाते हैं। 'व' का उच्चारण दांतों और ओठोंसे होनेके कारण वह दन्तोष्ठ्य (dento-labial) कहाता है।

अनुस्वारका उच्चारण मुख और नासिकासे होनेसे यह अनुनासिक (nasal) कहाता है।

४६—दीर्घ स्वरोंको सन्धि-स्वर भी कह सकते हैं, क्योंकि वे दो वा तीन स्वरोंके योगसे बनते हैं। ये दो तरहके हैं, एक तो वे जो उसी स्वरके दीर्घ उच्चारणके कारण बनते हैं; जैसे, आ, ई, ऊ जो क्रमशः अ+अ, इ+इ, और उ+उ हैं और दूसरे वे जो भिन्न-

नोट—यह और इसके बादके दोनो पाठ अक्षरारम्भ करनेवालोको पढाने चाहिये। अक्षरोके उच्चारण और लेखनके साथ ही वर्णविचार आ जाना चाहिये। यहा विषयकी पूर्णताके लिये इसे दे दिया है।

भिन्न-स्वरोंके मिलनेसे बनते हैं; जैसे, ए, ऐ, ओ औ। अ+इ=ए, आ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, आ+ओ=औ हैं। 'ए' और 'ओ को अंगरेजी में diphthong और 'ऐ' और 'औ' को triphthong कहते हैं, क्योंकि पहले दो अक्षरोंमें दो स्वरोंका और पिछले दोनोमें तीन तीन स्वरोंका एक साथ उच्चारण होता है।

४७—उच्चारणके अनुसार स्वरोंके दो भेद और कहे जाते हैं, एक अनुनासिक और दूसरा अननुनासिक। जो स्वर नकसुर बोले जाते हैं, वे अनुनासिक और जो नाककी सहायताके बिना ही बोले जाते हैं, वे अननुनासिक कहाते हैं; जैसे अंगूठो और चांदीमें अ और आ अनुनासिक हैं। पर अठारह और आलूमें अननुनासिक हैं। अनुनासिक स्वर जताने के लिये कभी कभी उसपर ऐसा ँ चिह्न लगा दिया जाता है, जो चन्द्र-बिन्दु कहाता है। पर बहुधा अनुस्वारसे ही इसका काम लिया जाता है।

४८—हिन्दी भाषामें ए, ऐ, ओ और औ स्वरोंके दो दो उच्चारण होते हैं, जिनमें एक साधारण और दूसरा असाधारण है। एक, ऐक्य, मोटा और कौआ शब्दोंमें ए, ऐ, ओ और औ अक्षरोंका साधारण उच्चारण होता है। परन्तु एक्का, ऐसा, मोहल्ला और चौसर शब्दोंमें उनका उच्चारण असाधारण है। 'ए' और 'ओ' स्वरोंका जहाँ असाधारण उच्चारण होता है, वहां इनके बदले कभी-कभी इ और उ भी लिखते हैं। 'ऐ' और 'औ' स्वरोंके साधारण उच्चारण 'अइ' और 'अउ' तथा असाधारण उच्चारण 'अय्' और 'अव्' होते हैं।

४९—व्यञ्जनोंके प्रथम २५ वर्णोंके पांच-पांच अक्षरोंकी पांच श्रेणियां की गयी हैं, जो वर्ग (class) कहलाती हैं। प्रत्येक वर्गके प्रथम अक्षरपर उस वर्गका नाम पड़ा है; जैसे, क वर्गसे 'क' से 'ङ'

तक, च वर्गसे 'च' से 'ञ' तक, ट वर्गसे 'ट' से 'ण' तक, त वर्गसे 'त' से 'न' तक और प वर्गसे 'प' से 'म' तकके अक्षरोंका बोध होता है।

१०—व्यञ्जनोंमें 'ङ' का उच्चारण कण्ठके साथ ही नासिकासे भी होता है और नासिकाका प्राधान्य होनेके कारण ही यह अनुनासिक अल्पप्राण कहाता है। दांतपर दांत रखकर बिना मुँह बहुत खोले इसका उच्चारण होता है। 'ञ' का उच्चारण तालुमें सारी जीभ फैलाकर दबानेसे और 'ण' का उच्चारण जीभकी नोकको उलटकर मूर्द्धामें लगानेसे होता है। 'ड़' का उच्चारण 'ण' की भाँति ही होता है, पर इसमें नासिकाका प्रयोजन नहीं होता। अनुस्वारका उच्चारण 'म' वा 'न' की भांति होता है, परन्तु हिन्दी शब्दोंमें रहनेसे वह अर्द्धानुस्वार वा चन्द्रबिन्दुका काम भी करता है; जैसे, अंगौछा, आंधी, ईंट, उंगली, ऊंट। 'ड़' के उच्चारणमें 'ह' का उच्चारण मिला देनेसे 'ढ़' का उच्चारण हो जाता है। संयुक्त वर्ण 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्यँ' और बहुधा 'ग्य' ही होता है।

अभ्यास

(१) वर्णोंकी संख्या और उनके भेद बताओ।

(२) स्वर और व्यजनोमे क्या अंतर है? सन्धि-स्वर कौन कौन है और क्यो उनका यह नाम है?

(३) अल्पप्राण और महाप्राण व्यञ्जन कौन और क्यो है?

(४) वर्णोंके उच्चारण-स्थानके अनुसार उनका विभाग करो।

(५) ए, ऐ, और ओ, औ अक्षरोके दोनो उच्चारणोके भेद बताओ?

(६) ङ, ञ, ण, ड़ और ढ़ के उच्चारणके नियम बताओ।

२—वर्ण लिखनेकी रीति

५१—जिन अक्षरोंमें हिन्दी लिखी जाती है, वे नागरी या देवनागरी कहाते हैं। लिखे अक्षरोंको लिपि भी कहते हैं।

५२—जब स्वर व्यञ्जनोंके साथ मिलाकर लिखे जाते हैं, तब उनका वह रूप नहीं रहता, जो वर्णमालामें देखा जाता है। उनके प्रतिनिधि-स्वरूप कुछ चिह्न रहते हैं, जो मात्रा कहाते हैं और ये ही व्यञ्जनोंसे मिलते हैं। 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती। इसलिये जब दिखाना होता है कि किसी व्यञ्जनमें 'अ' नहीं है, तब उसके नीचे हल् (्) चिह्न लगा दिया जाता है। (देखो नियम ३९वाँ।)

५३—शेष दस स्वरोंकी मात्राएँ इस प्रकार हैं :—

ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

'अ' तथा इन स्वरोंका 'क्' व्यञ्जनके साथ योग होनेसे इस प्रकार रूप होते हैं :—

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ

५४—व्यञ्जनका व्यञ्जनसे जब योग होता है, उस समय व्यञ्जन युक्त वा संयुक्त कहाते हैं। संयुक्त व्यञ्जन तीन प्रकारसे लिखे जाते हैं; (१) जिनमें मिलनेवाले किसी व्यञ्जनका रूप नहीं दिखता। ये तीन ही हैं—क्ष, त्र और ज्ञ। क्+ष्=क्ष्, त्+र्=त्र्, ज्+ञ्=ज्ञ्। हिन्दीमें 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्यँ' किया जाता है। बहुतसे लोग 'ग्य' ही कहते हैं। (२) जिनमें अक्षर नीचे ऊपर लिखे जाते हैं और वे ट, ठ, ड, द और ढ हैं; जैसे टट्टड़, अड्डा, गद्दी, गट्ठड़। (३) जिनमें अक्षर आगे पीछे लिखे जाते हैं और अगले अक्षरकी सीधी पाई हटाकर

मिलाये जाते हैं। ये अक्षर ख, घ, त, थ, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष और स जब एक दूसरेसे मिलते हैं, तब पहले आनेवाले अक्षरोंकी खड़ी पाई गिर जाती है; जैसे, ख्याति, लग्घड़, पत्थर, भब्भड़, म्यान, शल्य, श्वास, शिष्य। क, च, ज, न और ल दूसरे और तीसरे दोनो नियमोंसे लिखे जाते हैं।

४५—ङ् और ञ् जब किसी व्यञ्जनसे मिलते हैं, तब उसके ऊपर लिखे जाते हैं; जैसे, शङ्ख, पङ्क, कञ्चन, गृञ्जन, वाङ्मय। पर ण, न और म जब किसी व्यञ्जनके पहले आते हैं, तब इनकी खड़ी पाई गिर जाती है। त द्वित्व होनेसे त्त और ण ण्ण तथा ण्ण लिखा जाता है; जैसे, पत्ता, विषण्ण, विषण्ण।

४६—जब 'र्' किसी अक्षरके पहले आता है, तब उसके ऊपर लिखा जाता है और पीछे आता है, तब नीचे लिखा जाता है; जैसे, अर्क, वज्र। उ और ऊकार जब 'र' मे लगते हैं, तब 'रु' और 'रू' रूप होते हैं।

४७—जब क् के साथ त या र जुड़ता है, तब दोनोंके रूप ऐसे होते हैं :—क्त, क्र। क्, ट्, ड् और ढ् के साथ य जुड़ता है, तब उनके रूप ऐसे होते हैं :—क्य, ट्य, ड्य, ढ्य। क् के साथ व मिलता है, तब क्व लिखा जाता है। ष का योग ट, ठ, या य से होता है, तब ये रूप होते हैं;—ष्ट, ष्ठ, ष्य। ह के साथ ण, न, म, य, र, ल और व का योग होनेसे इस प्रकार रूप बनते हैं :—

ह्ण, ह्न, ह्म, ह्य, ह्र, ह्ल, ह्व,

अभ्यास

(१) स्वरोको व्यञ्जनोके साथ मिलाकर किस प्रकार लिखते है ?

(२) व्यञ्जनको व्यञ्जनके साथ जोड़नेकी क्या रीति है ?

(३) त और ण द्वित्व कैसे किये जाते हैं ?

(४) 'क' के साथ 'त' और 'र' का तथा 'ह' के साथ 'ण', 'न', 'म', 'य', 'र', 'ल' और 'व' का योग किस प्रकार किया जाता है ?

३—शब्दोंके उच्चारण

५८—सभी अकारान्त शब्दोंका उच्चारण ऐसे किया जाता है, मानो वे व्यञ्जनान्त ही हों; जैसे, खाट, लात हाथ, सिर आदि। यहाँ ट, त, थ और र स्वरान्त लिखे गये हैं, पर बोले ऐसे जाते हैं, जैसे अकारान्त हों ही नहीं।

५९—जब कभी 'अ' किसी व्यञ्जनमें मिला नहीं रहता और शब्दके अन्तमें आता है, तब वह बोला जाता है; जैसे, गरुअ, हरुअ आदि।

६०—इसी प्रकार जब अन्तिम 'अ' 'य्' से युक्त हो और उसके पहलेके अक्षरमें इकार हो; तो अकारका उच्चारण किया जाता है; जैसे, करिय, भजिय, कहिय।

६१—जब शब्दके अन्तका 'अ' संयुक्त वर्ण होता है, तब वह बोला जाता है; जैसे, काष्ठ, वाक्य, शास्त्र, धर्म आदि।

अभ्यास

अकारान्त शब्दोंके उच्चारणके नियम बताओ।

४—सन्धि

६२—सन्धि तीन प्रकारकी हैं, (१) स्वर सन्धि, (२) व्यञ्जन सन्धि और (३ विसर्ग सन्धि।

६३—दो स्वरोंमें जो सन्धि होती है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। एक स्वर और एक व्यञ्जनमें तथा दो व्यञ्जनोंमें जो सन्धि होती है, उसे व्यञ्जन सन्धि और विसर्गके साथ स्वर अथवा व्यञ्जनकी जो सन्धि होती है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

विशेष द्रष्टव्य—यह सन्धि प्रकरण संस्कृत व्याकरणका विषय है। परन्तु स्वर सन्धिके कई नियम हिन्दीकी सन्धिमें भी काम आते हैं। इसलिये ये विस्तारसे बताये गये हैं। हिन्दीमें संस्कृतके बहुत शब्द लिखे और बोले जाते हैं, इसलिये विद्यार्थियोंके ज्ञानवर्द्धनके लिये व्यञ्जन और विसर्ग सन्धियोंके नियम भी संक्षेपमें दिये गये हैं।

स्वर सन्धि

६४—एक ही जातिके दो स्वरोंमें जब सन्धि होती है, चाहे वह ह्रस्व और दीर्घ हों वा ह्रस्व और ह्रस्व हों अथवा दीर्घ और ह्रस्व हों, किंवा दीर्घ और दीर्घ हों, तब वह स्वर दीर्घ हो जाता है। इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं; जैसे :—

अ + अ = आ	ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव
अ + आ = आ	धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
आ + अ = आ	रेखा + अङ्क = रेखाङ्क
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय

ऊपर न, म, खा और या में क्रमशः अ, अ, आ और आ लगे हुए हैं, इससे उन्हींके साथ पिछले अ, आ, और आकी सन्धि हुई है।

इसी प्रकार—इ + इ = ई	हरि + इच्छा = हरीच्छा
इ + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश
ई + ई = ई	गौरी + ईश्वर = गौरीश्वर
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
और उ+उ = ऊ	साधु + उदय = साधूदय
उ+ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि
ऊ+उ = ऊ	बधू + उत्सव = बधूत्सव
भू+ऊ = ऊ	भू + ऊर्द्ध = भूर्द्ध
तथा ऋ+ = ऋ	पितृ + ऋण = पितृण

६४—जब 'अ' वा 'अ' के बाद 'इ' वा 'ई' रहती है, तो वे दोनो मिलकर 'ए' हो जाते हैं। इसी तरह जब 'उ' वा 'ऊ' रहते हैं, तब वे मिलकर 'ओ' हो जाते हैं और जब 'ऋ' रहती है, तब अर् हो जाते हैं। इस प्रकारकी सन्धिको गुण सन्धि कहते हैं; जैसे—

अ + इ = ए,	उप + इन्द्र = उपेन्द्र
अ + ई = ए,	गण + ईश = गणेश
आ+ इ = ए,	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ+ई = ए,	रमा + ईश = रमेश
और अ + उ = ओ,	सूर्य + उदय = सूर्योदय
अ + ऊ = ओ,	जल + ऊर्मि = जलोर्मि
आ + उ = ओ,	महा + उपदेश = महोपदेश
आ + ऊ = ओ,	महा + ऊर्मि = महोर्मि
तथा आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

६६—'अ' वा 'आ' के बाद 'ए' वा 'ऐ' रहे, तो दोनो मिलकर 'ऐ'

और 'ओ' वा 'औ' रहे, तो दोनो मिलकर 'औ' होते हैं। इस प्रकारकी सन्धि वृद्धि सन्धि कहाती है; जैसे :—

अ + ए = ऐ,	एक + एक = एकैक
अ + ऐ = ऐ,	पूर्ण + ऐश्वर्य = पूर्णैश्वर्य
आ+ए = ऐ,	सदा + एव = सदैव
आ+ऐ = ऐ,	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
इसी प्रकार अ + ओ = औ,	जल + ओघ = जलौघ
अ + औ = औ,	परम + औषध = परमौषध
आ+ओ = औ,	महा + ओषधि = महौषधि
आ+औ = औ,	महा + औदार्य = महौदार्य

६७—'इ' वा 'ई' के बाद 'इ' वा 'ई' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो, तो 'इ' वा 'ई' की जगह 'य्' हो जाता है। इसी प्रकार 'उ' वा 'ऊ' के बाद 'उ' वा 'ऊ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो, तो 'उ' वा 'ऊ' के स्थानमें 'व्' हो जाता है और यदि 'ऋ' के बाद 'ऋ' को छोड़कर दूसरा स्वर रहे, तो 'ऋ' की जगह 'र्' हो जाता है। इसे यण् सन्धि कहते हैं, जैसे—

इ + अ = य, यदि + अपि = यद्यपि। यहां पहले यदि हुआ यद्य् और अपिके 'अ' से मिलकर 'यद्यपि' हो गया।

इ + आ = या,	इति + आदि = इत्यादि
इ + उ = यु,	प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
इ + ऊ + यू,	नि + ऊन = न्यून
इ + ए = ये,	प्रति + एक = प्रत्येक
इ + ऐ = यै,	अति + ऐश्वर्य = अत्यैश्वर्य
इ + ओ = यो,	अति + ओज = अत्योज
इ + औ = यौ,	अति + औदार्य = अत्यौदार्य

ई + अ = य,	नदी + अम्बु = नद्यम्बु
ई + आ = या,	देवी + आगता = देव्यागता
ई + उ = यु,	सखी + उक्तम् = सख्युक्तम्
ई + ऊ = यू,	शशी + ऊर्ध्वग = शश्यूर्ध्वग
ई + ए = ये,	गोपी + एषा = गोप्येषा
ई + ऐ = यै	बली + ऐरावत = बल्यैरावत
ई + ओ = यो,	सरस्वती + ओघ = सरस्वत्योघ
ई + औ = यौ,	वाणी+औचित्य = वाण्यौचित्य
इसी प्रकार उ + अ = व,	अनु + अय = अन्वय
उ + आ = वा,	सु + आगत = स्वागत
उ + इ = वि,	तनु + इन्द्रिय = तन्विन्द्रिय
उ + ई = वी,	साधु + ईहित = साध्वीहित
उ + ऋ = वृ,	मधु + ऋत = मध्वृत
उ + ए = वे,	अनु + एषण = अन्वेषण
उ + ऐ = वै,	अनु + ऐक्षिष्ट = अन्वैक्षिष्ट
उ + ओ = वो,	मधु + ओदन = मध्वोदन
उ + औ = वौ,	सु + औषध = स्वौषध
ऊ + अ = व,	सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु
ऊ + आ = वा,	बधू + आदि = बध्वादि
ऊ+इ = वि,	तनू + इन्द्रिय = तन्विन्द्रिय
ऊ+ई = वी,	तनू + ईश्वर = तन्वीश्वर
ऊ+ए = वे,	सरयू+एधित = सरय्वेधित
ऊ+ऐ = वै,	बधू + ऐश्वर्य = बध्वैश्वर्य
ऊ+ओ = वो,	सरयू+ओघ = सरय्वोघ

ऊ+औ = वौ,	बधू+औदार्य = बध्वौदार्य
ऋ+अ = र,	पितृ+अनुमति = पित्रनुमति
ऋ+आ = रा,	पितृ+आदेश = पित्रादेश
ऋ + इ=रि,	पितृ + इच्छा=पित्रिच्छा
ऋ + ई=री,	पितृ + ईहित=पित्रीहित
ऋ + उ=रु,	पितृ + उपदेश=पित्रुपदेश
ऋ + ऊ=रू,	पितृ + ऊह=पित्रूह
ऋ + ए=रे,	पितृ + एषण=पित्रेषण
ऋ + ऐ=रै,	पितृ + ऐश्वर्य=पित्रैश्वर्य
ऋ + ओ=रो,	पितृ+ओक=पित्रोक
ऋ+औ=रौ,	पितृ+औदार्य=पित्रौदार्य

६८—'ए', 'ऐ', 'ओ' और 'औ' के बाद जब कोई स्वर रहता है, तब 'ए', 'ऐ', 'ओ' और 'औ' के स्थानमें क्रमशः 'अय्', 'आय्' 'अव्' और 'आव्' हो जाते हैं। इसे अयादिचतुष्टय कहते हैं; जैसे—

ए + अ = अय,	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय,	नै + अक = नायक
ओ + अ = अव,	पो + अन = पवन
औ + अ = आव,	पौ + अक = पावक
ए + आ = अया,	शे + आन = शयान
ए + इ = अयि,	शे + इत = शयित
ए + ई = अयी,	शे + ईत = शयीत
ए + ए = अये,	शे + ए = शये
ए + ऐ = अयै,	शे+ऐ = शयै
ऐ+आ = आया,	~~रै + आ~~

ऐ+इ = आयि,	रै+इ = रायि
ऐ+ई = आयी	
ऐ+ए = आये	रै+ए = राये
ऐ+ऐ = आयै,	
ऐ + ओ = आयो	रै + ओः = रायोः
ओ+आ = अवा,	गो+आ = गवा
ओ+इ = अवि,	पो+इत्र = पवित्र
ओ+ए = अवे,	गो+ए – गवे
ओ+ऐ = अवै,	
ओ+ओ = अवो,	गो+ओः = गवोः
औ + अ = आव	पो + अकः = पावकः
औ+आ = आवा,	नौ+आ = नावा
औ+इ = आवि,	भौ+इ नी = भाविनी
औ+ई = आवी	भौ + ई = भावी
औ+उ = आवु,	भौ+उक = भावुक
औ+ऊ = आवू	
औ+ए = आवे,	नौ+ए = नावे
औ+ऐ = आवै,	
औ+ओ = आवो,	नौ+ओः = नावोः
औ+औ = आवौ,	नौ+औ = नावौ

अभ्यास

१––सन्धि किसे कहते है ? २––सन्धिके भेद बताओ। ३––स्वर सन्धि कै प्रकारकी है ? उदाहरण द्वारा समझाओ।

४––नीचे लिखे शब्दोमे सन्धि करो :––

नौ+औ, भौ+इनी, पो+अन, पितृ+एषणा, अनु+एषण, नि+ऊन, वाणी+औचित्य, अनु+अय, रमा+ईश, महा+उपाध्याय, पूर्ण+ऐश्वर्य।

५—नीचे लिखे शब्दोकी सन्धि तोडो (विग्रह करो):—नयन, राया, गवा, सरय्वम्बु, पित्रादेश, स्वागत, यद्यपि, प्रत्येक, प्रत्युपकार, महौषधि, सदैव, राजर्षि, गिरीश, सूर्योदय, पूर्णैश्वर्य, पावक।

व्यञ्जन सन्धि

६९—जब क्, च्, ट्, वा प् व्यञ्जनोंके बाद कोई स्वर अथवा किसी वर्गका तीसरा वा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व वा ह रहे, तो क् के स्थानमें ग्, च् के ज्, ट् के ड् और प् के स्थानमें ब् हो जाता है; जैसे, वाक्+आडम्बरः=वागाडम्बरः, वाक्+ईशः=वागीशः, दिक्+गजः=दिग्गजः, प्राक्+घनः=प्राग्घनः धिक्+याचना=धिग्याचना, वाक्+रोधः=वाग्रोधः, धिक्+लोभिनम्=धिग्लोभिनम्, सम्यक्+वदति=सम्यग्वदति, दिक्+हस्ती=दिग्हस्ती, अच्+अन्तः=अजन्तः, परिव्राट्+उवाच=परिव्राडुवाच।

७०—जब किसी शब्दके अन्तमें त् हो और उसके बाद कोई स्वर अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र या व हो, तो त् के बदले द् हो जाता है; जैसे, जगत्+अन्तः=जगदन्तः, जगत्+गतिः=जगद्गतिः, बृहत्+घटः=बृहद्घटः, उत्+दण्डः=उद्दण्डः, भगवत्+दर्शनं=भगवद्दर्शनं, महत्+धनुः=महद्धनुः, उत्+योगः=उद्योगः, महत्+वनं=महद्वनं।

७१—अनुस्वारके बाद किसी वर्गका कोई अक्षर होता है, तो वह उसी वर्गके पञ्चम वर्णमें बदल जाता है; जैसे, शं+करः=शङ्करः किं+चित्=किञ्चित्, पं+डितः=पण्डितः।

७२—जब किसी वर्गके किसी अक्षरके बाद किसी वर्गका पञ्चम वर्ण हो, तो पहला अक्षर अपने पञ्चम वर्णमें बदल जाता है; जैसे, वाक्+मयः=वाङ्मयः, अच्+मात्रं=अञ्मात्रं, जगत्+नाथः=जगन्नाथः।

७३—जब किसी ह्रस्व स्वरके बाद छ होता है, तब उस छ के पहले च् बढ़ जाता है, जैसे परि+छदः=परिच्छद, पद+छेदः=पदच्छेदः ।

७४—जब त् या द् के बाद चवर्ग या टवर्गका पहला वा दूसरा अक्षर होता है, तो त् या द् के स्थानमें च् वा ट् हो जाता है; जैसे, महत्+छत्रं=महच्छत्रं, एतत्+चन्द्रमण्डलं,=एतच्चन्द्रमण्डलं, एतत्+छाया=एतच्छाया, उत्+टलित=उट्टलति, तत्+टीका=तट्टीका, सत्+ठकारः=सट्ठकारः, एतत्+ठक्कुरः=एतट्ठक्कुरः ।

७५—यदि त् अथवा द् के बाद ज या झ हो, तो त् वा द् को जगह ज् और ड वा ढ हो, तो त् वा द् को जगह ड् हो जाता है; जैसे, भवत्+जीवनं=भवज्जीवनं, विपद्+जालं=विपज्जालं, महत्+झञ्झणं=महज्झञ्झणं, तद्+झनत्कारः=तज्झनत्कारः, उत्+डीनः=उड्डीनः, तद्+डिण्डिम=तड्डिण्डिमः, उत्+ढौकते=उड्ढौकते, एतद्+ढक्का=एतड्ढक्का ।

७६—यदि त् वा द् के बाद श हो, तो त् वा द् 'च्' में और श छ में बदल जाता है, जैसे, श्रीमत्+शङ्कराचार्य्यः=श्रीमच्छङ्कराचार्य्यः, तद्+शरीरम्=तच्छशरीरम् ।

७७—यदि त् वा द् के बाद 'ह' हो, तो त् का द् और 'ह' का 'ध' हो जाता है; जैसे, उत्+हतः=उद्धतः, तद्+हितः=तद्धितः ।

७८—यदि न् के बाद ज या झ हो, तो न् को ञ् से बदल देते हैं; जैसे, महान्+जयः=महाञ्जयः, उद्यन्+झङ्कारः=उद्यञ्झङ्कारः ।

७६—यदि न् के बाद श हो, तो न् का ञ् और श का छ हो जाता है; जैसे, धावन्+शशः = धावञ्छशः।

८०—यदि न् के बाद ड या ढ हो, तो न् का ण् हो जाता है; जैसे, महान्+डामरः = महाण्डामरः, राजन्+ढौकसे = राजण्ढौकसे।

८१—यदि त्, द्, या न् के बाद ल हो, तो त्, द् वा न् का ल् हो जाता है और न् के पहलेवाले अक्षरपर चन्द्रबिन्दु लगता है; जैसे, बृहद् + ललाटं, = बृहल्ललाटं, एतद् + लीलोद्यानं = एतल्लीलोद्यानं, महान्+लाभः = महाँल्लाभः।

८२—न् के बाद यदि च, छ, ट, ठ, त या थ हो, तो न् का अनुस्वार, च या छ का श्च, ट का ष्ट, ठ का ष्ठ और त का स्त और थ का स्थ हो जाता है; जैसे, नृत्यन्+चकोरः = नृत्यंश्चकोरः, धावन्+छागः = धावंश्छागः, चलन्+टिट्टिभिः = चलंष्टिट्टिभिः, महान्+ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः, हसन् + तरति = हसंस्तरति, गच्छन् + थुत्कारम् = गच्छंस्तुकारम्।

८३—यदि न् के बाद श, स या ह हो, तो न् का अनुस्वार हो जाता है; जैसे, दन्+शनम् = दंशनम्, मीमान्+सते = मीमांसते, बृन्+हितम् = बृंहितम्।

८४—यदि न् के बाद कोई स्पर्शवर्ण हो, तो न् उसी वर्गके पञ्चम वर्णमें बदल जाता है; जैसे आशन्+कते = आशङ्कते, आलिन्+गति = आलिङ्गति, वन्+चयति = वञ्चयति, उत्कन्+ठते = उत्कण्ठते, कन्+पते = कम्पते।

८५—यदि म् के बाद कोई स्पर्श वर्ण हो, तो म् उसी वर्गके या तो पञ्चम वर्णमें या अनुस्वारमें बदल जाता है; जैसे, किम्+करोषि = किंकरोषि वा किङ्करोषि, क्षिप्रम्+चलति = क्षिप्रंचलति वा क्षिप्रञ्चलति

नदीम् + तरति = नदींतरति वा नदीन्तरति, गुरुम्+नमति = गुरुं नमति वा गुरुन्नमति ।

८६—म् के बाद यदि अन्तस्थ या ऊष्म वर्ण हो, तो म् का अनुस्वार हो जाता है; जैसे, सत्वरम्+याति = सत्वरं याति, करुणम्+रोदति = करुणं रोदति, विद्याम्+लभते = विद्यां लभते, भारम्+वहति = भारंवहति, शय्यायाम्+शेते = शय्यायां शेते, कष्टम्+सहते = कष्टं सहते, मधुरम्+हसति = मधुरं हसति ।

८७—न के पहले यदि च् या ज् हो, तो न का ञ हो जाता है; जैसे, याच्+ना = याच्ञा, यज्+नः = यज्ञः ।

८८—यदि न् के पहले ह्रस्व स्वर हो और पीछे कोई स्वर हो, तो न् का न्न हो जाता है; जैसे, धावन्+अश्वः = धावन्नश्वः, हसन्+आगतः = हसन्नागतः, सृजन्+ईश्वर = सृजन्नीश्वरः, स्मरन्+उवाच = स्मरन्नुवाच ।

८९—यदि किसी वर्गके पहले अक्षरके बाद न या म हो, तो न वा म को तृतीय वा पंचम वर्णमें बदल देते हैं; जैसे, दिक्+नागः = दिग्नागः वा दिङ्नागः, अच् + नास्ति = अज्नास्ति या अञ्नास्ति, जगत्+नाथः = जगन्नाथः या जगद्नाथः ।

९०—त या थ के पहले ष् हो, तो त का ट और थ का ठ हो जाता है; जैसे, आकृष्+तः = आकृष्टः, षष्+थः = षष्ठः ।

९१—यदि किसी शब्दके अन्तमें किसी वर्गका प्रथम अक्षर हो और उसके पीछे मय या मात्र हो, तो वह अक्षर अपने पंचम वर्णमें बदल जाता है; जैसे, वाक् + मयः = वाङ्मयः, चित्+मयं = चिन्मयं, अच्+मात्रम् = अञ्मात्रम् ।

९२—यदि द् के बाद न या म हो, तो उसको इच्छानुसार न् या

म् कर देते हैं, पर यदि द् के बाद मय या मात्र हो, तो द् के बदले न् अवश्य हो जाता है; जैसे, तत्+नीरम् = तन्नीरम्, तद्+मयः=तन्मयः, तद्+मात्रा=तन्मात्रा।

विसर्ग सन्धि

९३—यदि विसर्गके बाद च, छ, ट, ठ, या त, थ हो, तो वह क्रमसे श्, ष्, स् हो जाता है; जैसे, हरिः+चन्द्रः=हरिश्चन्द्रः, धावितः+छागः=धावितश्छागः, भीतः + टलति=भीतष्टलतिः, स्थिरः+ठक्कुरः = स्थिरष्ठक्कुरः, उन्नतः+तरु = उन्नतस्तरुः, क्षिप्रः+थुत्कारः=क्षिप्रस्थुत्कारः।

९४—यदि विसर्गके पहले और पीछे 'अ' हो तो विसर्ग 'ओ' हो जाता है और परिवर्त्ती 'अ' का लोप हो जाता है तथा उसके स्थानमें ऐसा ऽ चिह्न कर दिया जाता है। यह चिह्न लुप्ताकार कहाता है; जैसे, नरः+अयम् = नरोऽयम्, वेदः+अधीतः=वेदोऽधीतः।

९५—यदि विसर्गके पहले 'अ' हो और बाद किसी वर्गका तीसरा, चौथा या पांचवाँ अक्षर या य, र, ल, व वा ह हो, तो विसर्ग 'ओ' हो जाता है; जैसे, शोभनः+गन्धः=शोभनोगन्धः, नूतनः + घटः= नूतनोघटः, सद्यः+जातः = सद्योजातः, मधुरः+झङ्कारः = मधुरोझङ्कारः, नवः+डमरू=नवोडमरू, गजः+ढौकते=गजोढौकते।

९६—यदि विसर्गके पहले 'अ' हो और उसके बाद 'अ' को छोड़कर कोई स्वर हो, तो विसर्गका लोप हो जाता है और सन्धि नहीं होती; जैसे, कुतः+आगतः=कुत आगतः, नरः+इव=नर इव, चन्द्रः+उदेति= चन्द्र उदेति, देवः+ऋषिः= देव ऋषिः।

९७—यदि विसर्गके पहले 'आ' हो और बाद कोई स्वर या किसी वर्गका तीसरा, चौथा या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व वा ह हो, तो

विसर्गका लोप हो जाता है और कोई सन्धि नहीं होती; जैसे, अश्वाःअमी= अश्वा अमी, गताः+इमे=गता इमे, ताराः+उदिताः=तारा उदिताः, नराः+ एते=नरा एते, हताः+गजाः=हता गजाः, कृताः+घटाः=कृता घटाः, पुत्राः+जाताः=पुत्रा जाताः।

६८—विसर्गके पहले 'आ' य 'अ' को छोड़कर यदि कोई स्वर हो और बाद भो कोई स्वर या किसी वर्गका तीसरा, चौथा या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व वा ह हो, तो विसर्गके स्थानमें र् हो जाता है; जैसे, कविः+अयम्=कविरयम्, गतिः+इयम्=गतिरियम्, रवि+ उदेति=रविरुदेति, श्रीः+असौ=श्रीरसौ।

६६—यदि विसर्गके पूर्व 'अ' हो और बाद कोई स्वर अथवा किसी वर्गका तीसरा, चौथा वा पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व वा ह हो, तो विसर्गके स्थानमें र् हो जाता है; जैसे, पुनः+अपि=पुनरपि।

१००—यदि विसर्गके पहले 'अ' या 'आ' को छोड कोई स्वर हो और बाद र हो, तो विसर्गका लोप हो जाता है और उसके आगेका स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे, निः+रोगः=नीरोगः, निः+रसः=नीरसः।

१०१—यदि र् के बाद र हो, तो पूर्व र् का लोप हो जाता है और उसके पहलेका आकार दीर्घ हो जाता है; जैसे, पितर्+रक्ष= पितारक्ष।

१०२—निः, आविः, वहिः, प्रादुः, चतुः इनके विसर्गके बाद यदि क, ख, प वा फ हो, तो विसर्गका ष् हो जाता है; जैसे, निः+काम= निष्काम, निः+फलं=निष्फल।

१०३—हविः सर्पिः, आयुः और धनुः जैसे शब्दोंकी सन्धि जब क, ख, प या फकारादि शब्दोंसे होती है, तो विसर्ग ष् हो जाता है। जैसे, हविः+पश्यति=हविष्पश्यति, धनुः+पाणि= धनुष्पाणिः।

१०४—भ्रातुः के बाद यदि पुत्र हो, तो विसर्गका ष् हो जाता है; जैसे, भ्रातुः + पुत्रः=भ्रातुष्पुत्रः ।

१०५—नमः, पुरः या तिरः अव्ययोंके बाद कृ अथवा इससे उत्पन्न कोई क्रियापद हो, तो विसर्गका स् हो जाता है; जैसे, नमः + कारः= नमस्कारः, पुरः + कृत्य=पुरस्कृत्य, तिरः + कारः=तिरस्कारः ।

१०६—विसर्गके पूर्व यदि 'अ' हो और बाद कर, कान्त, काम, कुम्भ या पात्र हो, तो विसर्ग स् हो जाता है; जैसे, श्रेयः + करः= श्रेयस्करः, अयः + कान्त = अयस्कान्त, मनः + कामः = मनस्कामः, अयः + कुम्भः=अयस्कुम्भः ।

१०७—तमः, मेदः, भाः, अहः, वाचः, दिवः, अयः आदिके बाद यदि काण्ड, पिण्ड, कर, पति, कील आदि हो, तो विसर्ग स् हो जाता है; जैसे, तमस्काण्डः, मेदस्पिण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः, दिवस्पतिः, अयस्कीलः ।

अभ्यास

१—व्यञ्जन सन्धि और विसर्ग सन्धिमे क्या भेद है ?

२—नीचे लिखे पदोमे सन्धि करो —

धावन् + चलति, तत् + हित , धीमन् + आगत , हरि + रक्षति, गच्छन् + चिन्तयति, महान् + लाभ , स्व + गत , प्रातः + रम्यम् , पुम् + चकोर , श्वः+भविता, गो + अक्षः, वाक् + मात्रम् , तत् + शय्या, साधु + आयाति, नीडाः + दृष्टाः, प्राणान् + त्यजामि, अतः + उच्यते, प्रभो + एहि, ताम् + शशकान् ।

३—नीचे लिखे पदोका सन्धिविग्रह करो :—

राजन्नागच्छ, यादृग्रूपम् , प्रभूतोऽय, कवीइमौ, शम्भूराजते, गुरुन्नमते, भवास्त्रायताम् ।

दूसरा भाग

—— :o: ——

शब्दविचार

१०८—प्रकृतिके अनुसार शब्द दो प्रकारके होते हैं। एक वे जिनका रूप लिंग, वचन और विभक्ति-प्रत्ययके कारण बदलता रहता है और दूसरे वे जिनका रूप बहुधा नहीं बदलता। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पहले प्रकारके हैं, इसीलिये इन्हें सविकार और क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द दूसरे प्रकारके हैं, इसलिए इन्हें निर्विकार कहते हैं। इसीसे ये अव्यय भी कहाते हैं।

१०९—व्युत्पत्तिके अनुसार शब्दोंके दो भेद हैं, एक रूढ और दूसरा यौगिक। रूढ़ शब्द वे हैं, जिनके टुकडे करनेसे कोई अर्थ न निकले; जैसे, घर, लाल, वह, सब, पर इत्यादि। यौगिक शब्द वे हैं, जो दो वा अधिक शब्दों अथवा शब्दों और प्रत्ययोंसे बने हों; जैसे, घरवाली, विद्यालय, घड़ोंची, गोशाला।

११०—व्युत्पत्तिके अनुसार बने यौगिक शब्दोंका एक भेद और भी किया जाता है। इसमें यौगिक शब्दका वह अर्थ नहीं होता जो उसके शब्दोंसे निकलता है, बल्कि एक तीसरा ही अर्थ किया जाता है; जैसे, अंगरखा। इसे योगरूढ कहते हैं। इस शब्दके दो टुकड़े 'अंग' और 'रखा' है, जिनका अर्थ है, अंगकी रक्षा करनेवाला; पर इसका अर्थ होता है वस्त्र विशेष। इसी प्रकार मोहनभोगका अर्थ यों तो है 'मोहनका

भोग', पर उसका वास्तविक अर्थ होता है हलवा। संस्कृतमें दिगम्बर, पीताम्बर जैसे शब्द इसी कोटिके हैं, क्योंकि दिगम्बरका अर्थ है दिशाएँ जिसके अम्बर (वस्त्र) हैं अर्थात् जो नंगा हो और नंगे हैं महादेव। पीताम्बरका अर्थ है 'जिसका वस्त्र पीला हो' और पीला कपड़ा है विष्णु-का। इसलिये दिगम्बरका अर्थ शिव और पीताम्बरका विष्णु हुआ।

अभ्यास

भेदो और व्युत्पत्तिके अनुसार शब्द कै प्रकारके होते है? उदाहरण देकर समझाओ।

संज्ञा

१११—किसी वस्तुके नामको संज्ञा (noun) कहते हैं। स्मरण रखना चाहिये कि वस्तुको संज्ञा नहीं कहते, इसके नामको कहते हैं। जैसे, हिमालय, राम, नदी, पहाड़, स्याही, लड़कपन, बुढापा इत्यादिमें इनके नाम ही संज्ञा हैं।

११२—संज्ञाके दो भेद हैं, एक पदार्थवाचक (concrete) और दूसरा भाववाचक (abstract)।

११३—जिस पदार्थको हम देख और छू सकते हैं, उसके नामवाले शब्द पदार्थवाचक संज्ञा (concrete noun) कहाते हैं; जैसे, घोड़ा, गेंद, लाठी, राम, सेना। जिस वस्तुको हम देख और छू नहीं सकते, केवल उसके गुणदोष वा भावका अनुभव कर सकते हैं, उसके नामको भाववाचक संज्ञा (abstract noun) कहते हैं; जैसे बुढ़ापा, कठोरता, लड़कपन, सुन्दरता, मनोहरता, न्याय इत्यादि।

११४—पदार्थवाचक संज्ञाके तीन भेद हैं :—(१) नामवाचक (proper noun), (२) जातिवाचक (common noun) और (३) गुणवाचक (qualitative noun)।

११५—नामवाचक संज्ञा वह है जो किसीका नाम हो; जैसे, विन्ध्य, गंगा, हरद्वार, रामेन्द्र, भारतवर्ष इत्यादि।

११६—जातिवाचक संज्ञा वह है जो किसी जातिका नाम हो; जैसे, मनुष्य, घोड़ा, नगर, बन, नदी, पहाड़, विद्यालय आदि। इन शब्दोंके कहनेसे किसी विशेष मनुष्य, नगर, घोडे आदिका बोध नहीं होता, बल्कि मनुष्य, घोड़े, नगरमात्रका बोध होता है।

११७—गुणवाचक संज्ञा वह है जो देखनेमें तो भाववाचकसी हो, पर भाववाचक न हो और उसमे पदार्थका गुण पाया जाय; जैसे, मिठाई, खटाई, निमकी, स्याही आदि। मिठाईमें मिठास तो रहती ही है, पर हम उसे छू, देख और खा भी सकते हैं। इसी तरह खटाई कहनेसे खट्टे पदार्थका और निमकी कहनेसे नमक पडे व्यंजनविशेषका बोध होता है। स्याही कहनेसे काले रंगका लिखनेका मसाला समझा जाता है। खटाईसे निम्बू, अमचूरसे लेकर अचार तक समझे जाते हैं। इसी प्रकार खिलौना, दिठौना, कालिख आदि शब्द भी हैं।

अभ्यास

१—सज्ञाके भिन्न-भिन्न भेदोकी व्याख्या करो।

२—भाववाचक और गुणवाचक सज्ञाओमे क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर बताओ।

लिंग

११८—लिंग (gender) चिह्नको कहते हैं। हिन्दीमें दो लिंग हैं, (१) पुंलिंग (masculine gender) और (२) स्त्रीलिंग (feminine gender)

११९—पुंलिंगसे पुरुष-जातीय और स्त्रीलिंगसे स्त्री-जातीय वस्तुका बोध होता है; जैसे, नर (पुंलिंग), मादा (स्त्रीलिंग); मर्द-औरत, बैल-गाय, घोड़ा-घोड़ी इत्यादि।

१२०—हिन्दीमें निर्जीव पदार्थोंमें भी लिंग माना जाता है, पर उनमें पुरुषत्व वा स्त्रीत्व नहीं समझा जाता। उनमें पुंलिंगसे बड़े वा भारी पदार्थका और स्त्रीलिंगसे छोटे वा हलके पदार्थका ज्ञान होता है; जैसे, गाड़ी और रस्सी स्त्रीलिंग हैं, गाड़ा और रस्सा पुंलिंग हैं।

द्रष्टव्य—यह न भूलना चाहिये कि व्याकरण शब्दोका लिंगनिर्णय करता है, वह पति-पत्नी नही बताता और न यही बताता है कि अमुक पुरुष है वा स्त्री। भाई शब्दका स्त्रीलिंग बहन है, पर कुछ नासमझ लोग "भौजाई" कह बैठते है; यह नही सोचते कि भौजाई स्त्री है, स्त्रीलिंग नही। इसी प्रकार रस्सी न स्त्री है और न रस्सा पुरुष। पर वह स्त्रीलिंग और यह पुंलिग शब्द है।

१२१—पुरुषवाचक शब्द पुंलिंग और स्त्रीवाचक स्त्रीलिंग होते हैं, चाहे आकारान्त हों वा ईकारान्त, जैसे, पिता, भाई, जमाई, दारा (स्त्री), माता, जननी।

१२२—हिन्दीके आकारान्त शब्द पुंलिंग और ईकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, यदि आकारान्त शब्द पुरुष और ईकारान्त स्त्रीवाचक हों; जैसे, 'गधा' आकारान्त है और इससे नर समझा जाता है इसलिये

पुंलिंग है और 'गधी' ईकारान्त है और इससे मादा समझी जाती है, इसलिये स्त्रीलिंग है। पर ईकारान्त होते हुए भी कर्मचारी, माली, धोबी, जैसे शब्द स्त्रीलिंग नही हैं, क्योंकि इनसे स्त्रीका बोध नहीं होता।

१२३—निर्जीव पदार्थों के वाचक आकारान्त शब्दोंसे बड़ी या भारी चीजें समझी जाती हैं और ईकारान्त शब्दोंसे हल्की या छोटी, इसलिये आकारान्त शब्द पुंलिंग और ईकारान्त स्त्रीलिंग होते है; जैसे, गाड़ा (पु०), गाड़ी (स्त्री०), सोंटा, (पु०), सोंटी (स्त्री)।

१२४—ईकारान्त शब्द भी पुंलिंग और आकारान्त भी स्त्रीलिग होते हैं, यदि वे क्रमशः पुरुष और स्त्रीके द्योतक हों; जैसे, नाई, धोबी, दर्जी, माली, तेली, तंबोली, पड़ोसी, भाई, मोदी, खत्री, नाती, पापी, बहनोई, ननदोई, हाथी इत्यादि शब्द पुंलिंग हैं और माता, माँ, बाला इत्यादि स्त्रीलिंग हैं।

१२५—नीचे लिखे शब्द पुंलिंग हैं :—

(१) चाँदी और पीतलको छोड़ सब धातुओं और नगोंके नाम; जैसे, सोना, लोहा, ताँबा, राँगा, काँसा, सीसा, मानिक, पुखराज, नीलम, हीरा इत्यादि।

(२) महीनों और वारोंके नाम; जैसे, चैत, वसाख, सोमवार, मंगलवार इत्यादि।

(३) ग्रहों और राशियोंके नाम; जैसे, सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि, मीन, मेष, वृष, मिथुन इत्यादि।

(४) हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद इन ९ नक्षत्रोंके नाम।

(५) नदों, पहाड़ों और बनोंके नाम; जैसे, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र,

दामोदर, सोन, रूपनारायण, हिमालय, विन्ध्याचल, अमरकंटक, सुन्दरवन, वृन्दावन, मधुवन इत्यादि ।

(६) कुछको छोड़कर सब नगरोंके नाम; जैसे, कलकत्ता, लखनऊ, हैदराबाद, ढाका, बनारस, अलीगढ़ इत्यादि ।

(७) इ, ई, ऋ, ए और ऐ स्वरोंको छोड़कर सब अक्षरोंके नाम; जैसे, अ, उ, ओ, क, च, ज, प इत्यादि ।

(८) गेहूँ, चावल, चना, मटर, धान, जौ, उर्द, तिल, गुड़ और गन्ना ।

(९) त्व, य, पन, पना, आपा और आव प्रत्ययान्त भाववाचक शब्द; जैसे, मनुष्यत्व, राज्य, लड़कपन, गुण्डपना और झुकाव इत्यादि ।

(१०) शरीर, मैल, कीचड़, कफ, बलगम, बाल, सिर, मुँह, कान, नयन, नेत्र, हाथ, पैर, पेट, देवता, कन्धा, हृदय, हिया, मन, जनेऊ, पक्षी, पानी, दही, घी, कोप, मोह, लोभ, मान, मद, प्रेम, हर्ष, जय और घंटा इत्यादि ।

(११) स्कूल, कालेज, अस्पताल, स्टेशन, कमरा, गिरजा, कमीशन, बिल इत्यादि विदेशी शब्द ।

१२६—नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिंग हैं—

(१) चांदी, पीतल ।

(२) सब नदियोंके नाम; जैसे—गङ्गा, यमुना, नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी इत्यादि ।

(३) सब तिथियोंके नाम; जैसे, पड़वा, दूज, तीज इत्यादि ।

(४) चित्रा, स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अनुराधा इत्यादि १८ नक्षत्रों-के नाम ।

(५) इ, ई, ऋ, ए और ऐ स्वरोंके नाम ।

(६) अरहर, मूँग, दाल, खाँड़, शक्कर चीनी इत्यादि ।

(७) बहुतसे ऊकारान्त, टकारान्त, तकारान्त और सकारान्त शब्द; जैसे, झाड़ू, बालू, लू, बनावट, थकावट, लात, बात, छत, मिठास, प्यास इत्यादि ।

(८) आँख, देह, नाक, मूछ, दाढी, भौंह, बिनौं, चुटिया, लार, कीच, काँख, वायु, आग, पुस्तक, वस्तु, सामर्थ, ऋतु, राशि, व्यक्ति, सूची, विधि, निधि, महिमा, आत्मा, बाँह, बूंद और मृत्यु ।

(९) ता, ताई, गी, आई, नी, इन और आइन प्रत्ययान्त भाववाचक शब्द; जैसे, पशुता, सुन्दरताई, जिन्दगी, खुशी, बड़ाई, मोरनी, पण्डितानी, तंबोलिन और चौबाइन इत्यादि ।

(१०) कई विदेशी शब्दोंके नाम; जैसे, रेल, लैम्प, कांग्रेस, स्कीम, डिक्शनरी, यूनिवर्सिटी, लिस्ट, बैंक, चेक इत्यादि ।

(११) सब नगरियों और पुरियोंके नाम; जैसे अयोध्या, मथुरा, माया, द्वारिका, जगन्नाथपुरी, अवन्तिका, कांची, गया और काशी ।

स्त्री-प्रत्यय

१२७—आकारान्त पुंलिंग शब्दोंके स्त्रीलिंग बनानेको ये प्रत्यय लगाये जाते हैं, जो स्त्री-प्रत्यय कहलाते हैं—ई, इन, नी, आनी और आइन ।

ई प्रत्यय		इन प्रत्यय	
पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
अहीर	अहीरी	बाघ	बाघिन
महरा	महरी	ऊँट	ऊँटिन
सुअर	सुअरी	अहीर	अहीरिन वा अहीरन
हिरन	हिरनी	हंस	हंसिन

हंस	हंसी	सोनार वा सुनार	सोनारिन वा सुनारिन
गधा	गधी	लोहार वा लुहार	लोहारिन वा लुहारिन

नी प्रत्यय

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
शेर	शेरनी
सिंह	सिंहनी
हंस	हंसिनी
पिशाच	पिशाचिनी
दैत्य	दैत्यनी

आइन प्रत्यय		आनी प्रत्यय	
पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पंडित	पंडिताइन	ठाकुर	ठाकुरानी
लाला	ललाइन	जेठ	जेठानी
ठाकुर	ठकुराइन	देवर	देवरानी
बाबू	बबुआइन	मेहतर	मेहतरानी
दुबे	दुबाइन	पंडित	पंडितानी
चौबे	चौबाइन	नौकर	नौकरानी

१२८—अहीर शब्दका स्त्रीलिंग दो प्रकारसे बनता है, एक 'ई' प्रत्यय जोड़नेसे और दूसरा 'इन' लगानेसे। इसी प्रकार हंसके भी तीन स्त्रीलिंग बनते हैं, एक 'ई' लगानेसे 'हंसी' दूसरा 'इन' लगानेसे 'हंसिन' और तीसरा 'नी' लगानेसे 'हंसनी'। पंडित और ठाकुर शब्दोंमें दो दो प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाये जाते हैं, पहला 'आइन' लगाकर पंडिताइन और ठकुराइन और दूसरा 'आनी' लगाकर पंडितानी और ठकुरानी।

१२६—साधारणतः आकारान्त पुंलिंग शब्दोंके स्त्रीलिंग बनानेमें उन्हें ईकारान्त कर देते हैं:—

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
गधा	गधी
लड़का	लड़की
घोड़ा	घोड़ी
बेटा	बेटी
चाचा	चाची
साला	साली
नाना	नानी
मामा	मामी
काका	काकी
दादा	दादी
बूढ़ा	बूढ़ी
बकरा	बकरी
लढ़ा	लढ़ी
झोला	झोली
गोला	गोली
लोढ़ा	लोढ़ी

१३०—व्यवसायीबोधक ईकारान्त शब्दोंके स्त्रीलिंग शब्दके अन्त की 'ई' को 'इन' वा 'अन' कर देनेसे बनते हैं; जैसे,

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
माली	मालिन वा मालन
धोबी	धोबिन वा धोबन

तेली	तेलिन वा तेलन
दर्जी	दर्जिन वा दर्जन
बढ़ई	बढ़इन
हलवाई	हलवाइन

१३१—कई ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त शब्दोंके स्त्रीलिंग बनानेके लिये 'ई', 'ऊ' और एकारको 'आइन' प्रत्ययसे बदल देते हैं; जैसे,

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
चौधरी	चौधराइन, चौधरन
गुरु	गुराइन वा गुरवाइन
पाँड़े	पँड़ाइन

१३२—कई ऐसे शब्द हैं, जिनके स्त्रीलिंग बनानेका कोई नियम नहीं है और जिनके दोनो लिंगोंमें भिन्न भिन्न शब्द होते हैं; जैसे,

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
बाप	माँ	मर्द	औरत, जोरू
भाई	बहन	नर	मादा
पुरुष	स्त्री	राजा	रानी
पिता	माता	बैल, साँड़	गाय
खसम	जोरू	देवता, देव	देवी

पुरुष प्रत्यय

१३३—कभी कभी स्त्रीलिंग शब्दोंमें भी प्रत्यय लगाकर पुंलिंग बनाते हैं। ये प्रत्यय हैं:—आ, अ, ओई, आव और अक्कड़।

(अ) आ प्रत्यय लगानेके पहले स्त्रीलिंगबोधक ईकारको आकारमें बदल देते हैं; जैसे, रस्सी-रस्सा, पोथी-पोथा, झोली-झोला, मकड़ी-मकड़ा, हाँड़ी-हाँड़ा, जीजी-जीजा इत्यादि।

(आ) स्त्रीलिंगबोधक 'ई' को 'अ' से बदल देते हैं; जैसे, रोटीसे रोट (पु०)

(इ) स्त्रीलिंगबोधक शब्दोंके अन्तिम 'अ' को 'ओई' और 'आव' प्रत्ययोंमें परिवर्तन कर देते हैं; जैसे, बहन-बहनोई, ननद-ननदोई, बिल्ली-बिलाव।

(ई) स्त्रीलिंग शब्दकी अन्तिम 'ई' को 'अक्कड़' प्रत्ययसे बदल देते हैं; जैसे, लकड़ी-लक्कड़, टिकड़ी-टिक्कड़।

एकलिंगी शब्द

१३४—हिन्दीमें कुछ ऐसे प्राणिवाचक शब्द हैं, जिनका एक ही लिंगमें व्यवहार होता है, यद्यपि इनमें नर मादा दोनो होते हैं। इसीलिये ये एकलिंगी कहे जाते हैं। ऐसे कुछ शब्द पुंलिंग होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग; जैसे, (पुंलिंग) पक्षी, कुत्ता, कौआ, स्यार, खरहा, शेर, तोता, बन्दर, साँप, भेड़िया, चीता, खटमल, केचुआ, कछुआ और भालू; (स्त्रीलिंग) चिड़िया, भेड़, चील, कोयल, बटेर, मैना, गिलहरी, जोंक, तितली, बिल्ली, बुलबुल, छिपकली, बकरी।

कुतिया या कुत्ती कुछ हानि कर देती है, तो भी बोलचालमें यही कहते हैं कि कुत्तेने किया है। इसी प्रकार शेर, स्यार और खरहा शब्दोंका भी प्रयोग होता है। बिल्ली स्त्री और बिल्ली शब्द स्त्रीलिंग है; पर बिलाव भी कोई चीज जूठी कर जाता है, तो यही कहते हैं कि बिल्ली जुठार गयी।

उभयलिंगी शब्द

१३५—जो अप्राणिवाचक शब्द पश्चिमके भाषाकेन्द्र दिल्ली और पूर्वके भाषाकेन्द्र लखनऊमें भिन्न-भिन्न लिंगों में प्रयुक्त होते हैं और शुद्ध माने जाते हैं, वे उभयलिंगी कहाते हैं; क्योंकि विद्वान् कवियोंके प्रयोगोंसे

सिद्ध हैं। *ये हैं भोर, गेंद, नीम, हठ, परामर्श, प्रारब्ध, सांस, बर्फ, जंग और सरकार।

भरमानेवाले शब्द

१३६—कई शब्द ऐसे हैं जो देखनेमें तो जोड़ेकेसे जान पड़ते हैं, परन्तु अर्थके कारण वे उनके विपरीत लिंगके नहीं होते; जैसे, सांड़िनी या सांड़नी, तूती, अंगूठी, छाती, घड़ी, छड़ी ताली, माली और चीनी। ये सांड़, तोता, अंगूठा, छाता, घड़ा, छड़ा, ताला, माला और चीना शब्दोंके स्त्रीलिंग नहीं हैं। दोनोके अर्थोंमें अन्तर है, इसलिये एक दूसरेके जोड़ेका लिंग नहीं होता। अर्थोंमें यह भेद हैः—

सांड़ वह बैल है जो बधिया नहीं किया गया और सांड़िनी ऊँटनीको कहते हैं। तोता हरे रंगका एक पक्षी है, जिसे सुआ और सुग्गा भी कहते हैं, पर तूती एक छोटी चिड़िया है, जो गाया करती है और तूती नाम उसकी तूत वा शहतूतप्रियताके कारण पड़ा है। अंगूठा हाथकी मोटी उंगलीको कहते हैं और अंगूठी उंगलीमें पहननेका अलंकार है। छाता सिरपर लगाया जाता है और संस्कृत छत्र शब्दसे बना है। इसका स्त्रीलिंग छत्री है। पर छाती सीनेको कहते हैं। छड़ा अकेलेको कहते हैं और यह गहनेका भी नाम है जिसे स्त्रियां पैरोंमें पहनती हैं और जो चांदीका होता है। घड़ा, घट वा गगरेको कहते हैं और घड़ी समय

* राजपुताने और पजाबमे कई अप्राणिवाचक शब्द उन लिंगोमे व्यवहृत नही होते, जिनमे दिल्ली या लखनऊ मण्डलमे होते है। परन्तु इन्हे उभयलिगी नही कहते, क्योकि दिल्ली और लखनऊके प्रयोग ही टकसाली माने जाते है। राजपुतानेवाले बुखार, स्कूल, आफिस आदि तथा पजाबवाले तार, खेल आदिका प्रयोग स्त्रीलिगमे करते है। कई शब्दोको जिन्हें हम स्त्रीलिग कहते है, उन्हें वे पुलिगमे बोलते है।

बतानेवाला यंत्र है। ताला वह यंत्र है जो कहीं बन्द किया जाता है, और जिसे जन्दा वा जन्द्रा भी कहते हैं। ताली तालेको बन्द करती और खोलती है। माला जप करने वा पहननेके हारका नाम है, पर माली बागबानको कहते हैं। यह फूल पत्तों आदिका भी व्यापार करता है। चीना चीन देशके निवासीको कहते हैं और चीनी शक्कर है। चीन सम्बन्धी अर्थमें भी चीनी शब्दका प्रयोग होता है।

अभ्यास

१—पुंलिंगसे पुरुष-जातीय और स्त्रीलिंगसे स्त्री-जातीय शब्द तो समझा जाता है, पर निर्जीव पदार्थके शब्दसे क्या समझते हैं ?

२—निर्जीव वस्तुओंके शब्दोंमें पुंलिंग और स्त्रीलिंगकी पहचानके नियम क्या हैं ?

३—हंस, पण्डित और ठाकुर शब्दोंके स्त्रीलिंग बताओ।

४—तीन शब्द ऐसे बताओ जो रूपसे तो वैसे ही शब्दोंके स्त्रीलिंग जान पड़ते हों, पर उनके स्त्रीलिंग न हों।

५—उभयलिंगी और एकलिंगी शब्दोंकी व्याख्या उदाहरण देकर करो।

६—पुरुष प्रत्यय लगनेसे क्या कोई स्त्रीलिंग शब्द पुंलिंग बन जाता है ? कारण सहित उत्तर दो।

वचन

१३७—वचन (number) संख्याको कहते हैं। वचन दो हैं; एकवचन (singular number) और बहुवचन (plural number). एकवचनसे एक वस्तु जानी जाती है और बहुवचनसे एकसे अधिक। लड़का

कहनेसे एक लड़का समझा जाता है और लड़के कहनेसे एकसे अधिक लड़के समझे जाते हैं। इसीलिये 'लड़का' तो एकवचन है, पर 'लड़के' बहुवचन है।

शब्दसाधन

१३८—विभक्ति प्रत्यय दो प्रकारके हैं। एक वे जो शब्दके अन्तिम स्वरको दूसरे स्वरसे बदल देते हैं अथवा शब्दके अन्तमें कोई स्वर बढ़ा देते हैं; जैसे, घोड़ा घोड़े, बहन बहनें, माता माताएँ। और दूसरे वे जो शब्दके सामान्य रूपमें ऊपरसे लगाये जाते हैं। ये हैं 'को', 'ने', 'से' और 'में'। ये ही विभक्ति-चिह्न कहाते हैं।

१३९—जब शब्दोंमें विभक्ति-प्रत्यय जुड़कर सिद्धपद बनता है, तब उसे विभक्ति कहते हैं। छ विभक्तियां हैं, पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं और सम्बोधन।

१४०—शब्दसाधनके पाँच प्रकार हैं:—(१) एक रूपसे अनेक अर्थोंका काम लेना, (२) रूपान्तर करनेके लिये शब्दके अन्तिम स्वरमें परिवर्तन करना, (३) शब्दमें प्रत्यय जोड़ना, (४) शब्दमें विभक्ति-प्रत्यय जोड़ना और (५) अन्तिम स्वरमें परिवर्तन कर प्रत्यय जोड़ना।

१४१—सब अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त और ओकारान्त पुंलिंग शब्दोंकी पहली विभक्तिके दोनो वचनों और सम्बोधनके एकवचनके रूप एकहीसे होते हैं; जैसे,

	पहली विभक्ति		सम्बोधन
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन
अकारान्त	घर	घर	घर
इकारान्त	कवि	कवि	कवि
ईकारान्त	भाई	भाई	भाई

उकारान्त	गुरु	गुरु	गुरु
ऊकारान्त	भालू	भालू	भालू
एकारान्त	दुबे	दुबे	दुबे
ओकारान्त	कोदो	कोदो	कोदो

१४२—प्रायः सब आकारान्त पुंलिंग शब्दोंकी पहली विभक्तिके बहुवचन, सम्बोधनके दोनो वचनों तथा अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंकी पहली विभक्ति और सम्बोधनके बहुवचनोंमें ही विकार होता है अर्थात् अन्तिम स्वर बदल दिया जाता है। पिता, भ्राता, जामाता, चाचा, मामा, काका, नाना, बाबा, फूफा, राजा जैसे शब्द अपवाद हैं; जैसे,

	पहली विभक्ति		सम्बोधन	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आकारान्त पु०	लड़का	लड़के	लड़के	लड़को
अकारान्त स्त्री०	बात	बातें	बात	बातो

१४३—सब अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंकी पहली विभक्तिके बहुवचन बनानेके लिये शब्दोंमें 'एँ' प्रत्यय जोड़ा जाता है। इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंमें बहुधा 'याँ' और औकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंमें 'एँ' प्रत्यय ही जुड़ता है; जैसे,

	एकवचन	बहुवचन
अकारान्त स्त्रीलिंग	माँ, माता	माँएँ, माताएँ
इकारान्त ”	रीति	रीतियाँ, रीतिएँ
ईकारान्त ”	लडकी	लड़कियाँ, लड़किएँ
उकारान्त ”	वस्तु	वस्तुएँ
ऊकारान्त ”	बहू	बहुएँ
औकारान्त ”	गौ	गौएँ

१४४—आकारान्त पुलिंग शब्दको छोड़कर सभी संज्ञा शब्दोंके दोनो लिंगोंकी दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं विभक्तियोंके एकवचन-में केवल उनके विभक्ति प्रत्यय ही लगते हैं, जो विभक्ति चिह्न कहाते हैं। (इनके उदाहरण अन्यत्र नकशेमें दिये गये हैं।)

१४५—दोनो लिंगोंके इ, ई, उ, ऊ, और औकारान्त शब्दोंके सम्बोधनका बहुवचन 'ओ' जोड़कर बनाया जाता है, पर 'इ' और 'ई'कारान्त शब्दोंमें 'ओ' के बदले 'यो' कर देते हैं और 'ई' को 'इ' तथा 'ऊ' कारको 'उ' करके प्रत्यय जोड़ते हैं; जैसे, कवि—कवियो, भाई—भाइयो, रीति—रीतियो, स्त्री—स्त्रियो, गुरु—गुरुओ, भालू—भालुओ, वस्तु—वस्तुओ, बहू—बहुओ, गौ—गौओ। दुबे, चौबे जैसे एकारान्त शब्द विकल्पसे दुबेओ और दुबे तथा चौबेओ और चौबे होते हैं।

१४६—आकारान्त शब्दोंमें केवल आकारान्त पुंलिंग दादा शब्दको छोड़कर सबके सम्बोधनके बहुवचनमें 'ओ' प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसे चाचा—चाचाओ, राजा—राजाओ, नाना—नानाओ, मामा—मामाओ, काका— काकाओ, माता—माताओ, माँ—माँओ, पिता—पिताओ।

१४७—दादा शब्दके रूप विकल्पसे लड़का और राजा दोनोकी भाँति साधे जाते हैं।

१४८—दोनो लिंगोंके सभी शब्दोंकी २ री, ३ री, ४ थी और ५ वीं विभक्तियोंके बहुवचन बनानेमें पहले शब्दोंमें 'ओ' प्रत्यय जोड़कर अथवा अन्त्य स्वरको 'ओ' में बदलकर विभक्ति-चिह्न लगाते हैं। 'इ' और 'ई'कारान्त शब्दोंमें ऊपर लिखे नियमके अनुसार 'ओ' के बदले 'यों' कर देते हैं, जैसे, 'बालक' शब्दकी दूसरी विभक्तिका बहुवचन बनाना हो, तो उसे पहले 'बालकों' करके 'को' जोड़कर 'बालकोंको' बनावेंगे। पर

'इ' वा 'ई' कारान्त, 'मुनि' वा 'भाई' शब्दको 'मुनियों' और भाइयों करते हैं। आकारान्त पुंलिंग शब्दोंकी उक्त चारो विभक्तियोंके एकवचन रूप बनानेके लिये आकारान्त शब्दको एकारान्त करके विभक्ति-चिह्न जोड़ते हैं। विभक्ति-चिह्न लगानेके पहले इस प्रकार शब्दके जो रूप बनते हैं, वे सामान्य रूप कहाते हैं।

१४९—कई आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके पहली विभक्तिके बहुवचन अन्तिम स्वरपर अनुस्वार भर लगाकर बनाये जाते हैं; जैसे, खटिया—खटियाँ, लुटिया—लुटियाँ, चिड़िया—चिड़ियाँ, डिबिया—डिबियाँ।

१५०—ओकारान्त शब्दोंमें बहुवचनके सामान्य रूपोंमें केवल अनुस्वार ही लगाया जाता है और औकारान्तमें कुछ नहीं; जैसे, कोदो—कोदों; सरसों—सरसों इत्यादि।

पुंलिंग शब्दोंके रूप

१५१— अकारान्त 'घर' शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	घर	घर
२री	घरको	घरोंको
३री	घरने	घरोंने
४थी	घरसे	घरोंसे
५वीं	घरमें	घरोंमें
सम्बोधन	(हे) घर	(हे) घरों

सभी अकारन्त पुंलिंग शब्दोंकी साधना घर शब्दकी भाँति होती है।

१५२—(अ) आकारान्त 'लड़का' शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	लड़का	लड़के

२री	लड़केको	लड़कोंको
३री	लड़केने	लड़कोंने
४थी	लड़केसे	लड़कोंसे
५वीं	लड़केमें	लड़कोंमें
सम्बोधन	(हे) लड़के	(हे) लड़को

चाचा, काका, मामा, नाना, फूफा, राजा आदि शब्दोंको छोड़ सब आकारान्त शब्द लड़का शब्दकी भाँति साधे जाते हैं।

(आ) आकारान्त 'राजा' शब्द

१ली	राजा	राजा
२री	राजाको	राजाओंको
३री	राजाने	राजाओंने
४थी	राजासे	राजाओंसे
५वीं	राजामें	राजाओंमें
सम्बोधन	(हे) राजा	(हे) राजाओ

चाचा आदि शब्दोंकी साधना ऐसे ही होती है। दादा शब्द दोनो प्रकारके शब्दोंकी तरह साधा जाता है।

१५३—बेटा और बच्चा शब्दोंकी साधना लड़का शब्दकी ही भाँति होती है, पर सम्बोधनके एकवचनमें उनके दो दो रूप होते हैं; जैसे, बेटा, बेटे, बच्चा, बच्चे।

१५४— इकारान्त 'कवि' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	कवि	कवि
२री	कविको	कवियोंको
३री	कविने	कवियोंने

४थी	कविसे	कवियोंसे
५वीं	कविमें	कवियोंमें
सं०	(हे) कवि	(हे) कवियो

सब इकारान्त शब्दोंकी साधना कवि शब्दकी तरह होती है।

१५५— ईकारान्त 'भाई' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	भाई	भाई
२री	भाईको	भाइयोंको
३री	भाईने	भाइयोंने
४थी	भाईसे	भाइयोंसे
५वीं	भाईमें	भाइयोंमें
सं०	(हे) भाई	(हे) भाइयो

सब ईकारान्त शब्द भाई शब्दकी तरह साधे जाते हैं।

१५६— उकारान्त 'गुरु' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	गुरु	गुरु
२री	गुरुको	गुरुओंको
३री	गुरुने	गुरुओंने
४थी	गुरुसे	गुरुओंसे
५वीं	गुरुमें	गुरुओंमें
सं०	(हे) गुरु	(हे) गुरुओ

सब उकारान्त शब्दोंकी साधना गुरु शब्दकी नाईं होती है।

१५७— ऊकारान्त 'भालू' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	भालू	भालू
२री	भालूको	भालुओंको
३री	भालूने	भालुओंने
४थी	भालूसे	भालुओंसे
५वीं	भालूमें	भालुओंमें
सं०	(हे) भालू	(हे) भालुओं

सब ऊकारान्त शब्द भालू शब्दकी तरह साधे जाते हैं।

१५८— एकारान्त 'दुबे' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	दुबे	दुबे
२री	दुबेको	दुबेओंको
३री	दुबेने	दुबेओंने
४थी	दुबेसे	दुबेओंसे
५वीं	दुबेमें	दुबेओंमें
सं०	(हे) दुबे	(हे) दुबेओ

सब एकारान्त शब्द दुबे शब्दकी भांति साधे जाते हैं।

१५९— ओकारान्त 'कोदो' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१ली	कोदो	कोदो
२री	कोदोको	कोदोंको
३री	कोदोने	कोदोंने
४थी	कोदोसे	कोदोंसे

	एक०	बहु०
५वीं	कोदोमें	कोदोंमें
सं०	(हे) कोदो	(हे) कोदो

सब ओकारान्त शब्द कोदो शब्दकी भाँति साधे जाते हैं।

१६०— औकारात 'जौ' शब्द

१ली	जौ	जौ
२री	जौको	जौओंको
३री	जौने	जौओंने
४थो	जौसे	जौओंसे
५वीं	जौमें	जौओंमें
सं०	(हे) जौ	(हे) जौओ

स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप

१६१— अकारान्त 'बात' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	बात	बातें
२री	बातोंको	बातोंको
३री	बातने	बातोंने
४थी	बातसे	बातोंसे
५वीं	बातमें	बातोंमें
सं०	(हे) बात	(हे) बातों

सभी अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द बात शब्दकी तरह साधे जाते हैं।

१६१—(अ) आकारान्त 'खटिया' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	खटिया	खटियां

२री	खटियाको	खटियोंको
३री	खटियाने	खटियोंने
४थी	खटियासे	खटियोंसे
५वीं	खटियामें	खटियोंमें
सं०	(हे) खटिया	(हे) खटियो

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द चिड़िया, डिबिया, लुटिया इत्यादि इसी प्रकार साधे जाते हैं।

(आ) आकारान्त 'मां' शब्द

	एक०	बहु०
१ली	मां	मांएं
२री	मांको	मांओंको
३री	मांने	मांओंने
४थी	मांसे	मांओंसे
५वीं	मांमें	मांओंमें
सं०	(हे) मां	(हे) मांओ

खटिया, चिड़िया आदि शब्दोंको छोड़ सब आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द मां शब्दकी भांति साधे जाते हैं।

१६३—सब इ, ई, उ और ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द वैसे ही पुंलिंग शब्दोंकी भांति साधे जाते हैं तथा ओकारान्त स्त्रीलिंग सरसों शब्दकी साधना पुंलिंग कोदो शब्दकी भांति होती है।

अभ्यास

१—वचन किसे कहते है ?

२—विभक्ति और विभक्ति-चिह्नमे क्या अन्तर है ?

३—आकारान्त पुलिग और स्त्रीलिग ऐसे शब्द बताओ जिनकी साधनामे अन्तर होता है ।

४—शब्दका 'सामान्य रूप' किसे कहते है ?

५—क्या सामान्य रूप एकवचनमे भी समान ही होते है ?

६—शब्द-साधनके भेद उदाहरण सहित बताओ ।

सर्वनाम

१६४—सर्वनाम (pronoun) वह शब्द है जो नाम वा संज्ञाके बदले आता है । संज्ञा बारबार न कहकर उसकी जगह सर्वनामका प्रयोग किया जाता है; जैसे, 'राम आया और रामने कहा कि रामको भूख लगी है', न कहकर 'राम आया और उसने कहा कि मुझे भूख लगी है' ही कहते हैं । पिछले वाक्यमें 'उसने' और 'मुझे' सर्वनाम पहले वाक्यके 'रामने' और 'रामको' संज्ञा पदोंके बदले आये हैं ।

१६५—सर्वनामके ७ भेद हैं—(१) पुरुषवाचक (personal pronoun), (२) आदरसूचक (honorific), (३) निश्चयवाचक (demonstrative), (४) अनिश्चयवाचक (indefinite), (५) प्रश्नवाचक (interrogative), (६) निजवाचक (pertaining to self) और (७) सम्बन्धवाचक (relative) .

१६६—सर्वनाममें लिंगभेद और सम्बोधन नहीं होते ।

१६७—पुरुषवाचक सर्वनाम वह है जिसमें मनुष्योंकी चर्चा हो । इसके तीन भेद हैं—(१) उत्तम पुरुष (first person), (२) मध्यम पुरुष (second person) और (३) अन्य पुरुष (third person) .

१६८—उत्तम पुरुष वह है, जो बोलता वा लिखता हो; मध्यम

पुरुष वह है जिससे बोलते हैं वा जिसको सम्बोधन कर लिखते हैं और अन्य पुरुष वह है जिसके विषयमें बोलते वा लिखते हैं। मैं उत्तम पुरुष, तू और आप मध्यम पुरुष, और सब, यह और वह अन्य पुरुष हैं।

१६९—अन्य पुरुष सर्वनाम "सब" अकारान्त पुंलिंग संज्ञा शब्दकी भाँति साधा जाता है। इसके रूप एकवचनमें नहीं प्रयुक्त होते, पर बहु-वचनके रूप एकवचनसे ही होते हैं अर्थात् 'सबोंको' 'सबोंने' के बदले 'सबको' 'सबने' ही होते हैं। 'सबोंको' 'सबोंने' अशुद्ध नहीं हैं, पर शिष्ट प्रयोग नहीं माने जाते।

१७०— पुरुषवाचक सर्वनामके रूप

(अ) उत्तम पुरुष मैं (I) शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	मैं	हम
२री	मुझे, मुझको	हमें, हमको
३री	मैंने	हमने
४थी	मुझसे	हमसे
५वीं	मुझमें	हममें

(आ) मध्यम पुरुष 'तू' (thou) शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	तू	तुम
२री	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
३री	तूने	तुमने
४थी	तुझसे	तुमसे
५वीं	तुझमें	तुममें

(इ) आदरसूचक मध्यम पुरुष 'आप' (your honour)

दोनो वचनोंमें

१ली	आप	जब कभी बहुवचनमें 'आप
२री	आपको	लोग' का व्यवहार किया जाता
३री	आपने	है, तब 'लोग' शब्दके रूप
४थी	आपसे	'घर' शब्दकी भांति साधे जाते हैं;
५वीं	आपमें	'आप' ज्योंका त्यों रहता है।

(ई) अन्य पुरुष 'यह' (he,she,it)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	यह	ये
२री	इसे, इसको	इन्हें, इनको
३री	इसने	इन्होंने
४थी	इससे	इनसे
५वीं	इसमें	इनमें

१७१—'वह' सर्वनामके रूप भी अन्य पुरुषमें 'यह' की भांति साधे जाते हैं। 'यह' और 'वह' निश्चयवाचक सर्वनाम भी हैं और उसी प्रकार साधे जाते हैं, जैसे अन्य पुरुष 'यह'। 'यह' निकटवर्ती (proximate) और 'वह' दूरवर्ती (remote) निश्चवाचक सर्वनाम है।

१७२—सम्बन्धवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं, जिससे सम्बन्ध प्रकट हो; जैसे, जो और सो।

(अ) सम्बन्धवाचक 'जो' शब्द

(which or that which)

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१ली	जो	जो

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
२री	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
३री	जिसने	जिन्होंने
४थी	जिससे	जिनसे
५वीं	जिसमें	जिनमें

(ओ) 'सो' (that) शब्द

१ली	सो	सो
२री	तिसे, तिसको	तिन्हें, तिनको
३री	तिसने	तिन्होंने
४थी	तिससे	तिनसे
५वीं	तिसमे	तिनमें

१७३—प्रश्नवाचक सर्वनाम दो हैं, 'कौन' और 'क्या'। ये प्रश्न करने के काममें आते हैं।

(अ) 'कौन' (who) शब्द

१ली	कौन	कौन
२री	किसे, किसको	किन्हें, किनको
३री	किसने	किन्होंने
४थी	किससे	किनसे
५वीं	किसमें	किनमें

(आ) 'क्या' शब्द एकवचन है और निर्विकार रहता है; उसमें केवल विभक्ति-चिह्न जोड़ दिये जाते हैं।

१७४— अनिश्चयवाचक 'कोई' (any) शब्द

१ला	कोई	कोई कोई वा कोई
२री	किसीको	किन्हीको

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
३री	किसीने	किन्हीने
४थी	किसीसे	किन्हीसे
५वीं	किसीमें	किन्हीमें

१७५— 'कई' (several)

१ली	कई	कई
२री	कईको	कइयोंको
३री	कईने	कइयोंने
४थी	कईसे	कइयोंसे
५वीं	कईमें	कइयोंमें

१७६— निजवाचक 'अपना' (one's own) शब्द

१ली	अपना	अपने
२री	अपनेको	अपनोंको
३री	अपनेने	अपनोंने
४थी	अपनेसे	अपनोंसे
५वीं	अपनेमें	अपनोंमें

१७७—'कुछ' शब्द भी 'क्या' की तरह अविकृत रहता है और उसमें आवश्यकताके अनुसार विभक्ति-चिह्न लगा लिये जाते हैं।

अभ्यास

१—सर्वनाम किसे कहते हैं और वह कै प्रकारका होता है ? २—'वह' कौन सर्वनाम है, कारण सहित बताओ। ३—'आप' और 'अपना' सर्वनामोके रूपोमे क्या अन्तर है ? उनके अर्थोमे भी कोई अन्तर है या नही ? ४—'कौन' और 'क्या' मे जो भेद हो, बताओ।

कारक

१७८—संज्ञा और सर्वनाम पदोंका क्रियाके साथ जो अन्वय वा सम्बन्ध होता है, उसे कारक (case) कहते हैं। इस सम्बन्धके विना जो पद रहते हैं, वे विभक्ति कहाते हैं।

१७९—हिन्दीमें छ कारक होते हैं:— (१) कर्त्ता (nominative), (२) कर्म (accusative), (३) करण (instrumental), (४) सम्प्रदान (dative), (५) अपादान (ablative) और (६) अधिकरण (locative).

१८०—सम्बन्ध (genitive) और सम्बोधन (vocative) कारक नहीं है, क्योंकि क्रियाके साथ इनका सम्बन्ध नहीं होता।

१८१—सम्बोधन एक प्रकारका कर्ता कारक ही है, क्योंकि कर्ताको किसी काममें प्रवृत्त वा उससे निवृत्त करनेके लिये प्रयुक्त होता है।

१८२—हिन्दीमें सम्बन्धवाचक विभक्ति-चिह्न नहीं है और इसका काम 'का,' 'ना,' 'रा' और 'या' प्रत्यय . जाता है। इन प्रत्ययोंके लगनेसे प्रत्यययुक्त पदोंका रूप आकारान्त पुंलिंग 'लड़का' शब्दकी भाँति हो जाता है। इनके सामान्यरूप 'के' 'ने' 'रे' और 'ये' तथा स्त्रीलिंग 'की,' 'नी,' 'री' और 'यी'कारान्त होते हैं। प्रत्यययुक्त पद सम्बन्धद्योतक माना जाता है, परन्तु वह एक प्रकारका विशेषण है, क्योंकि उसका व्यवहार विशेषणकी भाँति ही होता है।

१८३—जिस शब्दसे कामका करनेवाला या होनेवाला जाना जाता है, उसमें कर्ता कारक होता है। कर्ता कारकमें पहली, दूसरी, तीसरी या चौथी विभक्ति होती है; जैसे राम आता है; मुझे जाना है; सोहनने भात खाया और सुजानसे चला नहीं जाता। यहां राम, मुझे, सोहनने और सुजानसे कर्त्ता कारक हैं।

१८४—जिस शब्दमें कार्यका फल तो रहता है, पर व्यापार नहीं रहता, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारकमें पहली या दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, व्यास कथा बांचता है; मास्टर लड़केको मारता है। यहां 'कथा' और 'लड़केको' कर्म कारक हैं।

१८५—जिस शब्दसे उपकरण अथवा साधन जाना जाता है, उसमें करण कारक होता है। करण कारकमें चौथी विभक्ति होती है; जैसे मास्टर 'बेंतसे' लड़कोंको मारता है। यहाँ 'बेंतसे' करण कारक है।

१८६—जिस शब्दसे दान पानेवाला जाना जाता है, उसमें सम्प्रदान कारक होता है। सम्प्रदान कारकमें दूसरी विभक्ति होती है; जैसे गरीबोंको अन्न दो। यहां 'गरीबोंको' सम्प्रदान कारक है।

१८७—जिससे किसी वस्तुका निकलना या अलग होना जाना जाता है, उसके वाचक शब्दमें अपादान कारक होता है। अपादान कारकमें चौथी विभक्ति होती है; जैसे, समुद्रसे मोती निकलता है; पेड़से पत्ते गिरते हैं। यहां 'समुद्रसे' और 'पेडसे' अपादान कारक हैं।

१८८—जिस शब्दसे आधारका बोध होता है, उसमें अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारकमे पांचवीं विभक्ति होती है; जैसे, समुद्रमें अथाह जल भरा है। यहाँ 'समुद्रमें' अधिकरण कारक है; तिलोंमें तेल होता है; ऊखमें चीनी होती है; फूलमें सुगन्धि होती है।

अभ्यास

(१) कारक किसे कहते है ?

(२) सम्बन्ध और सम्बोधन क्यों कारक नही है ?

(३) कारकोके भेद उनकी परिभाषा सहित बताओ ?

(४) विभक्ति और कारकमे क्या अन्तर है ?

(५) कर्त्ता और कर्म कारकोमे कौन कौन विभक्तियाँ होती है ? उदाहरण भी दो।

विशेषण

१८९—जिस शब्दके कारण संज्ञामें कोई विशेषता (न्यूनता वा अधिकता) आ जाती है उसे विशेषण (adjective) कहते हैं। संज्ञा की सीमा वा मर्यादा बांधना भी विशेषता ही है; जैसे, गाय शब्दसे चाहे जैसी गाय समझी जा सकती है, पर यदि हम उसके साथ एक और शब्द 'लाल' लगा दें, उससे लाल रंगकी ही गाय समझी जायगी, दूसरी नहीं।

१९०—जिस संज्ञा शब्दमें विशेषण कोई गुण वा दोष अथवा विशेषता उत्पन्न करता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

१९१—विशेषणके मुख्य तीन भेद हैं:—(१) गुणवाचक विशेषण (adjective of quality), (२) संख्यावाचक (numeral adjective) और (३) सार्वनामिक विशेषण (pronominal adjective).

१९२—गुणवाचक विशेषण वह है जिससे विशेष्यका गुण वा दोष जाना जाय; जैसे, सीधा लड़का बदमाश घोड़ा। यहाँ 'सीधा' विशेषण 'लड़का' विशेष्यका गुण प्रकट करता है। इसी प्रकार 'बदमाश' विशेषण 'घोड़ा' विशेष्यका दोष बताता है।

१९३—संख्यावाचक विशेषण वह है, जो विशेष्यकी संख्या ही नहीं बताता, उसका स्थान (दर्जा), रूप, गुण वा भाग आदि भी बताता है; जैसे, (संख्या) बीस आदमी, (स्थान या दर्जा) चौथा लड़का, (रूप) दोहरा कपड़ा, (गुण) चौगुना भोजन, एक जोड़ा जूता, (भाग) चौथाई दाम। संख्यावाचक विशेषण या तो संख्या होते हैं या संख्याओंसे बनते हैं।

१९४—सार्वनामिक विशेषण वह है, जो सर्वनामके रूपमें हो वा सर्वनामसे बना हो; जैसे, वह लड़का; कोई आदमी; कई चिड़ियां; अपना घर; सब बातें। यह, कोई, अपना और सब सर्वनाम नहीं, विशेषण हैं।

१९५—सर्वनाम शब्दोंसे जो विशेषण बनते हैं, वे परिमाणवाचक और सादृश्यवाचक होते हैं; जैसे, इतना जल, ऐसा घर। यहाँ 'इतना' परिमाणवाचक सार्वनामिक विशेषण है और 'ऐसा' सादृश्यवाचक है।

१९६—यह, वह, जो, सो और कौन इन पाँच सर्वनामोंसे इतना, उतना, जितना, तितना और कितना परिमाणवाचक और ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा और कैसा सादृश्यवाचक विशेषण बने हैं।

१९७—हिन्दीमें आकारान्त विशेषण पुंलिंग और ईकारान्त विशेषण स्त्रीलिंग होते हैं। पुंलिंगसे स्त्रीलिंग बनानेका नियम संज्ञा शब्दोंके समान ही है; जैसे, काला (पुं०) काली (स्त्री०), बड़ा (पुं०) बड़ी (स्त्री०)।

१९८—आकारान्त विशेषण शब्दोंके रूप पहली ही विभक्तिमें साधे जाते हैं और अन्य विभक्तियोंमें एकवचनके सामान्य रूपका प्रयोग किया जाता है। ईकारान्त विशेषणोंके रूप नहीं बदलते; जैसे, काला घोड़ा, काले घोड़े, काले घोड़ेसे, काले घोड़ोंसे, काली घोड़ी, काली घोड़ियां, काली घोड़ीसे, काली घोड़ियोंसे।

१९९—जबदो वस्तुओंमें तुलना की जाती है, तब जिससे कोई वस्तु अच्छी वा बुरी बतायी जाती है, उसमें चौथी विभक्ति होती है; जैसे, पत्थरसे ईंट गुलगुली।

२००—जब कई वस्तुओंमें तुलना करके कोई सर्वश्रेष्ठ वा निकृष्ट बतायी जाती है, तब या तो वह सबसे अच्छी वा सबमें अच्छी वा बुरी कही जाती है; जैसे राम पुरुषोंमें उत्तम थे।

अभ्यास

(१) विशेषण किसे कहते है और वह कै प्रकारका होता है ?

(२) सार्वनामिक विशेषण क्यो नाम पड़ा ?

(३) सार्वनामिक विशेषण कौन कौन है ?

(४) दो और अधिक वस्तुओमे तुलना करनी हो, तो कैसे करेगे ?

क्रिया

२०१—किसी कामका करना या होना अथवा किसी वस्तुके विषयमें कुछ कहना सुनना क्रिया कहाता है; जैसे, आता हूँ, खायगा, भागा।

२०२—क्रिया तीन प्रकारकी होती है:—(१) सकर्मक (transitive) (२) अकर्मक (intransitive) और (३) कर्मकर्तृक।

२०३—सकर्मक क्रिया वह है जिसका कर्म हो अथवा जिसका फल किसी वस्तुपर पड़े; जैसे, खाना, करना, लेना, देना इत्यादि।

२०४—किसी किसी क्रियाके दो कर्म होते हैं, जिनमें एक मनुष्य वाचक और दूसरा वस्तुवाचक होता है। ऐसी क्रिया द्विकर्मक कहाती है; जैसे, मास्टर साहब लड़कोंको व्याकरण पढ़ाते हैं।

२०५—अकर्मक क्रिया वह है, जिसका कर्म न हो अथवा जिसका फल किसीपर न पड़े, क्रियामें ही कार्यकी समाप्ति हो जाय; जैसे, आना, जाना, सोना, उठना आदि अकर्मक क्रियाएं हैं।

२०६—कर्मकर्तृक क्रिया वह है जिसका कर्म ही कर्त्ता बन गया हो; जैसे, बनना, पकना, चुरना, सीझना, घुलना, चमकना, लुटना, पिटना इत्यादि। यह एक प्रकारकी अकर्मक क्रिया ही है और इसी रूपमें इसका व्यवहार भी होता है।

२०७—प्रयोगके अनुसार कोई क्रिया कभी सकर्मक और कभी कर्मकर्तृक वा अकर्मक होती है; जैसे, 'खुजलाना'। जब हम कहते हैं कि 'मेरा हाथ खुजलाता है', तब 'खुजलाना' क्रिया जिसका रूप 'खुजलाता' है, अकर्मक वा कर्मकर्तृक होती है। परन्तु यदि हम कहें, 'मैंने हाथ खुजलाया', तब 'खुजलाना' क्रिया जिसका रूप 'खुजलाया' है, सकर्मक होगी।

२०८—अर्थोंके विचारसे क्रिया दो तरहकी होती है। एक समा-

पिका क्रिया (finite verb) और दूसरी असमापिका क्रिया (verb of incomplete predication)

२०९—समापिका क्रिया वह है, जो पूरा भाव व्यक्त करे और असमापिका वह है, जिसकी सीमा वा समाप्ति न हो।

२१०—असमापिका क्रिया दो प्रकारकी है। एक वह जिसमें क्रियाका केवल भाव वा साधारण रूप रहता है; आना, खाना, चलना आदि और दूसरी वह जिससे कार्यका होना तो जाना जाता है, पर अन्त क्या हुआ इसका पता नहीं लगता; जैसे, आकर, खाके, चल करके आदि। धातुमें 'ना' प्रत्यय जोड़नेसे पहले प्रकारकी वा साधारण क्रिया और 'कर' और 'करके' प्रत्यय जोडनेसे दूसरे प्रकारकी क्रिया बनती है। पहलोको अपूर्ण क्रिया (infinitive verb) और दूसरीको पूर्वकालिक क्रिया (indeclinable past participle) कहते हैं।

२११—समापिका क्रियाके तीन भेद हैः—(१) साधारण (indicative), (२) आज्ञाद्योतक (imperative) और (३) सम्भावनासूचक वा आनुमानिक (subjunctive).

२१२—साधारण समापिका क्रिया वह है, जिससे किसी विषयकी चर्चा मात्र जानी जाती है; जैसे, वह जाता है; मैं जाऊँगा; वह आवेगा।

२१३—आज्ञाद्योतक समापिका क्रिया वह है, जिसमें किसोको किसी कामके करनेकी आज्ञा दी जाय अथवा किसी कार्यके करने न करनेका उपदेश दिया जाय; जैसे, तू खा; वह आवे, मैं कहूँ।

२१४—सम्भावनासूचक समापिका क्रिया वह है, जिससे किसी कार्यकी सम्भावनाकी सूचना मिलती है अथवा किसी कार्यके होने न होनेका अनुमान किया जाता है; जैसे, मैं आता होऊँ; वह खाता होगा; तुम आये होगे।

२१५—समापिका क्रियामें वाच्य (voice), काल (tense), पुरुष (person), वचन (number) और लिंग (gender) होते हैं।

२१६—कहनेके ढङ्गका नाम वाच्य (voice), है। वाच्य चार माने गये हैं :—(१) कर्तृवाच्य (active voice), (२) कर्मवाच्य (passive voice), (३) भाववाच्य (impersonal or neutral voice) और (४) कर्मकर्तृवाच्य (passive–active voice),

२१७—वाच्यका दूसरा नाम प्रयोग भी है, इसलिये ये क्रमशः कर्तृ-प्रयोग, कर्मप्रयोग, भावप्रयोग तथा कर्मकर्तृप्रयोग भी कहे जा सकते हैं।

२१८—जिस वाच्यमें कर्त्ता पहली विभक्तिमें रहता है और क्रियाके लिंगवचन कर्त्ताके अनुकूल रहते हैं, वह कर्तृवाच्य (active voice) कहाता है; जैसे, राम खाता है; सीता गाय दुहती है। पहले वाक्यमें राम पहली विभक्तिमें है और पुंलिंग एकवचन है, इसलिये उसकी क्रिया 'खाता है' भी पुंलिंग एकवचन हुई और दूसरे वाक्यमें कर्त्ता 'सीता' पहली विभक्तिमें स्त्रीलिंग एकवचन है, इसलिये उसकी क्रिया भी स्त्री-लिंग एकवचन हुई।

२१९—जिस वाक्यमें कर्म पहली विभक्तिमें और कर्त्ता दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिमें रहता है और क्रिया लिंगवचनमें कर्मके अनुकूल रहती है, वह कर्मवाच्य (passsive voice) कहाता है; जैसे, देवदत्तको बहुत काम करने पड़े; रामने रोटी खायी; सीताने भात खाया। पहले वाक्यमें कर्त्ता 'देवदत्तको' एकवचन पुंलिंग दूसरी विभक्तिमें तथा 'काम' कर्म बहुवचन पुंलिंग पहली विभक्तिमें है, इसीलिये क्रिया 'करने पड़े' भी कर्मके अनुसार पुंलिंग बहुवचनमें हुई। इसी प्रकार दूसरे वाक्यमें कर्त्ता 'रामने' तीसरी विभक्तिमें एकवचन पुंलिंग है और कर्म 'रोटी' पहली विभक्तिमें है और स्त्रीलिंग एकवचन है, इसलिये क्रिया 'खायी' भी स्त्री-

लिंग एकवचन हैं। तीसरे वाक्यमें कर्त्ता 'सीताने' तीसरी विभक्तिमें एक-वचन स्त्रीलिंग है और कर्म 'भात' पहली विभक्तिमें पुंलिंग एकवचन है, इसलिये क्रिया 'खाया' भी पुंलिंग एकवचन है। ध्यान देनेकी बात है कि दूसरेमें कर्त्ता पुंलिंग और कर्म स्त्रीलिंग है, इससे क्रिया स्त्रीलिंग हुई और तीसरेमें कर्त्ता स्त्रीलिंग और कर्म पुंलिंग है, इससे क्रिया भी पुंलिंग हुई।

२२०—जिस वाच्यमें कर्त्तामें तीसरी विभक्ति और कर्ममें दूसरी विभक्ति होती है और क्रिया लिंगवचनमें न तो कर्त्ताके अनुकूल रहती है और न कर्मके ही, बल्कि सदा पुंलिंग एकवचनमें रहती है, वह भाव-वाच्य (impersonal voice) कहाता है; जैसे, सीताने रोटियोंको खाया; विद्याने किताबोंको देखा; सरलाने टोपियोंको सिया। इन तीनो वाक्योंमें कर्त्ता तो तीसरी विभक्तिमें और स्त्रीलिंग एकवचन है तथा कर्म दूसरी विभक्तिमें स्त्रीलिंग बहुवचन है, पर तीनो क्रियाएँ पुंलिग एक-वचन हैं।*

२२१—जिस वाच्यमें कर्म कर्त्ता बनकर पहली विभक्तिमें रहता है तथा वास्तविक कर्त्ता अनुक्त रहता है और क्रिया लिगवचनमें सदा कर्त्ता बने कर्मके अनुकूल रहती है, उसे कर्मकर्तृवाच्य (passive-active voice) कहते हैं; जैसे, मैं बुलाया गया अर्थात् मुझे बुलानेवाला तो कोई है, पर बताया नहीं गया कि वह कौन है। इसी प्रकार 'मकान देखा गया' वाक्यमें मकान कर्म है और उसे किसीने देखा है, पर देखनेवाला

*हिन्दीके कर्मवाच्य और अंगरेजीके passive voice में अन्तर है। Passive voice एक प्रकारका कर्मकर्तृवाच्य है जिसमे कर्म कर्त्ता हो जाता है।

बताया नहीं गया। पानी बरस रहा है; खेत कट रहे हैं; पेड़ उग रहे हैं इत्यादि कर्मकर्तृवाच्यके उदाहरण हैं।

अभ्यास

१—क्रिया किसे कहते हैं और वह कै प्रकारकी होती है ?

२—समापिका और असमापिका क्रियाओसे तुम क्या समझते हो ?

३—वाच्योके कितने भेद है ? व्याख्या और उदाहरण सहित समझाओ।

४—कर्तृवाच्य और कर्मकर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य और भाववाच्यमे क्या अन्तर है ?

काल

२२२—काल (tense) समयको कहते हैं। मुख्य काल तीन हैं:—(१) वर्तमान (present) (२) भूत (past) और (३) भविष्य वा भविष्यत् (future)।

२२३—वर्तमान काल वह है, जो बीत रहा है; जैसे, मैं जाता हूँ; तुम जाओ; उसे रहने दो।

२२४—भूतकाल वह है, जो बीत गया; जैसे, गाड़ी आ गयी; राजा साहब नहीं आये; मैं जाता था।

२२५—भविष्यकाल वह है, जो आवेगा; जैसे, वह कल जायगा; तुम कब चलोगे ? मैं परसों घर जाऊँगा।

२२६—कालोंके भी भेद होते हैं। वर्तमान कालके ६ भेद हैं:— (१) सामान्य वर्तमान (present indefinite), (२) तात्कालिक वर्तमान (present continuous), (३) पूर्ण वर्तमान (present

perfect), (४) संदिग्ध वर्तमान (presumptive imperfect) (५) सम्भाव्य अपूर्ण वर्तमान (contingent imperfect) (६) सम्भाय पूर्ण वर्तमान (contingent perfect)

२२७—*सामान्य वर्तमान* वह है, जिससे जान पड़े कि कार्यका आरम्भ है, जैसे, *मैं जाता हूँ; वह आता है; तुम सोते हो।*

२२८ –तात्कालिक वर्तमान वह है, जिससे जान पड़े कि कार्य हो रहा है, बन्द नहीं है; जैसे, मैं जा रहा हूँ; तू खा रहा है; वे आ रहे हैं।

२२९—पूर्ण वर्तमान वह है, जिसमें भूत कालमें कार्य आरम्भ होकर, वर्तमानमें समाप्त होना पाया जाय; जैसे, मैं आया हूँ; तू गया है; वह लौटा है। इसे आसन्न भूत भी कहते हैं।

२३०—*संदिग्ध वर्तमान* वह है, जिसमें कार्यके वर्तमान कालमें समाप्त होनेका संदेह बना रहता है; जैसे, वह *आता होगा*; मैं जाता होऊँगा।

२३१—सम्भाव्य अपूर्ण वर्तमान वह है, जिसमें वर्तमान कालमें कार्यके पूरे न होनेकी सम्भावना रहती है; जैसे, मैं जाता होऊँ; तू खाता हो।

२३२—*सम्भाव्य पूर्ण वर्तमान* वह है, जिसमें वर्तमान कालमें कार्यके पूरे होनेकी सम्भावना रहती है; जैसे, मैं *गया* होऊँ; तू आया हो; वह खड़ा हो।

२३३—भूतकालके आठ भेद हैं:—(१) सामान्य भूत (past indefinite), (२) अपूर्ण भूत (past imperfect), (३) तात्कालिक भूत (past continuous), (४) हेतुहेतुमद्भूत (past indefinite imperfect), (५) पूर्ण भूत (past perfect), (६) सन्दिग्ध भूत (presumptive perfect), (७) सम्भाव्य

अपूर्ण भूत (past contingent imperfect) और (८) सम्भाव्य पूर्ण भूत (past contingent perfect).

२३४—सामान्य भूत बताता है कि कार्य हो चुका; जैसे, मैं गया; तू आया; वह सोया।

२३५—अपूर्ण भूत बताता है कि कार्यका आरम्भ तो भूतकालमें हो चुका था, पर वह समाप्त नहीं हुआ; जैसे, मैं जाता था; तू खाता था; वह जाता था।

२३६—तात्कालिक भूतसे जान पड़ता है कि भूतकालमें कार्य जारी था; जैसे, मैं आ रहा था; तू खा रहा था।

२३७—हेतुहेतुमद्भूत वह है जिसमें भूतकालकी कोई घटना किसी दूसरी घटनापर अवलम्बित रहती है; जैसे, मैं आता; तू जाता; वह खाता। अभिप्राय यह है कि जिन घटनाओंपर आना, जाना और खाना कार्य अवलम्बित थे, वे नहीं हुईं।

२३८—पूर्ण भूत वह है जिसमें कार्यका आरम्भ और अन्त भूतकालमें ही हो जाता है; जसे, मैं आया था; तू गया था; वह सोया था।

२३९—सदिग्ध भूतमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकालमें कार्य हुआ या नहीं; जैसे, मैं आया हूँगा; तू गया होगा; वह सोया होगा।

२४०—सम्भाव्य अपूर्ण भूतमें भूतकालमें कार्यके अपूर्ण रहनेकी सम्भावना रहती है; जैसे, मैं आता होता; तू जाता होता; वह सोता होता।

२४१—सम्भाव्य पूर्ण भूतमें सम्भावना तो रहती है कि भूतकालमें कार्य पूर्ण हुआ होगा, पर निश्चय नहीं रहता; जैसे, मैं आया होता; तू गया होता; वह सोया होता।

२४२—भविष्यकालके तीन भेद हैं—(१) विधिद्योतक (contin-

gent future), (२) आज्ञाद्योतक (imperative) और (३) शुद्ध भविष्य (absolute future).

२४३—विधिद्योतक भविष्य वह है, जिसमें किसी कार्यके करनेकी विधि वा निषेध रहता है; जैसे, घर जाकर पढ़ो; बड़ोंका कहना मानो; मैं जाऊँ; वह खाय; किसीको दुख न दो।

२४४—आज्ञाद्योतक भविष्य विधिद्योतकसा ही होता है, पर आज्ञाद्योतकमें यह विशेषता रहती है कि मध्यम पुरुषके एकवचनमें धातुका ही क्रियापदकी भाँति और बहुवचनमें क्रियाके रूपका ही क्रियापदकी भाँति प्रयोग होता है; जैसे, दूर हो यहांसे; तुम जब जाना तो अपना सामान उठाये लेते जाना। (देखो नियम २१३)।

२४५—शुद्ध भविष्य वह है जिसमें विधिद्योतक भविष्यमें 'गा' प्रत्यय और इसके अन्य रूप जुड़े रहते हैं; जैसे, मैं जाऊँगा; तू आवेगा; वह खायगा।

२४६—क्रियापदोंकी साधनाके लिये धातुमें जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, वे दो प्रकारके होते हैं:—(१) जिनमें लिंगभेद होता है और (२) जिनमें लिंगभेद नहीं होता अथवा जो उभयलिंगी होते हैं।

२४७—'ह' धातुके वर्तमानकाल तथा अन्य धातुओंके विधि और आज्ञाके रूपमें लिंगभेद नहीं होता। इन रूपोंको बनानेवाले ये चार प्रत्यय हैं:—ऊं, ए, एं और ओ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं (ह+ऊं)*	हम (ह+एं) हैं
मध्यम	तू (ह+ए) है	तुम (ह+ओ) हो
अन्य	वह (ह+ए) है	वे (ह+एं) हैं

* पहले 'हूँ' की जगह 'हौं' और 'हो' के बदले 'हौ' लिखते बोलते थे

२४८—आज्ञाके मध्यम पुरुष एकवचनमें धातु और बहुवचनमें क्रिया ही क्रियापदका काम करती है। (देखो नियम २३८) बहुवचनमें 'ओ' और कभी 'इयो' प्रत्यय भी धातुओंमें लगा देते हैं।

२४६—आदर व्यक्त करनेके लिये जब मध्यम पुरुषके लिये 'आप' शब्दका प्रयोग करते हैं, तब धातुमें 'इये' और 'जिये' प्रत्यय लगाते हैं। 'खा' धातुमें 'इये' लगानेसे 'खाइये' और 'पी' धातुमें 'जिये' लगानेसे 'पीजिये' क्रियापद बनते हैं।

२५०—अन्य धातुओंके तीनो काल दो धातुओं और प्रत्ययोंके योगसे बनते हैं, जिनमें वर्तमान कालके रूप बनानेके लिये 'ह' धातुके वर्तमान कालके रूप सहायक होते हैं; जैसे, (वर्तमान) 'जाता है' क्रियापद बनानेके पहले 'जा' धातुमें 'ता' प्रत्यय लगाना पड़ा और फिर उसके साथ 'ह' धातुका रूप 'है' जोड़ा गया।

२५१—वर्तमान काल जतानेके लिये जैसे, 'ह' धातु है, वैसे ही भूत बतानेके लिये 'था' है, परन्तु अन्तर इतना है कि 'था' धातुसे आकारान्त पुंलिंग क्रियापद ही बनते हैं, जो एकारान्त कर देनेसे पुंलिंग बहुवचन बन जाते हैं और ईकारान्त कर देनेसे स्त्रीलिंग रूप हो जाते हैं।

(अ) 'था' धातुके भूतकालके रूप (पुंलिंग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं था	हम थे
मध्यम	तू था	तुम थे
अन्य	वह था	वे थे

(आ) 'था' धातुके भूतकालके रूप (स्त्रीलिंग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं थी	हम थीं

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
मध्यम	तू थी	तुम थीं
अन्य	वह थी	वे थीं

२५२—भविष्यकालिक प्रत्यय 'गा' है, जो विधिके रूपमें लगाया जाता है। (देखो नियम २४४) यह 'था' की तरह अकेला नहीं आता, पर किसी धातुके आश्रय में रहता है। 'हो' धातुमें लगनेसे 'होगा' भविष्यकालिक क्रियापद बनता है।

(अ) पुंलिंग रूप

उत्तम	मैं (होऊँ+गा) होऊँगा	हम (होवें+गे) होवेंगे
मध्यम	तू (होवे+गा) होवेगा	तुम (होओ+गे) होओगे
अन्य	वह (होवे+गा) होवेगा	वे (होवें+गे) होवेंगे

(आ) अन्य प्रकार

उत्तम	मैं (हूँ+गा) हूँगा	हम (हों+गे) होंगे
मध्यम	तू (हो+गा) होगा	तुम (हो+गे) होगे
अन्य	वह (हो+गा) होगा	वे (हों+गे) होंगे

(इ) स्त्रीलिंग रूप

उत्तम	मैं होऊँगी व हूँगी	हम होवेंगी वा होंगी
मध्यम	तू होवेगी वा होगी	तुम होओगी वा होगी
अन्य	वह होवेगी वा होगी	वे होवेंगी वा होंगी

२५३—लिंगभेदवाले दो क्रिया-प्रत्यय हैं, जो वास्तवमें कृत-प्रत्यय हैं और वर्त्तमान और भूतकालके रूप बनानेके काममें आते हैं। ये हैं 'ता' और 'या'। 'ता' से बने रूप वर्त्तमानकालिक कृदन्त (present participle) और 'या' से बने भूतकालिक कृदन्त (past participle) कहाते हैं और अंगरेजीकी तरह वर्त्तमान और भूतकाल बताते हैं;

जैसे, 'आ' धातुमें 'ता' लगाया तो 'आता' (coming) और 'या' लगाया तो 'आया' (came) बना।

अकर्मक 'हो' धातुसे बने रूप वा क्रियापद

२९४— वर्त्तमानकाल

(१) सामान्य वर्त्तमान पुंलिंग हो+ता+है=होता है।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं होता हूँ	हम होते हैं
मध्यम	तू होता है	तुम होते हो
अन्य	वह होता है	वे होते हैं

सामान्य वर्त्तमान स्त्रीलिंग हो+ती+है=होती है

उत्तम	मैं होती हूँ	हम होती हैं
मध्यम	तू होती है	तुम होती हो
अन्य	वह होती है	वे होती हैं

(२) तात्कालिक वर्त्तमान पुंलिंग हो+रहा+है=हो रहा है

उत्तम	मैं हो रहा हूँ	हम हो रहे हैं
मध्यम	तू हो रहा है	तुम हो रहे हो
अन्य	वह हो रहा है	वे हो रहे हैं

तात्कालिक वर्त्तमान स्त्रीलिंग हो+रही+है=हो रही है

उत्तम	मैं हो रही हूँ	हम हो रही हैं
मध्यम	तू हो रही है	तुम हो रही हो
अन्य	वह हो रही है	वे हो रही हैं

(३) पूर्ण वर्त्तमान पुंलिंग हो+आ+है=हुआ है

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं हुआ हूँ	हम हुए हैं

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
मध्यम	तू हुआ है	तुम हुए हो
अन्य	वह हुआ है	वे हुए हैं

पूर्ण वर्त्तमान स्त्रीलिंग हो+ई+है=हुई है

उत्तम	मैं हुई हूँ	हम हुई हैं
मध्यम	तू हुई है	तुम हुई हो
अन्य	वह हुई है	वे हुई हैं

(४) सन्दिग्ध वर्त्तमान पुंलिंग 'होता होगा'

उत्तम	मैं होता हूँगा वा होऊँगा	हम होते होंगे वा होवेंगे
मध्यम	तू होता होगा वा होवेगा	तुम होते होगे वा होओगे
अन्य	वह होता होगा वा होवेगा	वे होते होंगे वा होवेंगे

सन्दिग्ध वर्त्तमान स्त्रीलिंग 'होती होगी'

उत्तम	मैं होती हूँगी वा होऊँगी	हम होती होंगी वा होवेंगी
मध्यम	तू होती होगी वा होवेगी	तुम होती होगी वा होओगी
अन्य	वह होती होगी वा होवेगी	वे होती होंगी वा होवेंगी

(५) सम्भाव्य अपूर्ण वर्त्तमान पुंलिंग 'होता हो'

उत्तम	मैं होता होऊँ	हम होते हों वा होवें
मध्यम	तू होता हो वा होवे	तुम होते हो वा होओ
अन्य	वह होता हो वा होवे	वे होते हों वा होवें

सम्भाव्य अपूर्ण वर्त्तमान स्त्रीलिंग 'होती हो'

उत्तम	मैं होती होऊँ	हम होती हों वा होवें
मध्यम	तू होती हो वा होवे	तुम होती हो वा होओ
अन्य	वह होती हो वा होवे	वे होती हों वा होवें

(६) सम्भाव्य पूर्ण वर्त्तमान पुंलिंग 'हुआ हो'

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं हुआ होऊँ	हम हुए हों वा होवें
मध्यम	तू हुआ हो या होवे	तुम हुए हो या होओ
अन्य	वह हुआ हो वा होवे	वे हुए हों वा होवें

सम्भाव्य पूर्ण वर्त्तमान स्त्रीलिंग 'हुई हो'

उत्तम	मैं हुई होऊँ	हम हुई हों वा होवें
मध्यम	तू हुई हो	तुम हुई हो वा होओ
अन्य	वह हुई हो वा होवे	वे हुई हों वा होवें

२४४— भूतकाल

(१) सामान्य भूत, पुंलिंग हो+आ=हुआ

उत्तम	मैं हुआ	हम हुए
मध्यम	तू हुआ	तुम हुए
अन्य	वह हुआ	वे हुए

सामान्य भूत, स्त्रीलिंग 'हो+ई=हुई'

उत्तम	मैं हुई	हम हुईं
मध्यम	तू हुई	तुम हुईं
अन्य	वह हुई	वे हुईं

(२) अपूर्ण भूत, पुंलिंग 'होता था'

उत्तम	मैं होता था	हम होते थे
मध्यम	तू होता था	तुम होते थे
अन्य	वह होता था	वे होते थे

अपूर्ण भूत, स्त्रीलिंग 'होती थी'

उत्तम	मैं होतो थो	हम होती थीं

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
मध्यम	तू होती थी	तुम होती थीं
अन्य	वह होती थी	वे होतो थीं

(३) तात्कालिक भूत, पुंलिंग 'हो रहा था'

उत्तम	मैं हो रहा था	हम हो रहे थे
मध्यम	तू हो रहा था	तुम हो रहे थे
अन्य	वह हो रहा था	वे हो रहे थे

तात्कालिक भूत, स्त्रीलिंग 'हो रही थी'

उत्तम	मैं हो रही थी	हम हो रही थीं
मध्यम	तू हो रही थी	तुम हो रही थीं
अन्य	वह हो रहो थी	वे हो रहो थीं

(४) हेतुहेतुमद्भूत, पुंलिंग 'होता'

मध्यम	मैं होता	हम होते
मध्यम	तू होता	तुम होते
अन्य	वह होता	वे होते

हेतुहेतुमद्भूत, स्त्रीलिंग 'होती'

उत्तम	मैं होती	हम होतीं
मध्यम	तू होती	तुम होतीं
अन्य	वह होती	वे होतीं

(५) पूर्ण भूत पुंलिंग 'हुआ था'

उत्तम	मैं हुआ था	हम हुए थे
मध्यम	तू हुआ था	तुम हुए थे
अन्य	वह हुआ था	वे हुए थे

पूर्ण भूत स्त्रीलिंग 'हुई थी'

उत्तम	मैं हुई थो	तुम हुई थीं

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
मध्यम	तू हुई थी	तुम हुई थीं
अन्य	वह हुई थी	वे हुई थीं

(६) सन्दिग्ध भूत, पुंलिंग 'हुआ होगा'

उत्तम	मैं हुआ हूँगा वा होऊँगा	हम हुए होंगे वा होवेंगे
मध्यम	तू हुआ होगा वा होवेगा	तुम हुए होगे वा होओगे
अन्य	वह हुआ होगा वा होवेगा	वे हुए होंगे वा होवेंगे

सन्दिग्ध भूत, स्त्रीलिंग 'हुई होगी'

उत्तम	मैं हुई हूँगी वा होऊँगी	हम हुई होंगी वा होवेंगी
मध्यम	तू हुई होगी वा होवेगी	तुम हुई होगी वा होओगी
अन्य	वह हुई होगी वा होवेगी	वे हुई होंगी वा होवेंगी

(७) सम्भाव्य अपूर्ण भूत पुंलिंग 'आता होता'

उत्तम	मैं आता होता	हम आते होते
मध्यम	तू आता होता	तुम आते होते
अन्य	वह आता होता	वे आते होते

सम्भाव्य अपूर्ण भूत, स्त्रीलिंग 'होती होती'

उत्तम	मैं आती होती	हम आती होतीं
मध्यम	तू आती होती	तुम आती होतीं
अन्य	वह आती होती	वे आती होतीं

(८) सम्भाव्य पूर्ण भूत पुलिंग 'हुआ होता'

उत्तम	मैं हुआ होता	हम हुए होते
मध्यम	तू हुआ होता	तुम हुए होते
अन्य	वह हुआ होता	वे हुए होते

सम्भाव्य पूर्ण भूत, स्त्रीलिंग 'हुई होती'

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं हुई होती	हम हुई होतीं
मध्यम	तू हुई होती	तुम हुई होतीं
अन्य	वह हुई होती	वे हुई होतीं

२५६— भविष्यकाल

(अ) विधि (उभयलिंगी) 'हो' या 'होवे'

उत्तम	मैं होऊँ	हम हों वा होवें
मध्यम	तू हो वा होवे	तुम हो वा होओ
अन्य	वह हो वा होवे	वे हों वा होवें

(आ) आज्ञा (उभयलिंगी)

मध्यम	तू हो, होना वा होइयो	तुम होओ, होना वा होइयो

(इ) शुद्ध भविष्य पुंलिंग 'होगा' वा 'होवेगा'

उत्तम	मैं होऊँगा वा हूँगा	हम होवेंगे वा होंगे
मध्यम	तू होवेगा वा होगा	तुम होओगे वा होगे
अन्य	वह होवेगा वा होगा	वे होवेंगे वा होंगे

(ई) शुद्ध भविष्य स्त्रीलिंग 'होवेगी' वा 'होगी'

उत्तम	मैं होऊँगी वा हूँगी	हम होवेंगी वा होंगी
मध्यम	तू होवेगी वा होगी	तुम होओगी वा होगी
अन्य	वह होवेगी वा होगी	वे होवेंगी वा होंगी

२५७—सकर्मक धातुओंके पूर्ण वर्त्तमान (आसन्न भूत) सम्भाव्य पूर्ण वर्त्तमान, सम्भाव्य अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत, सम्भाव्य पूर्ण भूत और सन्दिग्ध भूतके रूपोंको छोड़, सब रूप अकर्मक धातुओंके समान बनते हैं। सकर्मक धातुओंके पूर्वोक्त रूप कर्मवाच्योंके होते हैं, इसलिये क्रियाके रूप लिंग और वचनमें कर्मके अनुसार रहते हैं, कर्त्ताके अनुसार नहीं।

सकर्मक "खा" धातुके रूप

(अ) सामान्य भूत

कर्त्ता (उभयलिंग)	एक०	बहु०	कर्म — एक०	कर्म — बहु
उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया,	पेड़े खाये
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खायी,	रोटियाँ खायीं
अन्य	उसने	उन्होंने		

(आ) पूर्ण वर्त्तमान

उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया है, पेड़े खाये हैं
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खायी है, रोटियाँ खायी हैं
अन्य	उसने	उन्होंने	

(इ) सम्भाव्य पूर्ण वर्त्तमान

उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया हो, पेड़े खाये हों
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खायी हो, रोटियाँ खायी हों
अन्य	उसने	उन्होंने	

(ई) पूर्ण भूत

उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया था, पेड़े खाये थे
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खायी थी, रोटियां खायी थीं
अन्य	उसने	उन्होंने	

(उ) सम्भाव्य पूर्ण भूत

उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया होता, पेड़े खाये होते
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खायी होती, रोटियाँ खायी होतीं
अन्य	उसने	उन्होंने	

(ऊ) सन्दिग्ध पूर्ण भूत

कर्त्ता	उभयलिंग		कर्म	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०
उत्तम	मैंने	हमने	पुं० पेड़ा खाया होगा,	पेड़े खाये होंगे
मध्यम	तूने	तुमने	स्त्री० रोटी खाया होगी,	रोटियाँ खायी होंगी
अन्य	उसने	उन्होंने		

२५८—आकारान्त, ईकारान्त, एकारान्त, और ओकारान्त धातुओं-के भूतकालिक कृदन्त (past participle) बनानेमें 'आ' के बदले 'या' लगाते हैं, पर ईकारान्त और एकारान्त धातुओंको इकारान्त बनाकर ही 'या' लगाते हैं; जैसे, आ + या = आया, बुला + या = बुलाया, नहा + या = नहाया, सी + या = सिया, पी + या = पिया, दे + या = दिया, ले + या = लिया, सो + या = सोया, खो + या = खोया।

२५९—'हो' धातु अपवाद है, क्योंकि इसमें 'आ' ही लगता है पर 'हो' 'हु' कर दिया जाता है; जैसे, हो + आ = हुआ।

२६०—किया, दिया, सिया, लिया और पिया क्रियापदोंके स्त्रीलिंग की, दी, ली, सी और पी होते हैं, कियी, दियी, लियी, सियी और पियी नहीं।

२६१—'कर' और 'जा' धातुओंके भूतकालिक कृदन्त साधारण रीतिसे नहीं बनते। साधारणतः 'कर' धातुसे 'करा' और 'जा' धातुसे 'जाया' रूप बनते हैं सही, पर, 'करा' शिष्ट प्रयोग नहीं है और 'जाया' भाववाच्य बनाने तथा अभ्यास बतानेके काममें आता है।

२६२—बकना, बोलना, भूलना, मिलना और लाना सकर्मक क्रियाएँ हैं, पर इनका प्रयोग कर्मवाच्यमें नहीं होता। भूतकालमें भी ये कर्तृ-वाच्यमें ही प्रयुक्त होती हैं। समझना क्रिया कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य

दोनोंमें आती है। मैं बका, मैं बोला, मैं भूला, मैं मिला, और मैं लाया शुद्ध हैं। मैंने बका, मैंने बोला, मैंने भूला, मैंने मिला और मैंने लाया अशुद्ध है। मैं समझा और मैंने समझा दोनों शुद्ध हैं।

२६३—पाना क्रिया जब अकेली (दूसरी क्रियाके साथ मिलकर नहीं) आती है, तब भूतकालमें उसमें कर्मवाच्य होता है; जैसे, मैंने एक रुपया पाया, उसने एक पाई पायी।

अभ्यास

(१) क्रियापदोकी साधना किन प्रत्ययोंके योगसे होती है ?

(२) शुद्ध भविष्य और विधिद्योतक भविष्यमे क्या अन्तर है ?

(३) क्रियापदोंमे लिंगभेदका क्या कारण है ?

(४) काल कितने है उदाहरण सहित बताओ।

(५) सन्दिग्ध वर्त्तमान और सम्भाव्य वर्त्तमानके रूपमें क्या अन्तर है ?

(६) कौन ऐसी सकर्मक क्रियाएँ है जिनके भूतकालमें कर्मवाच्य नहीं होता ?

(७) इनमे कौन शुद्ध है 'मैने बोला' या 'मै बोला' ? 'मैने समझा' या 'मै समझा' ? 'मै लाया' या 'मैने लाया' ?

प्रेरणार्थक क्रिया

२६४—जो क्रिया दूसरेको किसी काम करनेकी प्रेरणा करती है, वह प्रेरणार्थक क्रिया (caustive verb) कहाती है; जैसे, 'करना' क्रियासे प्रेरणार्थक क्रिया 'कराना' और 'करवाना', 'बोलना' क्रियासे प्रेरणार्थक क्रिया 'बुलाना' और 'बुलवाना', 'खाना' क्रियासे प्रेरणार्थक क्रिया 'खिलाना' और 'खिलवाना'।

२६५—प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकारकी होती है, (१) वह जो किसी मनुष्यको स्वयं काम करनेकी प्रेरणा करती है; जैसे, 'खाना' क्रियासे प्रेरणार्थक क्रिया 'खिलाना' और (२) वह जो किसी मनुष्यको तीसरे से काम कराने या लेनेकी प्रेरणा करती है; जैसे, 'खाना' से 'खिलवाना'।

२६६—अकर्मक क्रियाओंसे दोनो प्रकारकी प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं, पहली प्रेरणार्थक धातुमें 'आ' जोड़नेसे तथा दूसरी 'वा' बढ़ाने से; जैसे,

अकर्मक	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणार्थक
बैठना	बैठाना, बिठाना	बैठवाना
चलना	चलाना	चलवाना
तैरना	तैराना	तैरवाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना
उठना	उठाना	उठवाना
भटकना	भटकाना	भटकवाना

२६७—कई अकर्मक क्रियाओंके आदिके अक्षरमें यदि दीर्घ स्वर होता है, तो उसे ह्रस्व करके 'आ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे

लेटना	लिटाना	लिटवाना
जागना	जगाना	जगवाना
घूमना	घुमाना	घुमवाना
डूबना	डुबाना वा डुबोना	डुबवाना

२६८—साधारणतः कर्मकर्तृक क्रियाओंसे पूर्वोक्त नियमानुसार ही दोनो प्रकारकी प्रेरणार्थ क्रियाएँ बनती हैं; जैसे,

कर्मकर्तृक	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणार्थक
उगना	उगाना	उगवाना

कर्मकर्तृक	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणार्थक
भीगना	भिगाना, भिगोना	भिगवाना
चमकना	चमकाना	चमकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना
खिलना	खिलाना	खिलवाना
पकना	*पकाना*	*पकवाना*

२६९—कई कर्मकर्तृक क्रियाओंको पहली प्रेरणार्थक क्रियाका रूप प्रथम अक्षरके ह्रस्व स्वरको दीर्घ कर देनेसे तथा दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया 'आ' अथवा 'वा' प्रत्यय लगानेसे बनती है। पहली सकर्मक और दूसरी प्रेरणार्थक है; जैसे,

लदना	लादना	लदाना, लदवाना
बँधना	बाँधना	बँधाना बँधवाना
कटना	काटना	कटाना, कटवाना
मरना	मारना	मराना मरवाना
बनना	बनाना	बनवाना

२७०—कई अकर्मक क्रियाओंकी भी प्रेरणार्थक क्रियाएँ इसी नियमसे बनती हैः—

निकलना	निकालना	निकलाना, निकलवाना
उतरना	उतारना	उतराना, उतरवाना

२७१—कई सकर्मक क्रियाएँ भी इसी नियमका अनुसरण करती हैं; जैसे,

पटकना	पटकाना	पटकवाना
पकड़ना	पकड़ाना	पकड़वाना
जीतना	जिताना	जितवाना

समझना	समझाना	समझवाना
सूँघना	सुँघाना	सुँघवाना

२७२—कई कर्मकर्तृक क्रियाओंका आदि अक्षरवाला स्वर यदि ह्रस्व होता है, तो उससे बनी सकर्मक क्रियाका वही स्वर दीर्घ कर दिया जाता है और प्रेरणार्थक क्रियाके दो रूप बनते हैं जिनमें पहला 'आ' प्रत्यय तथा दूसरा 'वा' प्रत्यय बढानेसे बनता है; जैसे,

कर्मकर्तृक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
पिटना	पीटना	पिटाना, पिटवाना
लुटना	लूटना	लुटाना, लुटवाना
कुटना	कूटना	कुटाना, कुटवाना

२७३—जिन कर्मकर्तृक क्रियाओंके प्रथम अक्षरमें 'इकार' वा 'उकार' होता है, उनकी सकर्मक क्रियाके आदि अक्षरको 'एकार', 'ईकार' वा 'ओकार' से बदल देते हैं और प्रेरणार्थक क्रिया साधारण नियमसे बनती है; जैसे,

कर्मकर्तृक	सकर्मक	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणा०
खिंचना	खेंचना,		खिचाना,
	खींचना		खिंचवाना
गिरना	गेरना	गिराना	गिरवाना
पिलना	पेलना	पिलाना	पिलवाना
मिलना	मेलना	मिलाना	मिलवाना
निबड़ना	निबेड़ना	निबड़ाना	निबड़वाना
	निबाड़ना		
खुलना	खोलना		खुलाना खुलवाना
घुलना	घोलना		घुलाना, घुलवाना

२७४—जिन कर्मकर्तृक क्रियाओंका आदि अक्षर उ वा ऊकार युक्त होता है और धातु टकारान्त होती है, उनसे बननेवाली सकर्मक क्रियामें 'उ' वा 'ऊ' तो 'ओ' में और 'ट' 'ड़' में बदल जाता है और प्रेरणार्थकमें केवल 'ट' 'ड' होनेपर ही 'आ' अथवा 'वा' जुडता है; जैसे,

कर्मकर्तृक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
फूटना	फोड़ना	फुड़ाना, फुड़वाना
टूटना	तोडना	तुड़ाना, तुड़वाना
जुटना	जोड़ना	जुड़ाना, जुड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना, छुड़वाना

२७५—एक अक्षरवाली अकर्मक और सकर्मक धातुसे बननेवाली पहली प्रेरणार्थक क्रियामे 'आ' प्रत्यय न लगाकर 'ला' और दूसरी प्रेरणार्थकमे 'लवा' लगाते हैं तथा आदि अक्षरका स्वर दीर्घ हो, तो ह्रस्व कर दिया जाता है; जैसे,

अकर्मक	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणार्थक
रोना	रुलाना	रुलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
सकर्मक		
खाना	खिलाना	खिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना

२७६—जिन क्रियाओके आदि अक्षरमें दीर्घ स्वर होता है, उनकी प्रेरणार्थक क्रियामें वह ह्रस्व कर दिया जाता है। दो रूप होनेपर भी अर्थमें कभी कभी अन्तर नही पड़ता; जैसे,

सकर्मक	प्र० प्रेरणार्थक	दू० प्रेरणार्थक
थूकना	थुकाना	थुकवाना
सोचना	सुचाना	सुचवाना
सूझना	सुझाना	सुझवाना

२७७—कई सकर्मक क्रियाओंकी प्रेरणार्थक क्रियाके दो रूप होने पर भी अर्थमें अन्तर नहीं पड़ता; जैसे,

सकर्मक	प्रेरणार्थक
करना	कराना, करवाना
छापना	छपाना, छपवाना
परखना	परखाना, परखवाना

२७८—कुछ कर्मकर्तृक और अकर्मक क्रियाओंके पहले प्रेरणार्थक रूप 'आ' वा 'ला' लगानेसे और दूसरे प्रेरणार्थक 'वा' लगानेसे तथा कर्मकर्तृकके प्रथमाक्षरकी 'ई' को 'ए' और 'ऊ' को 'ओ' कर देनेसे सकर्मक रूप बनते हैं; जैसे,

कर्मकर्तृक	सकर्मक	प्र० प्रेरणार्थक	द्वि० प्रेरणार्थक
दिखना	देखना	दिखाना, दिखलाना	दिखवाना
सूखना	सोखना	सुखाना, सुखलाना	सुखवाना
अकर्मक			
रहना	रखना	रखाना	रखवाना
बैठना		बैठाना, बिठाना	बैठवाना, बिठवाना
कहना		कहाना, कहलाना	कहवाना
सीखना		सिखाना, सिखलाना	सिखवाना

अभ्यास

१—प्रेरणार्थक क्रिया नामका क्या कारण है ? २—पहली और दूसरी

प्रेरणार्थक क्रियाओंका क्या अर्थ है और वे कैसे बनती है ? ३—क्या ऐसी भी क्रियाएँ है जिनके रूपोमे भिन्नता होनेपर भी अर्थोमे नही होती ? हों, तो बताओ।

संयुक्त क्रिया

२७९—जो क्रिया दो वा अधिक क्रियाओंके मेलसे बनती है, उसे संयुक्त क्रिया (compound vcrb) कहते हैं।

द्रष्टव्य—यों तो विधि और आज्ञाको छोडकर सभी क्रियापद दो या अधिक क्रियाओके योगसे बनते है, परन्तु जिन्हें सयुक्त क्रिया कहते है, वे इनसे भिन्न है; क्योकि साधारण क्रियापद तो 'हो', 'था', 'ह' और 'गा' धातुओसे बनते है। परन्तु सयुक्त क्रियाए 'होना' ही नही, 'आना' 'जाना', 'रहना', 'रखना', 'उठना' 'बैठना', 'लेना', 'पाना', 'डालना', 'सकना', 'चुकना', 'लगना', 'करना', 'भेजना' और 'चाहना' क्रियाओके योगसे बनती है।

२८०—रूपके अनुसार संयुक्त क्रियाओंके १५ भेद होते हैं :—

(अ) जिसके पहले भागमें पूर्वकालिक क्रिया हो और दूसरेमें आना, जाना, रहना, रखना, उठना, बैठना, लेना, देना, पाना, डालना, पड़ना तथा सकना अथवा चुकना क्रिया हो; जैसे भाग आना, सो जाना, बैठ रहना, धर रखना, बोल उठना, दे बैठना, मार लेना, मार देना, जान पाना, खा डालना, सुन पड़ना, सोच सकना, खा चुकना, बुला भेजना।

(आ) जिसके पहले भागमें यातो कृदन्त संज्ञा क्रियाके रूपमें हो या संज्ञा हो और दूसरेमें करना, देना होना, मारना, खाना, आना, जीतना,

जोहना, डालना, देखना, धरना, धोना, पकड़ना, पड़ना, पूछना, विचारना, मानना, मोडना, भरना, रखना, रहना, लगना, चलना, दिखाना इत्यादि क्रियाएँ हों; जैसे, बात करना, उधार देना, खड़ा होना, डींग मारना, सौगन्ध खाना, स्मरण (याद) आना, लड़ाई जीतना, बाट जोहना, लंगर डालना, राह देखना, ध्यान धरना, मुँह धोना, जड पकडना, दिखाई पड़ना या देना, सुनाई देना, छुलाई देना, पकडाई देना, पता पूछना, मुहूर्त्त विचारना, कहा मानना, मुँह मोडना, दम भरना, याद रखना, सुध रहना या करना, मुँह लगना, चर्चा चलाना, मुँह दिखाना ।

(इ) जिसके पहले भागमें वर्त्तमानकालिक कृदन्त और दूसरेमें बनना, रहना, फिरना, आना, जाना आदि क्रिया हो। इसमें लिंगवचनके अनुसार दोनो भागोंमे परिवर्त्तन होता है; जैसे, चलता बना, चलते बने, चलती बनी, खाता रहा, खाते रहे, खाती रही, घूमता फिरा, घूमते फिरे, घूमती फिरी, रोता आया, रोते आये, रोती आयी, हंसता गया, हंसते गये, हंसती गयीं ।

(ई) कभी कभी पहले भागमें वर्त्तमानकालिक कृदन्तका सामान्य रूप रहता है और लिंगवचनकी दृष्टिसे कभी उसमें परिवर्त्तन नहीं होता और पिछले भागकी क्रियामें ही परिवर्त्तन होता है; जैसे, वह नाचते गाते आती है, दिल ले गया मेरा यार वह हंसते हंसते ।

(उ) जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त हो और दूसरेमें क्रिया। इसमें भी लिंगवचनके अनुसार दोनो भागोंमे परिवर्त्तन होता है; जैसे, चला आया, चले आये, चली आयी, खड़ा रहा, खड़े रहे, खड़ी रही, भागा फिरा, भागे फिरे, भागी फिरी ।

(ऊ) कभी कभी पहले भागमें भूतकालिक कृदन्तका सामान्य रूप रहता है, जो लिंगवचनके कारण नहीं बदलता, केवल दूसरे भागकी

क्रियामे ही परिवर्तन होता है; जैसे, सुनाये देना, कहे जाना, ओढे आना, पहने चलना, लदाये रखना, पढे होना।

(ऋ) जिसके पहले भागमे भूतकालिक कृदन्त हो और दूसरेमे 'करना' अथवा 'चाहना' क्रिया। इसमे पहले भागमें लिंगवचनानुसार परिवर्त्तन नहीं होता; जैसे, आया करना, पढा करना, सोया करना, खाया चाहना, बरसना चाहना, मारा चाहना।

(ए) कभी कभी भूतकालिक कृदन्तके बदले साधारण क्रियाके रूपमे कृदन्त रहता है और पिछले भागमे 'चाहना' क्रिया रहती है; जैसे, खाना चाहना, बरसना चाहना, मारना चाहना।

(ऐ) जिसमे पहले भागमें साधारण क्रिया रूपी कृदन्त सामान्य रूपमे रहता है और दूसरेमे आना, जाना, बैठना, लगना, पाना जैसी क्रिया होती है; जैसे, खाने आना, बुलाने जाना, करने बैठना, जाने लगना, सुनाने लगना, बताने लगना, जाने पाना, खाने पाना, देखने पाना।

(ओ) जिसके पहले भागमे भूतकालिक कृदन्त रूपमें संज्ञा हो और दूसरेमें 'चाहिये'; जैसे, किया चाहिये, जाया चाहिये।

(औ) कभी कभी भूतकालिक कृदन्तके बदले साधारण क्रिया रूपी कृदन्त होता है; जैसे, जाना चाहिये, खाना चाहिये।

(क) जिसमें एक ही अथवा एकसे अर्थमें दो क्रियाएं रहती हैं; जैसे, आना जाना, करना धरना, देखना भालना। ये कृदन्त संज्ञाएं हैं।

(ख) कभी कभी 'बिना' के साथ भूतकालिक कृदन्तके सामान्य रूपमें दो क्रियाएं रहती हैं। उस समय वह संयुक्त क्रिया क्रियाविशेषण का काम करती है; जैसे, बिना कहे सुने, बिना पूछे बताये।

(ग) जिसके पहले भागमे सकर्मक क्रिया साधारण कृदन्त रूपमे

जोहना, डालना, देखना, धरना, धोना, पकड़ना, पड़ना, पूछना, विचारना, मानना, मोड़ना, भरना, रखना, रहना, लगना, चलना, दिखाना इत्यादि क्रियाएँ हों; जैसे, बात करना, उधार देना, खड़ा होना, डींग मारना, सौगन्ध खाना, स्मरण (याद) आना, लड़ाई जीतना, बाट जोहना, लंगर डालना, राह देखना, ध्यान धरना, मुँह धोना, जड़ पकड़ना, दिखाई पड़ना या देना, सुनाई देना, छुलाई देना, पकड़ाई देना, पता पूछना, मुहूर्त्त विचारना, कहा मानना, मुँह मोड़ना, दम भरना, याद रखना, सुध रहना या करना, मुँह लगना, चर्चा चलना, मुँह दिखाना।

(इ) जिसके पहले भागमें वर्त्तमानकालिक कृदन्त और दूसरेमें बनना, रहना, फिरना, आना, जाना आदि क्रिया हो। इसमें लिंगवचनके अनुसार दोनो भागोंमें परिवर्त्तन होता है; जैसे, चलता बना, चलते बने, चलती बनी, खाता रहा, खाते रहे, खाती रही, घूमता फिरा, घूमते फिरे, घूमती फिरी, रोता आया, रोते आये, रोती आयी, हंसता गया, हंसते गये, हंसती गयी।

(ई) कभी कभी पहले भागमें वर्त्तमानकालिक कृदन्तका सामान्य रूप रहता है और लिंगवचनकी दृष्टिसे कभी उसमें परिवर्त्तन नहीं होता और पिछले भागकी क्रियामें ही परिवर्त्तन होता है; जैसे, वह नाचते गाते आती है, दिल ले गया मेरा यार वह हंसते हंसते।

(उ) जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त हो और दूसरेमें क्रिया। इसमें भी लिंगवचनके अनुसार दोनो भागोंमें परिवर्त्तन होता है; जैसे, चला आया, चले आये, चली आयी, खड़ा रहा, खड़े रहे, खड़ी रही, भागा फिरा, भागे फिरे, भागी फिरी।

(ऊ) कभी कभी पहले भागमें भूतकालिक कृदन्तका सामान्य रूप रहता है, जो लिंगवचनके कारण नहीं बदलता, केवल दूसरे भागकी

क्रियामे ही परिवर्तन होता है; जैसे, सुनाये देना, कहे जाना, ओढे आना, पहने चलना, लदाये रखना, पढे होना।

(ऋ) जिसके पहले भागमे भूतकालिक कृदन्त हो और दूसरेमे 'करना' अथवा 'चाहना' क्रिया। इसमें पहले भागमे लिंगवचनानुसार परिवर्त्तन नहीं होता; जैसे, आया करना, पढा करना, सोया करना, खाया चाहना, बरसना चाहना, मारा चाहना।

(ए) कभी कभी भूतकालिक कृदन्तके बदले साधारण क्रियाके रूपमे कृदन्त रहता है और पिछले भागमें 'चाहना' क्रिया रहती है; जैसे, खाना चाहना, बरसना चाहना, मारना चाहना।

(ऐ) जिसमें पहले भागमे साधारण क्रिया रूपी कृदन्त सामान्य रूपमे रहता है और दूसरेमे आना, जाना, बैठना, लगना, पाना जैसी क्रिया होती है; जैसे, खाने आना, बुलाने जाना, करने बैठना, जाने लगना, सुनाने लगना, बताने लगना, जाने पाना, खाने पाना, देखने पाना।

(ओ) जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त रूपमें संज्ञा हो और दूसरेमें 'चाहिये'; जैसे, किया चाहिये, जाया चाहिये।

(औ) कभी कभी भूतकालिक कृदन्तके बदले साधारण क्रिया रूपी कृदन्त होता है; जैसे, जाना चाहिये, खाना चाहिये।

(क) जिसमें एक ही अथवा एकसे अर्थमें दो क्रियाएं रहती हैं; जैसे, आना जाना, करना धरना, देखना भालना। ये कृदन्त संज्ञाएं हैं।

(ख) कभी कभी 'बिना' के साथ भूतकालिक कृदन्तके सामान्य रूपमें दो क्रियाएं रहती हैं। उस समय वह संयुक्त क्रिया क्रियाविशेषण का काम करती है; जैसे, बिना कहे सुने, बिना पूछे बताये।

(ग) जिसके पहले भागमें सकर्मक क्रिया साधारण कृदन्त रूपमें

होती है और दूसरे भागमें 'होना' क्रियाके रूप होते हैं और दोनोमें लिंगवचनके अनुसार परिवर्त्तन होता हैं; जैसे, काम करना होगा; रोटी खानी होगी; रसगुल्ले बनाने होंगे; बाते कहनी होंगी।

(घ) कभी कभी पूर्वभागमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाता; जैसे, रोटी खाना होगी; रसगुल्ले बनाना होंगे; बातें कहना होंगी। ऐसे प्रयोग युक्तप्रदेशके मध्य भागमें अधिक देखे जाते हैं।

२८१—अर्थके अनुसार संयुक्त क्रियाके ये १६ भेद होते है :—

(१) दृढताद्योतक (intensive), जिसमें दो क्रियाओंके योगसे अर्थमें दृढता आ जाती है; जैसे, 'मारना' कहनेसे जान लेनेका भाव नहीं प्रकट होता, केवल आघात करना भर जाना जाता है; पर 'मार डालना' कहनेसे मारकर डाल देना या फेंक देना अर्थात् जान ले लेना अर्थ होता है।

(२) सामर्थ्यद्योतक (potential), जिसके दूसरे भागमें 'सकना' क्रियाके रूप रहते हैं; जैसे, मैं नहीं जा सकता।

(३) पूर्णताद्योतक (completive), जिसके दूसरे भागमें 'चुकना' क्रियाके रूप रहते हैं; जैसे, क्या तुम खा चुके?

(४) अनिवार्यताद्योतक (compulsive), जिसके दूसरे भागमें 'पड़ना' क्रिया रहती है; जैसे, मुझे खाना पड़ा।

(५) नामवाचक (nominal), जिसके पहले भागमें नाम वा संज्ञा रहती है; जैसे, लंगर डालना, बात करना।

(६) नित्यताद्योतक (continuative) जिसके पहले भागमें वर्त्तमानकालिक कृदन्त और दूसरे भागमें आना, जाना, फिरना इत्यादि कोई क्रिया होती है; जैसे, चलता बना।

(७) स्थिरताद्योतक (statical), जिस नित्यताद्योतक संयुक्त

क्रियाके पहले भागमें लिंगवचनानुसार परिवर्तन न हो; जैसे, वह हंसते आयो।

(८) वर्द्धमान (progressive), जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त हो; जैसे, दौड़ी आयी।

(९) अभ्यास वा स्वभावद्योतक (frequentative) जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त और दूसरेमें 'करना' क्रियाके रूप हों; जैसे, कभी कभी तो आया करो।

(१०) इच्छाद्योतक (desiderative), जिसके पहले भागमें भूतकालिक कृदन्त अथवा साधारण क्रियाका कृदन्त और दूसरेमें 'चाहना' क्रियाके रूप हों; जैसे डाक आया वा जाना चाहती है।

(११) हेतुदर्शक (causal), जिसके पहले भागमें निमित्त अर्थमें साधारण क्रिया रूपी कृदन्तका सामान्य रूप रहता है; जैसे, खाने आना।

(१२) आरम्भद्योतक (incentive), जिसके पहले भागमें साधारण क्रियाका कृदन्त सामान्य रूपमें और दूसरे भागमें 'लगना' क्रिया रहती है; जैसे, खाने लगा।

(१३) अनुमतिद्योतक (permissive), जिसके पहले भागमें साधारण क्रिया रूपी कृदन्तका सामान्य रूप और दूसरेमें 'देना' क्रिया रहती है; जैसे, जाने देना।

(१४) प्राप्तिद्योतक (acquisitive), जिसके पहले भागमें साधारण क्रिया रूपी कृदन्त सामान्य रूपमें और दूसरेमें 'पाना' क्रिया रहती है; जैसे; खाने पाना।

(१५) पौनःपुनिक (reiterative), जिसमें 'बिना' के साथ

भूतकालिक कृदन्तके सामान्य रूपमे एक वा दो क्रियाएं रहती हैं, जैसे, कहे सुने बिना ।

(१६) औचित्यदर्शक (justificative), जिसके पहले भागमे भूतकालिक कृदन्त अथवा साधारण क्रिया रूपमे कृदन्त हो और दूसरे भागमें 'चाहिये'; जैसे जाना या जाया चाहिये ।

अभ्यास

१—संयुक्त क्रिया और साधारण वा असयुक्त क्रियामे क्या अन्तर है ?
२—संयुक्त क्रियाके कितने भेद है और क्यों ? उदाहरण सहित बताओ।

नाम धातु

२८२—सँज्ञाओंसे जो धातुएं बनती है, वे नाम धातु (denominative) और उनमें 'ना' जोड़नेसे जो क्रियाएँ बनती हैं, वे 'नाम क्रिया' (nominal verb) कहाती है ।

२८३—अनेक संज्ञाएं अपने वास्तविक रूपमें धातु मान ली जाती हैं और उनमे क्रियाका प्रत्यय 'ना' लगाकर क्रियाएं बना ली जाती है; जैसे, रंग, बघार, फटकार, दुतकार, ललकार आदि संज्ञा शब्द हैं। इनमें 'ना' लगानेसे रंगना, बघारना, फटकारना, दुतकारना, ललकारना क्रियाएं बना ली गयी हैं ।

२८४—कुछ ध्वनिमूलक संज्ञा शब्दोंमें 'ना' लगानेके पहले अन्त्य स्वर दीर्घ कर दिया जाता है अर्थात् 'ना' के बदले 'आना' जोड़ा जाता है, तब क्रिया बनती है अथवा संज्ञा शब्दमें 'आ' जोड़नेसे नाम धातु बनती है; जैसे खटपट, छटपट, फटफट, तड़फड़, तिलमिल और लाज शब्दोंसे खटपटा, छटपटा, फटफटा, तड़फड़ा, तिलमिला और लजा

धातुएं बनीं और खटपटाना, छटपटाना, फटफटाना, तड़फड़ाना, तिल-मिलाना और लजाना क्रियाएं। अन्तिम अक्षरके पहलेवाला स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व कर दिया जाता है; जैसे, लाजसे 'लजा' धातु और 'लजाना' क्रिया।

२८५—संज्ञा शब्दोंमें 'आ' के बदले 'ला' लगाकर धातु और फिर 'ना' जोड़कर क्रिया बनाते हैं; जैसे, 'झूठ' में 'ला' लगाकर 'झुठला' धातु और 'झुठलाना' क्रिया बनायी गयी।

२८६—कई संज्ञा शब्दोंमें 'आ' की जगह 'इया प्रत्यय' लगाकर नाम धातु बनाते हैं, पर उसके पहले अन्त्य स्वरका लोप कर देते हैं; जैसे, बात + इया = बतिया, जूता + इया = जुतिया, लात + इया = लतिया, चुटकी + इया = चुटकिया, पानी + इया = पनिया, हाथ + इया = हथिया धातुएँ और इनमें 'ना' जोड़नेसे बतियाना, जुतियाना, चुटकियाना, पनियाना, हथियाना क्रियाएँ बनीं।

२८७—कई संस्कृत शब्दोंको हिन्दी रूप देकर उनमें 'ना' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे, उद्धारसे उधारना, स्वीकारसे सकारना।

२८८—फारसीके 'हासिल मसदर' (कृदन्त संज्ञा)में भी 'ना' लगाकर क्रिया बनाते हैं; जैसे, गुजर + ना = गुजरना, खरीद + ना = खरीदना, बख्श + ना = बख्शना, अन्दाज + ना = अन्दाजना, लरज + ना = लरजना।

अभ्यास

१—नाम धातु नाम क्यों पड़ा है ?

२—नाम धातुएँ कैसे बनती हैं ? उदाहरण द्वारा समझाओ।

कृदन्त

२८९—धातुमें कृत् प्रत्यय जोड़नेसे जो साधित शब्द(derivative word) बनते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं। इन प्रत्ययोंके योगसे क्रियाका साधारण रूप 'आना' 'जाना' अथवा पूर्वकालिक क्रिया 'आकर, आके, आकरके' 'जाकर, जाके, जाकरके' तथा वर्तमानकालिक कृदन्त 'आता, जाता' और भूतकालिक कृदन्त 'आया, गया' इत्यादि ही नहीं बनते, बल्कि संज्ञा शब्द भी बनते हैं। क्रियामें भी प्रत्यय जोड़नेसे संज्ञा शब्द बनते हैं।

२९०—धातुसे प्रायः भाववाचक संज्ञाएँ ही अधिक बनती हैं। कुछमें तो प्रत्यय लगते ही नहीं और वे धातुके रूपमें ही भाववाचक मान ली जाती हैं और कुछमें प्रत्यय लगते हैं। लूट, मार, जान, पहचान, जांच, पहुँच, समझ, तड़क, चमक इत्यादि धातुओंसे भाववाचक अर्थ भी निकलता है। आ, आई, आऊ, आव, आवट, इया, ई, ऊ, एरा, ऐया, क, त, न, ना, वैया, अन्ना, टा, आल, अक्कड, आडी, ओड, का, आका, नी, औटी, औरी, औना, आनी, आस और आन प्रत्यय धातुओंमें जोडे जाते हैं। केवल अन्त्य अकारका लोप करके अथवा आकार हुआ तो उसे ह्रस्व करके प्रत्यय जोड़ देते हैं। इनके योगसे कर्तृवाचक, सम्बन्धवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं।

कर्तृवाचक

२९१—आ, अन्ना, टा, आका, इया, एरा, वैया, आऊ, ऊ, क, आका और ऐया प्रत्यय कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाते हैं, जैसे, भूँज + आ = भूँजा* भूँजनेवाला, भड़भूँजा, खा + अन्ना = खन्ना (खानेवाला),

* 'भूजा' शब्दका प्रयोग कही कही भुने अन्नके लिये भी किया जाता है।

चट + टा = चट्टा (चाटनेवाला, तिलचट्टा) उड़ + आका = उड़ाका (उड़नेवाला), जड़ + इया = जड़िया, लूट + एरा = लूटेरा, परख + ऐया = परखैया, जान + ऐया = जनैया, ग + वैया = गवैया, लड़ + वैया = लड़वैया, लड़ + आऊ = लड़ाऊ, बेंच + ऊ = बेंचू, ले + ऊ = लेऊ, मार + ऊ = मारू, घाल + क = घालक (घालने वा नष्ट करनेवाला), मार + क = मारक (मारनेवाला) तैर + आक = तैराक (तैरनेवाला), बचा + ऐया = बचैया ।

२९२—ना, आका, आलू, अक्कड़, आड़ी, ओड़, ऊ, आऊ और का प्रत्यय जुड़नेसे कर्त्तृवाचक संज्ञाएँ तो बनती ही हैं, पर इनसे कर्त्ताका स्वभाव भी जाना जाता है, जैसे, रो + ना = रोना (रोनेवाला अर्थात जिसका स्वभाव ही रोना है), लड़ + आका = लड़ाका (जिसका स्वभाव ही लड़ना है), झगड + आलू = झगड़ालू (जिसका स्वभाव ही झगड़ना है), भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़ (जिसका स्वभाव ही भूलना है) खेल + आड़ी = खिलाडी (जिसका स्वभाव ही खेलना है), हंस + ओड़ = हंसोड़ (जिसका स्वभाव ही हंसना है), खा + ऊ = खाऊ (जिसका स्वभाव ही खाना है), उड़ा + आऊ = उड़ाऊ (जिसका स्वभाव ही उड़ाना है), उचक + का = उचक्का (जो उचककर चीज पार कर देता है । आऊ प्रत्यय योग्यता वा निमित्त भी बताता है; जैसे, टिकाऊ (टिकने की योग्यता Durability), दिखाऊ (देखने के निमत्त) बिकाऊ (बिकनेके निमित्त) ।

कर्मवाचक और करणवाचक

२९३—'नी' प्रत्यय धातुमें जोड़नेसे कर्मवाचक और करणवाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, सूंघ + नी = सुंघनी (सूंघनेकी वस्तु), ओढ़ +

नी = ओढनी (ओढनेकी वस्तु)। 'न' भी इसी प्रकार कर्मवाचक प्रत्यय है; जैसे, ओढ+ना = ओढना, बिछा+ना = बिछाना। 'औना' प्रत्ययसे बिछौना शब्द बनता है। 'नी' करणवाचक प्रत्ययसे ये करण-वाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, धौंक+नी = धौंकनी, फूंक+नी = फुंकनी, छाल+नी = छलनी। कतर+नी = कतरनी। ये धौंकने, फूंकने, छालने और कतरनेके उपकरण हैं।

२९४—ई, न, आनी, औना और औटी प्रत्ययोंसे भी करणवाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, रेत+ई = रेती (रेतनेका यन्त्र), बेल+न = बेलन (जिससे बेलते हैं), मथ+आनी = मथानी (जिससे दही मथते वा बिलोते हैं), खेल+औना = खिलौना (जिससे लडके खेलते हैं), कस+औटी = कसौटी (जिसपर सोना कसते है)।

भाववाचक

२९५—आई, आव, आवा, न, त, ती, हट, वट, आवट, आन, आल और आप प्रत्यय धातुओंमें लगनेसे भाववाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, चढ+आई = चढाई (अभियान), लड़+आई = लडाई, बन+आव = बनाव, भूल+आवा = भुलावा, हंस+ई = हंसी, चल+न = चलन, बच+त = बचत, बढ+ती = बढती, सजा+वट = सजवाट, घबरा+हट = घबराहट, थक+आवट = थकावट, पी+आस = प्यास, मिल+आप = मिलाप, मिल+आन = मिलान। चढाई शब्द साधारण संज्ञा भी होता है, जब उसका अर्थ होता है वह ऊँची जमीन जिसपर चढ़ना पड़ता है; जैसे, सामने बड़ी भारी चढाई थी।

२९६—'रो' धातुमें 'आस' और 'आई' प्रत्ययके बदले 'लास' और 'लाई' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे, रो+लास = रुलास, रो+लाई = रुलाई।

२९७—'आई' प्रत्यय दाम अर्थमें भी आता है और उस समय उससे पदार्थवाचक संज्ञा बनती है; जैसे, रंग + आई = रंगाई, उतर + आई = उतराई, छप + आई = छपाई। 'बन' धातुमें 'वाई' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे बनवाई।

२९८—'आन' प्रत्यय 'लग' धातुमें लगता है, तब उसका अर्थ कर वा टैक्स होता है और उसके योगसे बनी संज्ञा पदार्थवाचक होती है; जैसे, लग + आन = लगान = भूकर।

क्रियासे कर्तृवाचक संज्ञा

२९९—वाला और हारा सम्बन्धसूचक प्रत्यय हैं और साधारण क्रिया रूपके 'आ' को 'ए' करके लगाये जाते हैं। इनसे कर्तृवाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, बोलना + वाला = बोलनेवाला, करना + हारा = करनेहारा, चलना + वाला = चलनेवाला।

३००—कई क्रियाओंमें आकारको ह्रस्व कर हार और सार प्रत्यय लगाते हैं; जैसे, होना + हार = होनहार, मिलना + सार = मिलनसार, सिरजन + हार = सिरजनहार, करना + हार = करनहार।

३०१—धातुमें 'आ' प्रत्यय लगानेसे करणवाचक; कर्मवाचक और भाववाचक संज्ञाएं बनती हैं; जैसे, घेर + आ = घेरा (मण्डल) फेर + आ = फेरा, (घूमना), जोड़ + आ = जोड़ा, रेल + आ = रेला, झोंक + आ = झोंका, झूल + आ = झूला, ठेल + आ = ठेला।

अभ्यास

१—कृदन्त किसे कहते है ? २—कृत प्रत्ययोके मेलसे कौन कौनसे साधित शब्द बनते है ? ३—कर्तृवाचक संज्ञा बनानेके लिये कौन प्रत्यय क्रियामे लगते है और कौनकौन धातुमें ? ४—भाववाचक संज्ञा बनाने-

वाले प्रत्यय कौन है? ५—आई, नी, आनी, औटी, औना और आन प्रत्ययोंके योगसे कौन संज्ञाए बनती हैं? ६—क्रिया वा धातुसे भाववाचक संज्ञा किन प्रत्ययोंके लगानेसे बनती है?

उपसर्ग

३०२—हिन्दीमें 'उपसर्ग' (prefix) नहींके बराबर ही हैं, क्योंकि जो दस, बीस, उपसर्ग हैं, वे या तो संस्कृतसे ज्योंके त्यों आये है वा विकृत रूपमें। अ, अन, सु, कु, अव (औ), अप, नि, निर्, प्रति और वि उपसर्ग ही हिन्दीमें काम आते हैं।

३०३—अ और अन दोनो निषेधार्थक उपसर्ग हैं, जैसे, अ+मोल =अमोल, अन+मोल=अनमोल, अन+मिल=अनमिल, अ+जान=अजान, अन+जान=अनजान, अ+पढ=अपढ़, अन+पढ= अनपढ, अन+रीति=अनरीति, अन+होनी=अनहोनी।

३०४—'सु' अच्छे और 'कु' बुरे अर्थमें आता है। कभी कभी 'सु' के बदले 'स' और 'कु' के बदले 'क' उपसर्गका भी प्रयोग होता है; जैसे, सु+पुत्र+सुपुत्र, स+पूत=सपूत, कु+पुत्र=कुपुत्र, क+पूत=कपूत कु+ढंगा=कुढंगा, कु+टेव=कुटेव, सु+डौल=सुडौल, सु+घड़= सुघड़।

३०५—हिन्दी शब्दोंके पहले 'नि' और संस्कृत शब्दोंके पहले 'निर्' उपसर्ग लगता है और इनसे युक्त शब्द विशेषण होते हैं; जैसे, नि+डर=निडर, नि+गोड़ा=निगोड़ा (पैर टूटा), निर्+लोभ=निर्लोभ, नर्+आधार=निराधार।

३०६—'अव' और 'औ' विलक्षण और विपरीत अर्थमें आते हैं; जैसे, अव+गुण=अवगुण, औ+घट=औघट, औ+घड़=औघड़।

३०७—'स' ठीक वा सहित अर्थमें हिन्दीमें आता है, जैसे, सवेरा (ठीक वेला या समयसे), स + चेत = सचेत, स + हेली = सहेली, स + जग = सजग, स + गोड़ा = सगोड़ा (अच्छे पैरवाला)।

३०८—'अप' 'बुरा' अर्थमें आता है; जैसे, अप + कीर्ति = अपकीर्ति अप + यश = अपयश (अपजस), अप + मान = अपमान, अप + सगुन = अपसगुन।

३०९—'वि' विपरीत वा भिन्न अर्थमें आता है; जैसे, वि + पक्ष = विपक्ष, वि + धर्मी = विधर्मी।

३१०—'ब', 'बा', 'बद', 'बे', 'न'; 'ला' और 'दर' फारसी उपसर्ग हैं और प्रायः उसीके शब्दोंमें जुड़ते हैं।

(अ)—'ब' के अर्थ 'से' और 'में' ही हिन्दीमें चलते हैं, जैसे, बहैसियत (हैसियतसे), बइजलास (इजलासमें)।

(आ)—'बा' का अर्थ 'साथ' वा 'में' अथवा 'युक्त' है, जैसे, बाहोश (होश), बालियाकत (लियाकतवाला)।

(इ)—'बे' निषेधार्थक उपसर्ग है, जैसे, बेबुनियाद, बेलौस, बेहया, बेशऊर (बेसहूर), बेजोड़, बेसुरा।

(ई)—'बद' विशेषण उपसर्गकी भाँति प्रयुक्त होता है, तब उल्टा वा निषेधार्थक होता है, जैसे, बदतमीज, बदजात, बदमाश।

(उ) 'ना' और 'ला' नकारार्थक उपसर्ग है, जैसे, नाचार, लाचार नालायक, लाइलाज, लापरवाह।

(ऊ)—'दर' उपसर्ग हिन्दीकी 'में' विभक्तिके अर्थमें आता है, जैसे, दरअस्ल दरहकीकत, दरमियान।

३११—'बे' और 'दर' उपसर्गोंका प्रयोग अज्ञानके कारण वहां भी कर दिया जाता है, जहां न होना चाहिये; जैसे, 'फजूल' में 'बे' लगाकर

'बेफजूल' और 'दरअसल' में 'में' लगाकर 'दरअसलमें' कहना। ये प्रयोग अशुद्ध हैं, फजूल और दरअसल शुद्ध हैं। 'खालिस' में 'नि' लगाकर 'निखालिस' बनाना भी अशुद्ध है। ये अशुद्ध प्रयोग बोलनेवाले की मूर्खता सिद्ध करते हैं।

३१२—संस्कृतके 'अति', 'अनु', ''अधि', 'अप', 'अभि', 'अव', 'आ', 'उत्', 'उप', 'दु', 'निः', 'परा', 'परि', 'प्र', 'प्रति', 'सम', 'अन्तः', 'पुनः', 'सत्', और 'स्व' उपसर्ग उसीके शब्दोंके साथ आते हैं। हिन्दीमें उपसर्गयुक्त शब्द ले लिये गये हैं, इसलिये यहां जानकारी भरके लिये उनका उल्लेख किया जाता है, जैसे, अति + अन्त = अत्यन्त अधि + कार = अधिकार, अनु + करण = अनुकरण, अभि + प्राय = अभिप्राय, अव + गत = अवगत, आ + जीवन = आजीवन, उत् + कर्ष = उत्कर्ष उप + देश = उपदेश, दुः + आचार = दुराचार, निः + अपराध = निरपराध, परा + जय = पराजय, परि+जन = परिजन, प्र + चार = प्रचार, प्रति + कूल = प्रतिकूल, सं+तोष = संतोष, अन्तः+करण = अन्तःकरण, पुनः + जन्म = पुनर्जन्म, स + जीव = सजीव, सह+उदर = सहोदर, सत्+पात्र = सत्पात्र, स्व + तन्त्र = स्वतन्त्र। निरापराध और अन्तष्करण अशुद्ध हैं।

अभ्यास

१—हिन्दीमे उपसर्ग कितने है और वे किन अर्थोमे आते है ?

२—बेवकूफ, बेइज्जत, दरमियान, दरअसलमे, बेफजूल शब्दोमे कौन शुद्ध है और कौन अशुद्ध और क्यो ?

३—निरापराध और अन्तष्करण शुद्ध है या अशुद्ध ?

अव्यय

३१३—अव्यय (indeclinable) वह शब्द है, जिसमें न तो कोई विकार होता है और न संज्ञाकी भांति लिंग वचन ही होते हैं। हिन्दीके अव्यय बहुधा पुंलिंग ही होते हैं, पर कुछ स्त्रीलिंग भी हैं। आवश्यक होनेपर इनमें विभक्तिचिह्न भी लगाये जाते हैं।

३१४—अव्यय चार प्रकारके होते हैं:—क्रियाविशेषण (adverb) (२) सम्बन्धबोधक (post-position), (३) समुच्चयबोधक (conjunction) और (४) विस्मयादिबोधक (interjection).

३१५—क्रियाके विशेषण रूपसे अथवा क्रियाकी विशेषता बतानेके लिये जिस अव्ययका प्रयोग किया जाता है, वह क्रियाविशेषण कहाता है; जैसे वह कल आवेगा, तुम कहां जाओगे? 'कल' और 'कहां' क्रियाविशेषण हैं।

३१६—जो अव्यय किसी संज्ञा वा सर्वनामका सम्बन्ध किसी दूसरे शब्दसे बताता है, वह सम्बन्धसूचक वा सम्बन्धबोधक अव्यय कहाता है; जैसे, घरके सामने चलो; मेरे मकानपर चील बैठी थी। पहले वाक्यमें 'पर' और 'चलो' का सम्बन्ध 'सामने' अव्ययसे और दूसरे वाक्यमें 'मकान' और 'चील' का सम्बध 'पर' अव्ययसे सूचित हुआ।

३१७—समुच्चयबोधक अव्यय एक शब्द वा वाक्यको दूसरे शब्द वा वाक्यसे मिलाता अथवा अलग रहता है; जैसे, और, इसलिये, अतः, क्योंकि, पर, परंतु, मगर, लेकिन इत्यादि।

३१८—विस्मयादिबोधक अव्ययका वाक्यसे सम्बन्ध नहीं होता और केवल हर्ष, शोक, आदि भाव सूचित करनेके लिये इसका प्रयोग होता है; जैसे, हे, हो, ओ, ए, ऐ, रे, अरे, हाय इत्यादि।

३१९—प्रयोगके अनुसार कई क्रियाविशेषण सम्बन्धसूचक और समुच्चयबोधक भी होते हैं।

(अ) क्रियाविशेषण

३२०—रूपके अनुसार क्रियाविशेषणके ये ११ भेद होते हैः--

(१) जो क्रियाविशेषण ही हैं; जैसे, दूर, अचानक, तुरन्त, फिर, नहीं इत्यादि।

(२) जो दूसरे शब्द विशेषतः विशेषण होते हैं पर क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होते हैं; जैसे, अच्छा, बुरा, भला आदि। इन वाक्योंमे (अ) वह अच्छा गाता है, (आ) तुमने बुरा किया, (इ) तुम भला क्यों बोलते ? अच्छा, बुरा और भला क्रियाविशेषण हैं।

(३) जो आकारान्त संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण अथवा कृदन्त विशेषण शब्दोंके सामान्य रूप होते है; जैसे, (संज्ञा) सबेरा-सबेरे, आगा-आगे, पीछा-पीछे, (विशेषण) भला-भले, थोड़ा-थोड़े; (संख्या-वाचक विशेषण) पहला पहले, (कृदन्त विशेषण) देखता देखते; सुनता सुनते; चाहा-चाहे, बैठा बैठे; (सर्वनाम) कैसा कैसे, जैसा जैसे।

(४) जो सर्वनामों से बनते हैं; जैसे, यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, इधर, उधर, तिधर, किधर, अब, जब, तब, कब।

(५) जो एक ही संज्ञा, विशेषण अथवा क्रियाविशेषण शब्दको दो बार कहनेसे वा प्रायः समानार्थक दो शब्दोंका प्रयोग करनेसे बनते हैं; जैसे (संज्ञा) घरघर, गलीगली; दरदर, मिनटमिनट, देशविदेश, घरबाहर, रातदिन, सांझसबेरे, हाथोंहाथ; (विशेषण) एकएक, एकाएक साफसाफ, ठीकठाक, ठीकठीक, (क्रियाविशेषण) धीरेधीरे, जहांजहां, जहांतहां, कबकब, जबतब, जबतक, चलतेचलते, बैठेबैठे, बैठेठाले, तले-ऊपर, ऊपरनीचे, आगेपीछे।

(६) जो ध्वनिवाचक शब्दोंकी पुनरुक्तिसे बनते हैं; जैसे, सटासट, गटागट, धड़ाधड, पड़ापड ।

(७) जो संज्ञा वा विशेषण शब्दोंमें 'को' 'से' वा 'में' विभक्ति चिह्न लगानेसे बनते हैं; जैसे, रातको, दिनमें, सहजमें, धीरेसे, जोरसे, पहलेसे ।

(८) संस्कृत शब्दोंमे तः प्रत्यय वा पूर्वक शब्द लगानेसे जो शब्द बनते हैं अथवा संस्कृतकी तृतीया वा पंचमी विभक्तिके एकवचनके रूप होते हैं; जैसे, अतः, साधारणतः, विशेषतः, सुखपूर्वक, सहसा, कृपया, (तृतीया) पश्चात, अकस्मात्, (पंचमी) ।

(९) पूर्वकालिक कृत् प्रत्यय, भाववाचक संज्ञा वा विशेषण लगाने से जो शब्द बनते है, जैसे, कृपाकर, मुख्य करके, बहुत करके ।

(१०) संज्ञा और विशेषण अथवा क्रिया और संज्ञाके मेलसे जो शब्द बनते हैं, जैसे, लगातार ।

(११) जो उपसर्ग तथा और दूसरे शब्दोंके मेलसे बनते हैं, जैसे प्रतिदिन, प्रत्यक्ष, बाकायदा, बेकायदा, निस्सन्देह, अनजाने, दिनभर राततक, मकानतलक, हरबार ।

२२१—अर्थके अनुसार क्रियाविशेषणके ये भेद होते हैं:—

(१) कालवाचक (adverb of time) तीन प्रकारके हैं, निश्चित कालवाचक (definite), अनिश्चित कालवाचक (indefinite) और पौनः पुन्यवाचक (re-iterative).

(अ) निश्चित कालवाचक—आज, कल, परसों, नरसों, अतरसों, अब, तब, जब, अभी, तभी, जभी, सबेरे, तुरत, तुरन्त, निदान, तड़के, दोपहरको, सन्ध्याको, सांझको, शामको, सुबह, तत्क्षण, तत्काल, हमेशा, संवत्, सन्, मिती, तारीख ।

(आ) अनिश्चित कालवाचक—आजकल, नित्य, सदा, सर्वदा निरन्तर, अबतक, कभी कभी, कभी न कभी, दिनभर, कबतक, कबका।

(इ) पौनःपुन्य कालवाचक—बारबार (बारम्बार), दिनदिन, दिनोंदिन, लगातार, बहुधा, प्रायः, अक्सर, रोज रोज, हर रोज, घंटे घंटे, घड़ी घड़ी, कई बार, फिर, पुनः, पुनरपि, एक, दूसरे, तीसरे इत्यादि।

(२) प्रकारवाचक (adverb of manner) :—अचानक, अचानचक, अकस्मात्, सहसा, फौरन्, झट, झटपट, ठीकठाक, थोड़े, धीरे धीरे, शीघ्र, पैदल, खुदबखुद, सत्य, सचमुच, अत्यन्त, झूठ, झूठ-मूठ, एकाएक, निरन्तर, केवल, लगातार, परस्पर, यथा, तथा, वृथा, अन्यथा, सहज, निरर्थक, अधिक, व्यर्थ, अर्थात्, यानी, इति, आदि, इत्यादि, सेंतमेत, बहुत, निश्चय, यों, ज्यों, त्यों, क्यों, ऐसे, वैसे, जैसे, तैसे, कैसे, जरूर, वगैरह, मसलन्, साक्षात्, यों ही, ज्यों ही, त्यों ही, जैसे तैसे, ज्यों त्यों, स्वयं, आपही आप, एक साथ, मनसे, ध्यानपूर्वक, साधारणतः, जानो, मानो।

(३) निषेधार्थक (adverb of negation) :—नहीं, न, मत।

(४) स्वीकृतिबोधक (adverb of affirmation) :—हां, जी, जी हां, ठीक, सच, सत्य, सही।

(५) निश्चयार्थक (adverb expressing definiteness) :—अवश्य, सही, (निस्सन्देह, बेशक, बिलाशक, अलबत्ता, जरूर, जरूर जरूर, मुख्य करके, मुख्यतः, ही, भी।

(६) आवश्यकतार्थक (adverb expressing duty) चाहिये।

(७) अनिश्चयार्थक (adverb expressing indefiniteness):—शायद, कदाचित्, सम्भवतः, यथासम्भव, यथाशीघ्र।

(८) स्थानवाचक (adverb of place) :—यहां, वहां, जहां

तहां, कहां, यहीं, वहीं, जहीं, तहीं, कहीं, अत्र, तत्र, सर्वत्र, एकत्र, आगे, पीछे, नीचे, ऊपर, सामने, निकट, दूर, पास, परे, इस जगह, पार, आरपार, भीतर, बाहर।

(९) दिशावाचक (adverb of quarters) :—इधर, उधर, जिधर, तिधर, किधर, इस ओर या उस ओर या तरफ।

(१०) परिमाणबोधक (adverb of quantity):—बहुतायतसे, निरा, निपट, खूब, अति, अत्यन्त, पूर्णतया, कुछ, थोड़ा, जरा, तनिक, किंचित्, केवल, बस, काफी, यथेष्ट, पर्याप्त, ठीक, अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, बढकर, क्रम, क्रमसे, एक एक करके, बारी बारीसे इत्यादि।

(११) अवतारणबोधक—(adverb denoting ascertainment) :—तो, ही, भी, मात्र, भर, तक, पर्यन्त, तलक।

(१२) अवतारणबोधक वा समाप्तिबोधक (adverb denoting introduotion or conclusion)—अथ, इति।

(आ) सम्बन्धसूचक अव्यय

३२२—सम्बन्धसूचक अव्यय तीन प्रकारके होते हैं—(१) जो क्रियाविशेषण होते हैं और सम्बन्धसूचककी भांति प्रयुक्त होते हैं; जैसे, पहाडकी तरफ, सडकके बीचोबीच, (२) जो संज्ञा, क्रिया वा विशेषणके सामान्य रूपमें रहते हैं और जिनका विभक्तिचिह्न 'मे' या 'से' लुप्त रहता है; जैसे, आगे, पीछे, सामने, और (३) जो शुद्ध सम्बन्धसूचक हैं, जैसे, नाईं, बिना, संग, समेत, साथ, समान।

३२३—नीचे लिखे सम्बन्धसूचक अव्ययोंके पहले 'का' वा 'रा' प्रत्यययुक्त पद सामान्य रूपमें आते हैं अर्थात् इनके पहले 'के' वा 'रे'

प्रत्यययुक्त पद रहते हैं; जैसे, आगे, पीछे, सामने, नीचे, ऊपर, तले, पार, पास, बिना, बीच, संग, आसपास, द्वारा, निकट, पलटे, बदले, मारे, लिये, हां (स्थानमें), समान, अनन्तर, अनुसार, पश्चात्, उपरान्त, कारण, विपरीत, विरुद्ध, समीप, हेतु, अन्दर, नजदीक, बगैर, खिलाफ, बाइस, बाद, माफिक, सबब, वास्ते, सिवा, निमित्त।

३२४—नीचे लिखे सम्बन्धसूचक अव्ययोंके पहले 'की' वा 'री' वा 'नी' युक्त पद रहते हैं :—खातिर, तरफ, तरह, निस्बत, बाबत, नाईं, अपेक्षा, मार्फत, जगह।

३२५—नीचे लिखे सम्बन्धसूचक अव्ययोंके पहले 'के', 'ने' या 'रे' कभी लुप्त भी रहते हैं। पद केवल सामान्य रूपमें आते हैं :—

समेत, सहित, पर, तक, पर्यन्त, तले, पीछे, आगे, लायक, बिना और योग्य।

३२६—नीचे लिखे सम्बन्धसूचक अव्ययोंके पहले विकल्पसे 'के' वा 'से' युक्तपद आते हैं :—पहले (सबसे वा सबके पहले), बाहर (घरके वा घरसे बाहर), आगे (मुझसे वा मेरे आगे), परे (आलोचनासे परे वा आलोचनाके परे)।

३२७—रहितके पहले 'से' युक्त पद ही आता है; जैसे, धनसे रहित।

३२८—मारे, बिना और सिवा कभी कभी संज्ञाके पहले भी आते हैं; जैसे, मारे दुखके, बिना धनके, सिवा कष्टके।

३२९—बिना, पीछे, बाद और अनुसार सम्बन्धवाले शब्दके पीछे भी रहते हैं; जैसे तुम्हारा ऋण चुकाये बिना न मरूँगा, चिराग जले पीछे (बाद) आया, तुम्हारे कहे अनुसार।

(इ) समुच्चयबोधक अव्यय

३३०—समुच्चयबोधक अव्यय (conjunction) आठ प्रकार का होता है :—

(१) संयोजक वा उभयान्वयी (copulative), जो एक शब्द वा वाक्यको दूसरे शब्द वा वाक्यसे जोड़ता है; जैसे, और, तथा, एवं, व।

(२) वियोजक या विभाजक (disjunctive), जो एक शब्द वा वाक्यको दूसरे शब्द वा वाक्यसे अलग करता है; जैसे, वा, या, अथवा, किंवा, कि, नकि, नहीं तो, चाहे, क्या…क्या। उदा० तुम वा वह अथवा कोई और चाहे इस देशका हो चाहे विदेशी हो। तुम जाओगे कि नहीं? तुम्हारे लिये उपदेश था, न कि उसके लिये; तुम सम्हल गये, नहीं तो बुरे फंसते; चाहे जाओ वा (चाहे, अथवा, कि वा) न जाओ; क्या स्त्री क्या पुरुष।

(३) विरोधदर्शक वा पक्षान्तरबोधक (adversative), जो दूसरे पक्षकी बात अथवा पहले कहेके विरुद्ध कहता है; जैसे, पर (पै), परन्तु, किन्तु, वरं (वरन्), बल्कि, प्रत्युत, लेकिन, मगर।

(४) परिणामदर्शक (final) जो परिणाम बताता है; जैसे, इसलिये, इससे, सो, अतः, अतएव।

(५) कारणवाचक (causal) जो कारण दिखाता है; जैसे, क्योंकि कारण, इसलिये, कि, चूंकि।

(६) उद्देश्यवाचक वा कर्मप्रदर्शक (objective), जो पहले वाक्यका उद्देश्य बतानेके लिये दूसरे वाक्यके पहले आता है; जैसे, कि।

(७) संकेतवाचक (conditional) जो जोड़ेके साथ आता है; जैसे, यदि, जो, तो, तब, जो, भी, यद्यपि,—तोभी, तथापि; अगरचे, ताहम। यद्यपि मैं निर्धन हूं, तथापि मेरा मन धनवान् है।

(८) स्वरूपवाचक (explicative) जो शब्दों वा वाक्योंके बीचमें इसलिये आता है कि पहलेका स्वरूप दूसरेसे प्रकट कर दे; जैसे, अर्थात्, यानी, जानो, मानो ।

(ई) विस्मयादिबोधक अव्यय

३३१—विस्मयादिबोधक अव्यय (interjection) हर्ष, विस्मय, शोक, क्रोध, तिरस्कार, आदि भाव प्रकट करनेके कारण १० प्रकारका होता है ।

(१) हर्षबोधक—वाह! वाहवाह! शाबाश! धन्य! धन्य! साधु! साधु! जय! जय! अहाहा!

(२) शोकबोधक—हा! हाय! हाहा! रामराम! बाप रे! दैया रे! हाय बाप! ऊह्! ऊफ्! त्राहि! अफसोस!

(३) आश्चर्यबोधक—वाह! हैं! ऐं! ओहो! वाहवाह! क्या! क्या खूब!

(४) अनुमोदनबोधक—ठीक! अच्छा!

(५) तिरस्कारबोधक—छिः! दूर! थूथू! धिक्कार! धत्! हुश्! फिश्!

(६) स्वीकारबोधक—जी! जी हाँ! हाँ! अच्छा! ठीक! बहुत अच्छा!

(७) सम्बोधनद्योतक—ए! ऐ! हे! हो! अहो! ओ! अजी! (छोटों के लिये) रे! अरे! अबे! अरी! री!

(८) अभिवादनमें - प्रणाम, नमस्कार, सलाम, बन्दगी, जय-श्रीकृष्ण, रामराम, जयगोपाल, जुहार, नमस्ते इत्यादि ।

(९) आशीर्वादमें—आशीष! चिरंजीव! जीते रहो! खुश रहो! सलामत रहो!

(१०) प्रार्थनामे दुहाई अव्यय आता है।

अभ्यास

१—अव्यय किसे कहते हैं और वह कै प्रकारका होता है ?

२—रूप और अर्थके अनुसार क्रियाविशेषणके कितने भेद होते हैं ? ब्योरे समेत बताओ।

३—सम्बन्धसूचक अव्यय कौन कहाता है ? इसके प्रयोगोंमे क्या विशेषता होती है ?

४—समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अव्ययोंमे महत्वका अन्तर क्या है ?

५—दोनोंके भेद उदाहरण समेत बताओ।

६—चार ऐसे शब्दोंके उदाहरण दो जिनका प्रयोग क्रियाविशेषणकी भांति हो सकता हो।

७—'न-न', 'न', 'नहीं तो' के विविध प्रयोग और अर्थ बताओ।

तद्धित

२३२—संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दोंमें प्रत्ययोंके लगनेसे जो कर्तृवाचक, गुणवाचक, स्थानवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ और विशेषण तथा क्रियाविशेषण बनते हैं, वे तद्धित कहाते हैं।

कर्तृवाचक

२३३—वाल, वाला, हार, हारा, वाली, री, आरी, इया, ई, ऐत, एरा, एड़ी और डी कर्तृवाचक प्रत्यय है।

(अ) 'वाल' प्रत्यय निवासी, पंडा और सन्तान अर्थोंमे आता है; जैसे, (निवासी अर्थमे) बाकली + वाल = बाकलीवाल, पाली + वाल =

पालीवाल, खंडेल + वाल = खंडेलवाल, (पंडा अर्थमें) गया + वाल = गयावाल, प्रयाग + वाल = प्रयागवाल; (सतान अर्थमें) अग्र + वाल = अग्रवाल ।

(आ) 'वाला' निवासी और व्यापार तथा 'हारा' और 'हार' प्रत्यय व्यापारी और वाहक अर्थ देते हैं; जैसे (निवासी) नीमच + वाला = नीमचवाला, आगर + वाला = आगरवाला, (व्यापारी) टोपी + वाला = टोपीवाला, गोटा + वाला = गोटेवाला, मनि + हार = मनिहार, लकड़ी + हारा = लकड़िहारा, (वाहक) पानी + हारा = पनिहारा । 'वाली' भी निवासी अर्थ देता है; जैसे, देश + वाली = देशवाली ।*

(इ) 'री' और 'आरी' प्रत्यय व्यसनी और व्यापारी अर्थोंमें आते हैं; जैसे, जुआ + री = जुआरी (व्यसनी), भीख + आरी = भिखारी, पूजा + री = पुजारी (व्यापारी) ।

(ई) 'इया' प्रत्यय व्यापारी अर्थ बताता है; जैसे, (व्यापारी) माखन + इया = मखनिया, नोना + इया = नोनिया, आढ़त + इया = अढ़तिया । आढ़त शब्दमें 'ई' प्रत्यय लगाकर इसी अर्थमें 'आढ़ती' शब्द भी आता है ।

(उ) 'ई' प्रत्यय संज्ञा शब्दोंमें लगनेसे व्यापारी, अनुयायी, व्यसनी और निवासी अर्थ बताता है; जैसे (व्यापारी) तेल + ई = तेली, हलवा + ई = हलवाई; (अनुयायी) रामानन्द + ई = रामानन्दी; (निवासी) पहाड़ + ई = पहाड़ी, बंगाल + ई = बंगाली, पंजाब + ई = पंजाबी । (व्यसनी) शराब + ई = शराबी ।

---

* वास्तवमें शुद्ध शब्द देशवाल ही है, पर अज्ञानके कारण बंगाली, पंजाबी आदिके अनुकरणपर इसमें 'ई' बढ़ानेसे देशवाली शब्द बन गया है । इसका अर्थ है मध्य देशका ।

(ऊ) 'ऐत' प्रत्यय जिस शब्दमें लगता है, उसे अपने उस अंग वा अस्त्रका कर्त्ता बताता है; जैसे, गोड़+ऐत=गोड़ैत वा गुड़ैत (जो गोड़से व्यापार करे अर्थात् प्यादा), लाठी+ऐत=लठैत, डाका+ऐत=डकैत।

(ऋ) 'अवर' प्रत्यय दूसरा अर्थमें आता है; जैसे, देस+अवर=देसावर या दिसावर अर्थात् दूसरा देश। इसीमें सम्बन्धसूचक 'ई' प्रत्यय लगाकर देसावरी वा दिसावारी शब्द बनाया जाता है, जिसका अर्थ होता है, दूसरे देशका। गांववाले इसे दिसौरी कहते है।

(ए) 'एरा' भी व्यापारद्योतक प्रत्यय है; जैसे, साँप+एरा=सँपेरा, काँसा+एरा=कँसेरा।

३३४—'बान' फारसी प्रत्यय है और रक्षक वा चालक अर्थमें आता है; जैसे, (रक्षक) बाग+बान=बागबान, दर+बान=दरबान, (चालक) फील+बान=फीलबान। यह हिन्दी शब्दोंमें भी लगता है; जैसे, गाड़ी+बान=गाड़ीवान, बहल+बान=बहलबान।

३३५—फारसीका 'ची' प्रत्यय व्यसन, व्यापार और उत्तरदायित्व बताता है; जैसे, (व्यसनी) अफीम+ची=अफीमची, मशाल+ची=मशालची, तबला+ची=तबलची, (उत्तरदायित्व) खजाना+ची=खजानची। हिन्दी शब्दोंके योगमें यह सम्बन्ध वा स्थान बताता है; जैसे, घड़ों+ची=घड़ोंची, दुम+ची=दुमची। यह तुच्छताद्योतक भी है; जैसे मिडिलची अर्थात् मिडिलतक ही पढ़ा हुआ।

३३६—'दार' फारसी प्रत्यय है और इसके योगसे संज्ञा और विशेषण बनते हैं; जैसे, जमीन+दार=जमीनदार, ताल्लुका+दार=ताल्लुकेदार, किराया+दार=कियरायेदार, (विशेषण) हवा+दार=हवादार, दिल+दार=दिलदार, जोर+दार=जोरदार।

३३७—'एड़ी' व्यसनी अर्थमें विशेषण बनाता है; जैसे, गाँजा+एड़ी=गँजेड़ी, भांग+एड़ी=भंगेड़ी।

ऊनवाचक

३३८—'ड़ा' और 'ड़ी' प्रत्यय छुटाई बताते हैं; जैसे, पलंग+ड़ी=पलंगड़ी, मुख+ड़ा=मुखड़ा, दुख+ड़ा=दुखड़ा, जोगी+ड़ा=जोगिड़ा।

३३९—'री' भी ऊनवाचक प्रत्यय है; जैसे, छाता+री=छतरी, कोठा+री=कोठरी। कोठड़ी भी कहते हैं। कोठारी शब्दमें ई प्रत्यय है जो कोठरी से भिन्न है।

३४०—'इया' प्रत्यय भी न्यूनता प्रकट करता है; जैसे, खाट+इया=खटिया, लोटा+इया=लुटिया, डिब्बा+इया=डिबिया।

३४१—'चा' लघुता और स्थानवाचक फारसी प्रत्यय है; जैसे, (लघुता) सन्दूक+चा=सन्दूकचा; (स्थान) कदम+चा=कदमचा।

स्थानवाचक

३४२—आना, वाना, वाड़ा, वारा, आल, साल, हाल और का स्थानवाचक प्रत्यय है; जैसे, राजपूत+आना=राजपुताना, तेलंग+आना=तेलगाना, गोंड+वाना=गोंडवाना, भील+वाड़ा=भीलवाड़ा, बैस+वाड़ा=बैसवाड़ा, गाडर+वारा=गाडरवारा, ससुर+आल=ससुराल, घोड़ा+साल=घोड़साल वा घुड़साल, नाना+साल=ननसाल, वा ननहाल* दादी+हाल=ददिहाल, (दादीका मैका), पी+हर=पीहर, (पितृगृह), माय+का=मायका वा मैका।

विशेषण

३४३—का, ना, रा, आया और आर सम्बन्धद्योतक प्रत्यय हैं और

* 'स' के बदले 'ह' हो जाता है। +अब यह संज्ञा माना जाता है।

विशेषण बनाते हैं; जैसे, लाड़+का=लड़का, + आप+ना=अपना, मामा+रा=ममेरा, पर+आया=पराया, सोना+आर=सोनार वा सुनार, लोहा+आर=लोहार वा लुहार, कुम्भ+आर=कुम्भार वा कुम्हार, चांद+ना=चाँदना (प्रकाश) । चाँदनी इसीका स्त्रीलिंग है और जुन्हाईको कहते हैं । बिछानेकी बड़ी सफ़ेद चादर भी चाँदनी कहाती है । उस समय यह शब्द गुणवाचक संज्ञा होता है ।

३४४—'स' समान और परिमाण अर्थमें आता है; जैसे, लड़का+सा=लड़केसा (लड़के सरीखा), बहुत+सा=बहुत+सा=बहुतसा (बहुतके समान) ।

३४५—'ई' और 'ईला' प्रत्यय संज्ञा शब्दोंमें जुड़नेसे विशेषण बनाते हैं; जैसे, हठ+ई=हठी, हठ+ईला=हठीला, लाज+ईला=लजीला, रस+ईला=रसीला, खार+ई=खारी, भार+ई=भारी ।

३४६—'तना' प्रत्यय संख्या और परिमाण बताता है; जैसे, कि+तना=कितना, जि+तना=जितना, इ+तना=इतना, उ+तना=उतना । ये सार्वनामिक विशेषण हैं, क्योंकि कौन, जो, यह और वह सर्वनामोंसे बने हैं ।

३४७—'ऐ' संख्या निर्देशक प्रत्यय भी सर्वनामसे विशेषण बनाता है; जैसे, क+ऐ=कै, ज+ऐ=जै ।

३४८—'ना' और 'गुना' गुण-अर्थद्योतक प्रत्यय हैं; जैसे, दो+ना=दूना, दो+गुना=दुगुना, तीन+गुना=तिगुना, चार+गुना=चौगुना ।

३४९—'हरा' तह वा तरह अर्थमें आता है; जैसे, दो+हरा=दुहरा, तीन+हरा=तिहरा, चार (चौ)+हरा=चौहरा ।

३५०—'सरा' 'था' 'वाँ' और 'ठा' क्रमवाचक प्रत्यय हैं, जैसे,

दो+सरा = दूसरा, तीन+सरा = तीसरा, चार (चौ)+था = चौथा, पांच+वां = पाँचवाँ, छ+ठा = छठा ।

३५१—सार्वनामिक विशेषणोंमें 'तना' तथा संख्याओंमें 'गुना' प्रत्यय सर्वनामों और तीन और चार संख्याओंके पहले ही अक्षरमें जोडते हैं।

३५२—'आ' और 'ऊ' प्रत्यय संज्ञाओंमें लगानेसे विशेषण बनाते हैं, जैसे, भूख+आ = भूखा, प्यास+सा = प्यासा, मैल+आ = मैला, ढाल+ऊ = ढालू, पेट+ऊ = पेटू, पेट भरनेवाला, गर्ज+उ=गर्जू (गरजवाला) ।

गुणवाचक और भाववाचक

३५३—'आई', 'आपा', 'आस', 'औती', 'ताई', 'पन' और 'पना' भाववाचक प्रत्यय हैं; जैसे, (विशेषण) बुरा+आई = बुराई, सुन्दर+आपा = सुन्दरापा, मीठा + आस = मिठास, बूढा+आपा = बुढापा; (संज्ञासे) लड़का+आई = लडकाई, बाप+औती = बपौती, बूढा+औती = बुढौती, मनोहर+ताई = मनोहरताई, बच्चा+पन = बचपन, गुंडा+पना=गुंडपना ।

३५४—'आई' गुणवाचक भी है; जैसे, मीठा+आई = मिठाई ।

३५५—संस्कृतके 'ता' और 'त्व' प्रत्यय भी हिन्दीमें आते हैं; जैसे, कायर+ता = कायरता, मनुष्य+त्व = मनुष्यत्व ।

३५६—'औना' गुणवाचक प्रत्यय लगनेसे संज्ञा बनती हैं; जैसे, खेल+औना = खिलौना, दीठ+औना = दिठौना ।

३५७—'आवल' गुणवाचक स्त्रीलिंग प्रत्यय है और रक्षकका भाव व्यक्त करता है; जैसे, जाड़ा+आवल = जड़ावल, घाम+आवल = घमावल ।

३५८—'आँद' और 'आइँद' प्रत्यय शब्दोंमें लगनेसे भाववाचक संज्ञा बनती है, जिसका अर्थ गन्ध होता है; जैसे, बिस+आँद=बिसाँद, बिस+आइँद, बिसाइँद, सड+आँद=सडाँद, सड + आइँद = सडाइँद ।

३५९—'इख' गुणवाचक और 'औंस' भाववाचक प्रत्यय विशेषणमें लगते हैं; जैसे, काल +इख=कालिख, काल +औंस=कलौंस ।

३६०—'गी' फारसीका भाववाचक प्रत्यय है; जैसे, मर्दाना+गी= मर्दानगी, जिन्दा + गी=जिन्दगी ।

३६१—'आ', 'वा' और 'इया' प्यार, हीनता वा लघुता दिखाने तथा 'आ' और 'इया' भाव दिखानेके लिये भी जोड़े जाते हैं; जैसे, (प्यारमें) बाबू+आ=बबुआ, भाई+आ=भइया, (लघुता वा हीनता अर्थमें) नाऊ+आ=नौआ, नरायन+आ=नरैना, चमार+वा=चमरवा, धोबी + इया=धोबिया ।

३६२—'आ' गुणवाचक भी होता है; जैसे, गोल+आ=गोला, (गरीका गोला) । 'इया' प्रत्यय भाववाचक संज्ञामें लगनेसे विशेषण बनता है; जैसे, दुख + इया=दुखिया, सुख+इया=सुखिया ।

३६३—'वाड़' सादृश्यवाचक प्रत्यय है; जैसे, खेल+वाड़=खिलवाड़ ।

३६४—'क' और 'त' भाववाचक तथा गुणवाचक प्रत्यय हैं; जैसे, ठंढा+क=ठंढक, रंग+त=रंगत, चौ+क=चौक ।

क्रियाविशेषण

३६५—सर्वनामोंके चिह्नोंमें 'हाँ' और 'आँ' प्रत्यय लगनेसे स्थान-वाचक क्रियाविशेषण बनते हैं; जैसे, क+हाँ=कहाँ, ज+हाँ=जहाँ, यह+ आँ=यहाँ, वह+आँ=वहाँ ।

३६६—इसी प्रकार 'ओं' प्रत्यय लगानेसे प्रकारार्थक क्रियाविशेषण बनते जैसे, कि+ओं=क्यों, जि+यों=ज्यों, इ + यों=यों, ति+ओं=त्यों ।

३६७—सर्वनाम चिह्नोंमें 'ब' प्रत्यय लगानेसे समयवाचक क्रिया-विशेषण बनते हैं; जैसे, ज+ब=जब, क+ब=कब।

अभ्यास

१—तद्धितकी परिभाषा बताओ।

२—तद्धित प्रत्ययोसे कैसे कैसे शब्द बनते हे ?

३—ऊनवाचक शब्द किन किन प्रत्ययोसे बनते है, उदाहरण पूर्वक बताओ।

४—'वाला' प्रत्यय कर्तृवाचक पुलिग शब्द और 'वाली' कर्तृवाचक स्त्रीलिग शब्द बनाता है, पर क्या 'वाली' प्रत्ययसे पुलिग शब्द भी बनता है ? यदि बनता है तो उदाहरण दो।

५—जो कृत् प्रत्यय है, वे ही तद्धित प्रत्यय हे अथवा इनमे कुछ विशेषता है ? यदि हो तो बताओ।

६—विशेषण शब्दोसे और सज्ञा शब्दोसे विशेषण किन किन प्रत्ययो से बनते हे ?

समास

३६८—दो वा अधिक शब्दोंको मिलाकर एक करनेके लिये जब उनके बीचके प्रत्ययोंका लोप कर दिया जाता है, तब उस नये शब्दको सामासिक शब्द वा समस्तपद (compound word) कहते हैं और उन सबको मिलाकर छोटा कर देनेकी पद्धति समास (compound) कहाती है।

३६९—समासके ६ भेद है :—(१) द्वन्द्व (copulative), (२) तत्पुरुष (determinative), (३) अव्ययीभाव (indecli-

nable), (४) बहुब्रीहि (relative), (५) कर्मधारय (appositional) और (६) द्विगु (numeral).

३७०—जब दो वा अधिक संज्ञा शब्दोंके बीचके उभयान्वयी अव्यय 'और' का लोप कर दिया जाता है और सब मिलाकर एक शब्द बना दिये जाते हैं, तब उसे द्वन्द्व समास कहते हैं; जैसे राजा और रानी = राजारानी, राम, लक्ष्मण और सीता = रामलक्ष्मणसीता; माँ और बाप = माँबाप; राई और नोन = राईनोन रोटी और दाल = रोटीदाल; सेठ और साहूकार = सेठसाहूकार, बाल और बच्चे = बालबच्चे।

३७१—कभी कभी दो विपरीतार्थक शब्दोंमें भी द्वन्द्व समास होता है; जैसे; चर और अचर = चराचर; पाप और पुण्य = पापपुण्य; धर्म और अधर्म=धर्माधर्म, घटना और बढ़ना=घटाबढ़ी।

३७२—पुनरुक्त वा वैसे अर्थवाले शब्दोंमें भी द्वन्द्व समास होता है; जैसे लाठालाठी वा लट्ठमलट्ठ; कहना और सुनना = कहासुनी; मारना और पीटना = मारपीट, धक्का और धक्का = धक्कमधक्का, धक्का और मुक्का = धक्कामुक्की, जूती और पैजार = जूतीपैजार, आस और पास = आसपास, भला और चंगा = भलाचंगा।

३७३—द्वन्द्व समाससे बने समस्त पद बहुधा पुंलिंग बहुवचन होते हैं, जैसे, मातापिता आये, स्त्रीपुरुष चले गये, मर्दऔरत आ उपस्थित थे, भाईबहन बहुत खुश थे। पर ईकारान्त पद स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे, घटाबढ़ी, कहासुनी, लेनदेन, आवाजाई।

३७४—तत्पुरुष समासमें दूसरे भागकी प्रधानता रहती है और पहले भागमें दूसरी, तीसरी, चौथी वा पाँचवीं विभक्ति अथवा सम्बन्ध जतानेवाले प्रत्यय रहते हैं, जिनका लोप कर दिया जाता है।

३७५—पर्यायानुसार तत्पुरुष समास ६ प्रकारका है:—

(क) पहले भागमें दूसरी विभक्ति और दूसरेमें कृदन्त रहता है; जैसे, कठफोड़ा, अर्थात् काठको फोड़नेवाला, चिड़ीमार = चिड़ियोंको मारनेवाला, तिलचट्टा = तेलको चाटनेवाला। संस्कृत शब्द—मनोहर= मनको हरनेवाला, भूधर = भूको धारण करनेवाला, सुखदायक = सुख देनेवाला।

(ख) पहले भागमें निमित्त अर्थमें दूसरी विभक्ति और दूसरेमें कृदन्त रहता है; जैसे, 'ठकुरसुहाती'—ठाकुर वा मालिकको सुहाती वा सुहानेवाली। संस्कृत—शरणागत=शरणके लिये आया।

(ग) पहले भागमें तीसरी विभक्ति और दूसरेमें 'कृत' कृदन्त हो, जैसे, तुलसीकृत = तुलसीने की वा किया, मनुकृत = मनुने किया। कृत है तो संस्कृतका कृदन्त, पर ऐसे स्थलोंमें हिन्दीमें प्रयुक्त होता है।

(घ) जिसके पहले भागमें चौथी विभक्ति और दूसरेमें कृदन्त हो; जैसे, दईसे मारा हुआ=दईमारा, गुडसे भरा हुआ = गुडभरा, मनसे माना हुआ = मनमाना, आँखोंसे देखा हुआ=आँखोंदेखा।

(च) जिसके पहले भागमें संज्ञा वा विशेषण हो और दूसरेमें कोई अन्य शब्द; जैसे दीनाका नाथ=दीनानाथ, पानीकी चक्की = पनचक्की, बनका मानुस=बनमानुस, आमका चूर=अमचूर।

(छ) जिसके पहले भागमे पाँचवीं विभक्ति वा 'पर' अव्यय रहता है; जैसे, आनन्दमग्न=आनन्दमें मग्न, घुडचढी=घोडेपर चढी।

३७६—जिस समस्त पदका पहला भाग अव्यय होता है, वह अव्ययीभाव समास कहाता है; जैसे, प्रतिदिन (दिनदिन), अतिकाल, अनजान, निडर, अनगिनत, तथोक्त, हरघडी। भर और मात्र पहले और पोछे भी आते हैं; जैसे, घरभर, भररात, एक रुपया मात्र, मात्र एक रुपया।

३७७—जिस समस्त पदमें विशेष्य विशेषण अथवा विशेषण-

विशेषणका योग होता है, वह कर्मधारय कहाता है; जैसे, नीलकमल, कालीमिट्टी, भलामानस, (विशेषणविशेषण) लालपीला, भलाबुरा, छोटा-बड़ा, गरीबअमीर ।

३७८—जिस समस्त पदमें शब्दोंके अन्तर्गत शब्दोंका अर्थ न होकर निराला वा योगरूढ अर्थ होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे, चौमुख=चार मुँह हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा; कनफटा=कान फटे हैं जिसके अर्थात् साधुओंका भेदविशेष; अंगरखा=अंगकी रक्षा हो जिससे वा जो अंगकी रक्षा करे अर्थात् वस्त्रविशेष; मोहनभोग=मोहनका भोग है जो अर्थात हलवा; तिकोना=तीन कोना=तीन कोनेवाला व्यंजन विशेष । संस्कृत—दिगम्बर, पीताम्बर; दशानन, षडानन, चतुरानन आदि इसके उदाहरण हैं ।

३७९—निराला अर्थ न होकर शब्दोंसे ही जो अर्थ होता है, उसमें भी बहुव्रीहि समास ही होता है; जैसे, नकटा=नाक कटी है जिसकी या कटायी है जिसने; पिकबैनी=पिकके से बैन बोलती है जो स्त्री; चम्पकबरनी=चम्पेका सा रंग है जिस स्त्रीका; घुड़चढी = घोडेपर चढी हुई ।

३८०—जिस समस्त पदमें पहला भाग संख्यावाचक शब्द और दूसरा संज्ञा होता है, वह द्विगु समास कहाता है; जैसे, तिलोचन, तिलोक चौकोन आदि ।

अभ्यास

१—समास किसे कहते है ?

२—वह कै प्रकारका होता है, उदाहरण सहित बताओ ।

३—चम्पकबरनी, पिकबैनी और घुडचढीमे कौन समास है ?

४—तुलसीकृतमे कौन समास है और क्यो ?

५—अव्ययीभाव और द्विगुमे क्या अन्तर है ?

६—क्या कर्मधारय और बहुव्रीहिमे कोई अतर नही है ? कारण सहित उत्तर दो ।

तीसरा भाग

वाक्यरचना-विचार

३८१—वाक्यरचनापर विचार करनेकी दो पद्धतियां हैं, एक विश्लेषणात्मक पद्धति (analytical method) और दूसरी संश्लेषणात्मक पद्धति (synthetical method) कहाती है। विश्लेषणात्मक पद्धतिसे वाक्यके प्रत्येक अंगके अर्थों वा प्रयोगोंपर विचार किया जाता है और संश्लेषणात्मक पद्धतिसे वाक्यके सब अंगोंके गठनपर विचार होता है।

१. विभक्ति-प्रत्ययोंके अर्थ और प्रयोग

पहली विभक्ति

३८२—पहली विभक्ति होती है

(१) शब्द मात्रमें; जैसे, राम, कलकत्ता, गंगा, हिमालय, वह, तुम, क्या, कोई।

(२) क्रियाके कर्त्तामें, जिसके अनुकूल वह लिंगवचनमें होती है; जैसे; श्रीरामलक्ष्मण जनकपुर पहुँचे; मैं आया।

(३) कर्तृवाच्यके पशुपक्षिवाचक वा अप्राणिवाचक कर्ममें; जैसे, तू मेरा कुत्ता ले आ; वह टोकरी मैं लाता हूँ।

(४) कर्ममें; जैसे, तुमने आम खाये।

(५) द्विकर्मक वाक्यके दूसरे कर्म और सम्प्रदान कारकवाले वाक्यके कर्ममें; जैसे, मैंने उसे आदमी समझा; गरीबको पैसे दो।

(६) लाना, भूलना, बोलना और बकना क्रियाओंके भूतकालके

कर्त्तामें भी; जैसे, तुम कहाँसे रेडियो लाये? मैं राह भूला; वह बात बोला; गुंडे गालियाँ बके।

दूसरी विभक्ति 'को'

३८३—दूसरी विभक्ति होती है

(१) मनुष्यवाचक कर्ममें; जैसे, गाय लड़कोंको नहीं मारती।

(२) जब जोर दिया जाता है, तब अप्राणिवाचक कर्ममें भी; जैसे, तरबूजको उठा लाओ।

(४) किसीको धिक्कारने या कुछ कहनेमें; जैसे, नीचोंको धिक्कार! भरतने कैकेयीको अप्रिय वचन कहे।

(५) समयवाचक शब्दके साथ क्रियाका सम्बन्ध बतानेमें; जैसे, दिनको सोना मना है; कातिककी अमावसको दिवाली होती है।

(६) उन व्यक्तियोंके वाचक शब्दोंमें जिनकी रुचि किसी वस्तुके लिये होती है या प्रसन्नताके लिये कोई काम किया जाता है, जैसे, ब्राह्मणोंको मिठाई अच्छी लगती है; लड़कोंको तमाशा दिखा लाओ।

(७) उन व्यक्तियोंके वाचक शब्दोंमें भी, जिन्हें किसी प्रयोजनसे कोई वस्तु दी जाती है, परन्तु दे नहीं डाली जाती; जैसे, सुनारको सोना दे दो, धोबीको कपड़े क्यों नहीं देते?

(८) 'चाहिये' वाले अथवा निश्चय, आवश्यकता वा कर्त्तव्य बतानेवाले वाक्यके कर्त्तामें; जैसे, तुम्हें घर जाना चाहिये; रामको बन जाना था, उसको राज्य करना न होगा।

(९) प्रणाम, नमस्कार, आशीर्वाद (आसीस), बन्दगी, सलाम, आदाब, नमस्ते, वन्देमातरम् जैसे शब्दोंके योगमें; जैसे, बड़ोंको प्रणाम, बराबरवालोंको नमस्कार, छोटोंको आशीर्वाद, शीजीको बन्दगी, मास्टर

साहबको सलाम, मौलवी साहबको आदाब, महाशयजीको नमस्ते, नेताजीको बन्देमातरम्।

(१०) द्विकर्मक वाक्यके मनुष्यवाचक कर्ममें; जैसे, पूतना कृष्णको दूध पिलाने लगी।

(११) धातुज संज्ञाके निमित्तार्थ वा लगना क्रियाके योगमें लुप्त अवस्थामें; जैसे, लड़के पढ़ने जाते हैं; श्रीशुकदेवजी कथा सुनाने लगे।

(१२) स्थान और दिशावाचक क्रियाविशेषणके साथ भी लुप्त अवस्थामें; जैसे, कहाँ जाते हो? किधर आ निकले?

(१३) 'ओर' वा 'प्रति' अर्थ बतानेमें भी लुप्त अवस्थामें ही; जैसे, घर चलोगे? नहीं, पटने जाऊँगा।

(१४) निमित्त अर्थमें; जैसे, मुझे आम ला दो।

(१५) तात्कालिक अवस्थामें 'वाला' अर्थमें भी; जैसे, मैं जानेको हूँ; वह आनेको था।

(१६) दाम बताने वा पूछनेके समय; जैसे, यह मोटर कितनेको (या कितनेमें) खरीदी?

(१७) योग्य, उचित, भला वा अच्छा और कठिन जैसे कई शब्दोंके योगमें; जैसे, तुम्हें वहां जाना योग्य वा उचित है; स्वामी बिना स्त्रीको मरना ही भला; मनुष्यको ईश्वरज्ञान प्राप्त करना कठिन है।

(१८) कहना क्रियाके साथ; जैसे, वसुदेवको समाचार कहे। इससे कभी कभी आज्ञाका भाव भी प्रकट होता है; जैसे नौकरको कह दो कि ठीक समयपर आया करे।

तीसरी विभक्ति 'ने'

२८४—तीसरी विभक्ति होती है

(१) कर्मवाच्यके कर्तामें, जिसमें कर्मके लिंगवचनके अनुसार क्रियाके

लिंगवचन होते हैं; जैसे, उसने मिठाइयाँ खायीं; तुमने भात खाया।

(२) भाववाच्यके कर्त्तामें; जिसके कर्ममें दूसरी विभक्ति होती है और जिसकी क्रिया सदा पुंलिंग एकवचनमें रहती है; जैसे, मैंने किताब-को उठाया।

(३) 'बोल' धातुसे बने 'बोल' वा 'बोली' कर्मयुक्त कर्मवाच्यके कर्त्तामें; जैसे, उसने चार ही बोल बोले।

(४) 'लड' और 'खेल' धातुओंसे बने 'लड़ाई' वा 'खेल' कर्म युक्त कर्मवाच्यके कर्त्तामें; जैसे, नेपोलियनने लड़ाइयाँ लड़ीं; मैंने कई खेल खेले।

(५) समझना और मानना क्रियाओंके कर्मवाच्यमें; जैसे, उसने कुछ नहीं समझा; तुमने मेरी बात नहीं मानी।

चौथी विभक्ति 'से'

३८।—चौथी विभक्ति होती है

(१) करण और अपादान कारकोंमें; जैसे (करण कारक) आँखसे देखा; वाणसे मारा; (अपादान कारक) पेड़से पत्ते गिरे; जमीनसे सोना निकला।

(२) क्या, हीन, कम, न्यून, प्रयोजन (काम), शून्य, रहित, भिन्न आदि के योगमें; जैसे विवादसे क्या? नेत्रोंसे हीन; मुझसे कम वा न्यून; कामसे काम: मनुष्यत्वसे शून्य, विद्यासे रहित; वानरसे भिन्न।

(३) साथ, हेतु, कारण, द्वारा, अपेक्षा, वजह, वास्ते, मारे, सामने, जरिये, बनिस्बत, सामने और आगे अर्थोंमें; जैसे, (साथ) हबशियोंसे बातचीत मत करो; (हेतु, कारण, वजह, जरिया द्वारा) जिससे तुम समझ सको; (अपेक्षा, बनिस्बत) मुझसे अच्छा नहीं है; (आगे, सामने) मुझसे वह क्या बोलेगा?

(४) स्थान वा समयकी दूरता बतानेमें; जैसे, राजगृहसे दो सौ योजन; आजसे चार वर्ष पहले।

(५) दो मनुष्य वा वस्तुओंकी तुलना करते समय, जिससे कोई मनुष्य वा वस्तु उत्कृष्ट बतायी जाय, उसमें; जैसे, धनसे बुद्धि उत्कृष्ट है; भिखारी तिनकेसे भी हलका होता है।

(६) जिस चिह्नसे व्यक्ति या वस्तु पहचानी जाती है, उसमें जैसे, जटाओंसे साधू समझा; प्रहरियोंसे राजमहल जाना।

(७) जिस अंगमें कोई दोष होता है, उसमें; जैसे, आँखोंसे अन्धा; पैरोंसे लंगड़ा।

पाँचवीं विभक्ति "में"

३८६—पाँचवीं विभक्ति होती है

(१) अधिकरण कारकमें; जैसे, घड़ेमें पानी भरा है; शेर जंगलमें रहता है।

(२) कारण, अवस्था, द्वारा, अन्तर्गत, अन्तर्हित, मध्य (बीच), भीतर (अन्दर) अवधि और मूल्य अर्थोंमें; जैसे, (कारण) तनिकसे अपराधमें; (अवस्था) शिवके ध्यानमें मग्न; (द्वारा) एकही बाणमें काम तमाम कर दिया; (अन्तर्गत) समुद्रमें अथाह जल; (अन्तर्हित) तिलोंमें तेल; लकडीमें आग; (मध्य) हंसोंमें कौआ; (भीतर) किलेमें कोई न था, (अवधि) रामचन्द्र १४ वर्षमें लौटे, (मूल्य) कितने में तुमने गाय ली?

(३) तीन वा अधिक मनुष्योंमें किसी एकको श्रेष्ठता या हीनता बतानी होती है, तो जिससे वह श्रेष्ठ या हीन बतायी जाती है, उसके वाचक शब्दमें; जैसे, पुरुषोंमें रामचन्द्र श्रेष्ठ थे; नीच सबमें निन्दनीय होता है।

(४) लुप्त अवस्थामें विशेषकर सम्बन्धसूचक अव्ययके योगमें; जैसे, इस समय जाओ; आँखोंदेखा खुसरो कहे; चार आने सेर; बड़ोंके सामने बकवाद न करो।

सम्बोधन

३८७—बुलानेके समय सम्बोधनके पहले विस्मयादिबोधक अव्यय लगाना न लगाना वक्ता वा लेखकी इच्छाके आधीन है, जैसे, नौकर! इधर आ। अथवा मेरे नौकर! इधर आ।

३८८—'आ' प्रत्यय भी सम्बोधनका चिह्न है, पर वह 'भाई' 'गाई' और 'माई' शब्दोंमें ही जुड़ता है और उन्हें 'भैया', 'गैया' और 'मैया' बनाता है। परन्तु अब इन शब्दोंका प्रयोग सम्बोधनमें नहीं प्यारमें किया जाता है।

३८९—आकारान्त 'बेटा' और 'बच्चा' शब्दोंके सम्बोधनके एकवचनमें बेटा, बेटे और बच्चा, बच्चे दो दो रूप होते हैं। पहले रूपोंके साथ मध्यम पुरुषके बहुवचनकी और दूसरे रूपोंके साथ एकवचनकी क्रिया प्रयुक्त होती है; जैसे, बेटा, मेरा कहना मानो; बच्चा, तुम कुलके दीपक बनो, बेटे, मेरी बात सुन, बच्चे ऊधम मत कर।

सम्बन्धवाचक प्रत्यय

३९०—हिन्दीमें सम्बन्धकी विभक्तिका कोई चिह्न नहीं है, इसलिये उसका काम तद्धित प्रत्ययोंसे लिया जाता है। ये प्रत्यय 'का', 'रा', 'ना' और 'या' हैं। जिस शब्दमें ये जुड़ते हैं, उसका व्यवहार विशेषणकी भाँति होता है। परन्तु विशेषणके सिवा वह (१) सम्बन्ध, (२) स्थान, (३) निर्माणमें लगी वस्तु, (४) शुद्धता, (५) कारण, (६) वयस वा उम्र, (७) प्रकार, (८) निकास, (९) योग्यता, (१०) दाम, (११) समय, (१२) सम्पूर्णता, (१३) निश्चय तथा (१४) दृढ़ता बताता है;

जैसे, (सम्बन्ध) स्कूलका लडका, (स्थान) मथुराके चौबे, (निर्माणमें लगी वस्तु) सोनेकी जञ्जीर, (शुद्धता) दूधका दूध और पानीका पानी, (कारण) राहका थका माँदा, (वयस्) जब कृष्ण आठ वर्षके हुए; (प्रकार) आश्चर्यकी बात, (निकास) आगका धुआँ, (योग्यता) पीनेका पानी; (दाम) दस लाखका हीरा, (समय) दस दिनकी बात, (सम्पूर्णता) सभाकी सभा; घरका घर; (निश्चय वा दृढता) मीठेका मीठा अर्थात् अत्यन्त मीठा।

२९१—भविष्यकालके अर्थमें भी 'नहीं' अव्ययके साथ सम्बन्ध प्रत्ययका प्रयोग होता है; जैसे, यह होनेका नहीं, मैं जानेका नहीं।

२९२—कहीं कहीं सम्बन्धवाचक विशेषण ईकारान्त रहता है; जैसे, वह मेरी एक नहीं सुनता; औरोंकी कौन कहे ? यहां 'बात' शब्द जिसका वह विशेषण है अनुक्त रहता है।

२९३—इसी प्रकार भूतकालिक कृदन्तके सामान्य रूप और साधारण क्रियाके सामान्य रूपमें सम्बन्ध प्रत्यय जोडते हैं और उनके कर्मका काम लेते हैं; जैसे, आप उसके कहेका (कहनेका) विचार न करें।

२९४—कभी कभी सम्बन्धवाचक 'वाला' प्रत्ययके बदले भी 'का' प्रत्यय आता है और उस समय उसमें आकारान्त पुंलिंग शब्दोंकी भांति विकार भी होता है; जैसे, घर+वाला=घरका। तुम्हारे घरकोंका (घरवालोंका) क्या हाल है ? 'घरकोंका' पदका प्रयोग बोलचालमें ही सुना जाता है, लेखादिमें नहीं होता।

२९५—सम्बन्धवाचक प्रत्ययोंसे युक्त पदोंके बाद यदि सविभक्तिक (विभक्तियुक्त) पद आते हैं, तो विशेषणके नियमके अनुसार 'का', 'रा' और 'या' प्रत्ययोंके सामान्य रूप हो जाते हैं, जैसे, मेरे घरको दरवाजा; उसके मकानकी चौखट, अपने भाईके घरकी दीवार, पराये मकानका फाटक।

३९६—सम्बन्धसूचक पुंलिंग अव्ययोंके पहले सम्बन्धवाचक प्रत्यय सदा सामान्य रूपमें रहता है, क्योंकि अव्यय वास्तवमें संज्ञा शब्द हैं और सामान्य रूपमें प्रयुक्त होते हैं; जैसे रामके बागके पीछे; मेरे घरके सामने; कोठेके ऊपर।

३९७—सम्बधसूचक प्रत्ययोंका एक विशेष प्रयोग है, जो अस्तित्व बताता है। इसमें बादका पद पुंलिंग वा सम्बन्धसूचक अव्यय नहीं होता, बल्कि सम्बन्ध प्रत्यय सदा पुंलिंग सामान्य रूपमें अर्थात् एकारान्त रहता है; जैसे, उसके लड़का नहीं है अर्थात् वह अपुत्रक है। 'उसका लड़का नहीं है' अर्थात् लड़का किसी औरका है, उसका नहीं है। दोनो प्रयोगों और उनके अर्थोंपर विशेष ध्यान देना चाहिये।

३९८—कहीं कहींके लोग 'उसके लड़का नहीं है' के बदले 'उसको लड़का नहीं है' बोलते हैं। यह अशुद्ध है।

३९९—मिती लिखने वा बोलनेमें सम्बन्धसूचक प्रत्यय लुप्त रहते हैं; जैसे, भादों बदी अष्टमी, चैत सुदी नवमी।

४००—कभी कभी वाक्य वा वाक्यांशके साथ भी सम्बन्धसूचक प्रत्यय लगाया जाता है; जैसे, 'दौडो पकड़ो' का शब्द 'चोर चोर' की आवाज।

अभ्यास

१—वाक्यरचनापर किन पद्धतियोसे बिचार किया जाता है, ब्योरेवार बताओ।

२—दूसरी विभक्तिका प्रयोग किन अर्थोमे और कहा कहा होता है?

३—तीसरी विभक्तिके प्रयोग उदाहरण सहित बताओ।

४—कुछ ऐसे उदाहरण दो जिनमे दूसरी विभक्ति या चौथी बिभक्ति अथवा दूसरी विभक्ति या पाचवी विभक्तिका अपनी इच्छाके अनुसार प्रयोग किया जा सकता है।

५—ऐसे उदाहरण दो जहा ऐसे प्रयोगोके अर्थोमे अन्तर पड जाता है।

६—बेटा और बच्चा शब्दोके सम्बोधनके एकवचनमे जो दो रूप होते है, उनके अर्थो मे क्या अन्तर पडता है ?

७—सम्बन्धसूचक प्रत्यय किन किन अर्थोमे आता है ?

८—'मेरा लडका नही है' और 'मेरे लडका नही है' वाक्योके अर्थो मे क्या अन्तर है ?

९—'तुम्हारे कै लडके है और 'तुमको कै लडके है' वाक्योमे कौन शुद्ध है और कौन अशुद्ध और क्यो ?

---

२. क्रिया और क्रियापदोंके प्रयोग और अर्थ

साधारण क्रिया (Infinitive verb)

४०१—साधारण क्रियाका प्रयोग जब संज्ञा (verbal noun) रूपसे होता है, तब वह इन अर्थोंमें आती है: (१) वाक्यका उद्देश्य वा कर्त्ता (subject or nominative) (२) भविष्यकथन (future-telling) और (३) वाक्यका विधेय (predicate or object) जैसे (१) रातको जंगलमें रहना ठीक नहीं; (२) तुम्हारी बातका सुफल ही क्या होना है ? (३) मनुष्य जीवनका उद्देश्य मौज करना ही नहीं है; तुम हरिनाम जपना छोड दो।

४०२—आज्ञा (imperative mood) और विधि (potential mood) में भी साधारण क्रियाका प्रयोग होता है; जैसे, यह पत्री रावणको देना; तुम पुत्रेष्टि करना।

४०३—कृदन्तके सामान्य रूपमे उसका प्रयोग कभी विभक्तिचिह्न के साथ और कभी बिना विभक्तिचिह्नके होता है। जब विभक्तिचिह्नके साथ होता है, तब कार्य शीघ्र होनेका भी पता लगता है; जैसे, मैं जाने को ही हूँ।

४०४—कृदन्तके सामान्य रूपमें विभक्तिके बदले कभी 'का' तथा 'वाला' सदृश सम्बन्धसूचक प्रत्यय लगाये जाते हैं और कभी 'पर' अव्यय जोडा जाता है; जैसे, मैं तुम्हारी एक भी सुननेवाला वा सुनने का नहीं; वह जानेपर है।

४०५—कृदन्तके सामान्य रूपमें 'योग्य' और 'लायक' शब्द रूपी अव्यय भी जोडे जाते हैं; जैसे, कहने योग्य बात नही है; तुमने मारने लायक काम तो किया ही है।

४०६—कृदन्तके सामान्य रूपमे जब विभक्ति चिह्न नहीं लगता, तब उसका प्रयोग निमित्त अर्थमे होता है; जैसे मैं कुछ कहने आया था।

विधि (potential mood)

४०७—विधि क्रियापदका प्रयोग विधि, निषेध, सम्भावना, विचार वा अभिप्राय, इच्छा तथा चिन्ता प्रकट करने, आशीर्वाद, उपदेश, शाप तथा गाली देने, प्रश्न करने, आज्ञा मांगने, उपमा देने तथा भूत, भविष्य और वर्तमान काल बतानेमे होता है; जैसे (विधि) सदा सच बोलो; (निषेध) वैर मत मोल लो, (सम्भावना) उसका काम चाहे बन जाय; (विचार) हारें तो गुलाम बनकर रहें; (इच्छा) परमेश्वर झूठ न बुलावे, (चिन्ता) क्या करें या क्या न करें; (आशीर्वाद) तुम्हारा कल्याण हो; (उपदेश) परोपकार किया करो; (शाप) तुम राक्षस हो जाओ; (आज्ञा मांगनेमे) आप कहे तो जाऊँ; मुझे जाने दो; (प्रश्न करनेमे) यह काम कैसे करूँ ? (उपमामें) श्रीरामका क्रोध ऐसा बढा, जैसे पूर्णमासीका समुद्र, (भूत) चोर इतना पीटा जाय, फिर भी न कबूले, (भविष्य) जब तुम्हारे लड़का हो, तब उसे ले आना, (वर्त्तमान) राह राह झगड़ालू आवें, पैरत आवें साखी।

आज्ञा (imperative mood)

४०८—आज्ञा देनेमें आज्ञाके रूपोंका व्यवहार होता है, जैसे, तुम जाओ; वह जाय।

४०९—निषेधार्थक आज्ञा देनेमें क्रियापदोंके साथ 'न' और 'मत' अव्यय आते हैं, जैसे तुम मत जाओ; वह न जाय।

भविष्यकाल (future tense)

४१०—किसी घटनाका निश्चय वा उसकी सत्यताकी सम्भावना होने, आशीर्वाद देने अथवा भविष्य कहनेमें भविष्यकालिक क्रियापदका प्रयोग किया जाता है, जैसे, मैं कल चलूंगा; वह भी आ रहेगा; तुम्हारे बालबच्चे सुखी रहेंगे; इस वर्ष पृथ्वी धनधान्यसे पूर्ण हो जायगी,

४११—अनिश्चय वा सम्भावनामें भी भविष्यकालिक क्रियापदका प्रयोग होता है, जैसे किसीके पूछनेपर कि 'क्या उज्जियिनी दो हजार वर्षका पुराना नगर है?' उत्तर देनेवाला ठीक ठीक न जाननेपर कह देता है, 'होगा'।

४१२—आशीर्वाद या शाप देनेमें भी भविष्यकालिक क्रियापद आता है; जैसे, तुम सुखी रहोगे; तुम्हे नरक यातना भोगनी पड़ेगी।

हेतुहेतुमद्‌भूत (past indefinite imperfect)

४१३—हेतुहेतुमद्भूतका प्रयोग सामान्य वर्त्तमान, अपूर्ण भूत और हेतुहेतुमद्भूतके सिवा इच्छा वा शक्ति बतानेके लिये भी होता है; जैसे, (वर्त्तमान) तुमसे तनिकसा काम नहीं होता; (अ० भू०) ज्यों ही अवसर पाते, पण्डित गोविन्दनारायण मिश्र खरी खरी मुंहपर सुना देते; (हेतु०) तुम सावधान रहते तो कैसे लुटते? (इच्छा) मेरे पिता आज होते, (शक्ति) यदि आज मुझे आज्ञा मिली होती।

सामान्य वर्त्तमान (present indefinite)

४१४—सामान्य वर्त्तमानका प्रयोग भूत, भविष्य और सामान्य तथा तात्कालिक वर्त्तमानकाल प्रकट करनेके सिवा नियम वा अभ्यास स्वभाव, चिर सत्य घटना बताने, आश्चर्य प्रकट करने तथा उपमा देनेमें किया जाता है, जैसे, (भविष्य) वह कल जाता है, (भूत) तू कैसे कहता है ? (वर्त्त०) मैं खाता हूं, (नियम वा अभ्यास) मैं सवेरे टहलता हूँ, (स्वभाव) कटुवचन सुनकर वह चुप रह जाता है; (चिर सत्य घटना) सूरज सदा पूरबमें उगता है; (आश्चर्य) गुहामें प्रवेश करनेपर ब्राह्मण देखता क्या है कि चतुर्भुज विष्णु सिंहासनपर विराजमान हैं; (उपमा) वह ऐसे गिरा, जैसे अंधडसे ताड़ गिरता है।

तात्कालिक वर्त्तमान (present continuous)

४१५—तात्कालिक वर्त्तमानका प्रयोग भी भूत, भविष्य और साधारण वर्त्तमानकाल बतानेके सिवा नियम वा अभ्यास जतानेके काममें भी आता है, जैसे, वह साल भरसे आ रहा है; मैं कल जा रहा हूँ; तू आज जा रहा है ?

सामान्य भूत (past indefinite)

४१६—सामान्य भूतका प्रयोग सामान्य भूत और सामान्य वर्त्तमान दोनोंके लिये होता है, जैसे, (सा० भू०) कृष्णजन्मका समाचार कंसने नहीं पाया, (सा० व०) मनुष्य शरीर पाकर जिसने परोपकार नहीं किया, उसने वृथा ही जन्म लिया।

पूर्ण वर्त्तमान (present perfect)

४१७—पूर्ण वर्त्तमानका प्रयोग सामान्य वर्त्तमान और सामान्य भूतके लिये भी होता है; जैसे, (सा० व०) ब्राह्मण तुम्हारे द्वारपर आये हैं; (सा० भू०) राजा बलि और कर्ण बड़े दानी हुए हैं।

अभ्यास

१—साधारण क्रिया और विधि क्रियापदके प्रयोग और अर्थ बताओ ?

२ – हेतुहेतुमद्भूतके और अन्य भूतोंके प्रयोग और अर्थोमे क्या अन्तर है ?

३—वर्त्तमानसे वर्त्तमानहीका अर्थ निकलता है या, कुछ और भी ? और अर्थ भी होते हो तो बताओ।

---

३. कई शब्दों और पदोंके प्रयोग

आप

४१८—'आप' सर्वनामका प्रयोग मध्यम, उत्तम तथा अन्य तीनो पुरुषोंके लिये होता है और सबके लिये क्रिया अन्य पुरुष बहुवचनमें ही रखी जाती है। 'आप' आता है

(अ) मध्यम पुरुषके प्रति आदर दिखानेमे, जैसे, आप हमारे हितैषी हैं। कभी कभी मध्यम पुरुषकी क्रियाका भी प्रयोग होता है, पर वह शिष्ट नहीं माना जाता, जैसे, आप मेरी बातोंपर ध्यान दिया करो।

(आ) उत्तम पुरुषके लिये, उस समय जब संकोच वा शिष्टाचार-वश मनुष्य अपनी वस्तु वा सन्तानको प्रश्नकर्त्ताकी बताता है; जैसे, यह लड़का किसका है ? यह मकान आपका है ?' जैसे प्रश्नोंके उत्तरमे कहा जाता है 'आपहीका है।'

(इ) अन्य पुरुषके लिये, जब तीन चार आदमियोंसे बातचीतके समय एककी ओर संकेत कर औरोंसे कहते हैं, जैसे, आपके विषयमें क्या तय हुआ ?

४१९—'आप' स्वयं वा बिना सहायक अर्थमें भी आता है; जैसे, मैं आप चला जाऊँगा।

४२०—'आपही आप' बिना सहायताके सिवा, स्वेच्छासे, मनही मन वा स्वगत अर्थोंमे भी आता है; जैसे, वह आपही आप बोल उठा; तू आप ही आप कहता है या किसीके सिखानेसे, राजा आपही आप सोच रहा था।

४२१—'आपही' का प्रयोग भी बिना सहायता वा स्वतः अर्थमें होता है; जैसे, मैं आपही कहता हूँ।

४२२—'आपसे' और 'आपसे आप' भी 'आपही आप' अर्थमें आते हैं, जैसे, वह आपसे वहाँ चला गया; आपसे आप उसके मनमें आया।

अपना और पराया

४२३—'अपना' और 'पराया' तथा इनके सामान्य रूप 'अपने' और 'पराये' तथा स्त्रीलिंग 'अपनी' और परायी' विशेषण और सर्वनाम दोनो रूपोंसे आते हैं; जैसे, (विशेषण) अपना काम महाकाम, पराया काम कौन करे? अपने देशकी बात करो, पराये देशकी क्यों कहते हो? अपनी बड़ाई और परायी बुराई करनेवाले बहुत होते हैं; (सर्वनाम) अपनोंको शत्रु बनाना बड़ी मूर्खता है; पराया क्या कभी अपना हो सकता है?

४२४—'अपना' वा उसका सामान्य रूप कभी कभी लुप्त रहा है; जैसे, बेटेने (अपने) बापसे बिनती की; (अपने) बड़ोंका कहना छोटों-को मानना चाहिये।

४२५—कहीं कहींके लोग 'अपना' वा 'अपना अपना' पदोंके बदले अज्ञानके कारण 'मेरा' वा 'हमारा' अथवा 'आप आपका' बोलते हैं;

जैसे, मैं मेरा काम करता हूँ; आप आपका काम करो। ये अशुद्ध हैं। होना चाहिये 'मैं अपना काम करता हूँ'; 'आप अपना काम करो या करें।'

४२६—'अपना अपना' प्रयोग के बदले भूलकर कुछ लोग 'आप आपका' बोलते हैं; जैसे, आप लोग आप आपका काम करो। यह अशुद्ध है। होना चाहिये 'आप लोग अपना अपना काम करो या करें।'

४२७—'अपने' और 'अपने राम' पदोंका प्रयोग उत्तमपुरुषके बहुवचनके लिये होता है; जैसे अपने तो यह कहते हैं; अपने रामका यही विचार है।

यह और वह

४२८—'यह' और 'वह' निश्चयवाचक सर्वनाम हैं और पहला निकटता तथा दूसरा दूरता बताता है; जैसे, शिव और विष्णु दोनो बडे देवता हैं, वे कैलाशपर रहते हैं और ये बैकुंठमें।

४२९—'यह' इति अर्थमें असमापिका या पूर्वकालिक क्रियाके पहले आता है; जैसे, यह सुन परशुराम क्रोधमें भर आये।

४३०—'वह' और उसके रूप अन्य पुरुषके लिए भी आते हैं जैसे, वे रूप निधान थे।

४३१—'यह' और 'वह' विशेषणकी भांति भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे यह पाप उसके सिर चढेगा; वह मनुष्य पशु है जिसमें मनुष्यत्व नहीं।

४३२—'यह' शब्दकी चौथी विभक्तिका प्रयोग, कारण वा हेतु बतानेके लिये किया जाता है; जैसे, इससे मेरी बात मानो।

जो और सो

४३३—'जो' और 'सो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं, जो जोड़के

समझे जाते हैं और बहुधा प्रयुक्त भी वैसे ही होते हैं; जैसे, जो कहते हो, सो करते नहीं।

४३४—वाक्यमें कभी 'जो' और कभी 'सो' अनुक्त रहता है। जब 'जो' उक्त रहता है, तब 'सो' अनुक्त रह सकता है और जब 'जो' अनुक्त रहता है, तब 'सो' उक्त रह सकता है। दोनो उक्त रह सकते हैं, पर बहुधा दोनो अनुक्त नही रहते; जैसे, जो कहते हो, करते नहीं; तुम्हें भावे, सो करो।

४३५—बहुधा 'सो' के बदले 'वह' आता है; जैसे, मर्द जो कहते हैं, वही करते हैं।

४३६—'सो' समुच्चयबोधक अव्ययकी भांति 'अतः' वा 'इसलिये' या 'पस' अर्थमें भी आता है; जैसे, सो यह श्रीमान्‌के दर्शनोंका प्यासा है।

४३७—'जो' विशेषणवत् भी प्रयुक्त होता है; जैसे, जो मनुष्य हरिका सुमिरन करता है, वह बड़भागी है।

४३८—'जो' के बाद 'कोई' रहनेसे 'चाहे जो' अर्थ देता है; जैसे, जो कोई चाहे, लाभ उठा ले।

कौन और क्या

४३९—'कौन' और 'क्या' दोनो प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं, जिनमें 'कौन' तो सजीव और निर्जीव दोनोंके लिये आता है, पर 'क्या' निर्जीव के लिये ही प्रयुक्त होता है; जैसे कौन है? अर्थात् कौन मनुष्य है? क्या है? अर्थात् क्या विषय वा वस्तु है?

४४०—'कौन' दूसरे ढंगसे भी प्रश्न करने अर्थात् अनधिकार जतानेमें आता है; जैसे, तुम बोलनेवाले कौन हो? मैं इस झगड़ेमें बीच-बचाव करनेवाला कौन हूँ?

४४१——'कौन कौन' वा 'कौन लोग' आदमियोंकी हैसियत या अवस्था जाननेके लिये प्रश्नरूपमें प्रयुक्त होते हैं; जैसे, कौन कौन आये हैं ? कौन लोग जा रहे हैं ?

४४२——'कौन' में सादृश्यवाचक 'सा' प्रत्यय लगा देनेसे 'कौनसा' पद बनता है और पहचानके लिए विशेषण रूपसे आता है। परवर्त्ती शब्दके अनुसार 'सा', 'से' या 'सी' कर दिया जाता है; जैसे मैंने कौन-सा पाप किया है, जो दरिद्रता भोगता हूँ ? यह कौनसी बड़ी बात है ? आप कौनसे कुलके दीपक हैं ?

४४३——'क्या' सर्वनामकी साधना नहीं होती और इसी रूपमें वह कर्त्ता और कर्म दोनो प्रकारसे प्रयोगमें आता है; जैसे, क्या है ? तुम क्या कहते हो ?

४४४——'क्याके' पीछे 'ही' अव्यय लगाकर आश्चर्य वा अत्यन्तता प्रकट करनेके लिये 'क्या ही' विशेषण रूपसे व्यवहारमें आता है; जैसे, क्या ही सुन्दर दृश्य है !

४४५——'क्या' आश्चर्य प्रकट करनेके लिये भी प्रयुक्त होता है; जैसे, घरमें घुसा तो देखता क्या है !

४४६——'क्या' प्रश्न करनेमें भी आता है; जैसे, वह क्या लाये हो।

४४७——'क्या·········क्या' उभयान्वी समुच्चयबोधक अव्ययकी भांति आते हैं; जैसे, क्या स्त्री क्या पुरुष सभी रामकी छबि देखकर मोहित हो जाते थे।

कोई और कुछ

४४८——'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयबोधक सर्वनाम हैं। 'कोई' शब्दकी साधना होती है, पर 'कुछ' की नहीं होती। 'कोई' सजीव और

निर्जीव दोनोंके लिये आता है, पर 'कुछ' शब्दका प्रयोग साधारणतः निर्जीवके लिये ही होता हैं; कोई आता है; कुछ खा लो।

४४९—'कोई' अज्ञात मनुष्यके लिये भी आया है; जैसे, कोई रामदास है अर्थात् उसका नाम तो रामदास है, पर वक्ता उसे जानता नहीं।

४५०—'कोई' संख्यावाचक शब्दके पहले आनेसे 'लगभग' अर्थ देता है; जैसे, कोई सौ आदमी वहां होंगे।

४५१—'कोई' जब विशेषण रूपसे आता है, तब सजीव और निर्जीव दोनोंके लिये प्रयुक्त होता है; जैसे, कोई आदमी वहां न था; तुमने कोई बात कामकी नहीं कही।

४५२—*'कोई कोई' का प्रयोग बहुवचनमें ही होता है।* वह 'बिरला' अर्थ भी देता है; जैसे, कोई कोई कहते हैं। तुम्हारी कृपासे कोई कोई सुगति पाते हैं।

४५३—'कुछ' मनुष्योंके लिये भी आता है; जैसे, कुछ आते थे और कुछ जाते थे।

४५४—'कोई' और 'कुछ' दोनोंके बहुवचन रूपसे 'कुछ एक' का प्रयोग होता है जैसे, कुछ एक तो नगरके थे और कुछ एक बाहरके; कुछ एक दिन बीतनेपर वह आया।

४५५—'कुछ' के पहले बहुत' विशेषण लगानेसे 'बहुत अधिक' अर्थ देता है, जैसे, मुझे इस विषयमें बहुत कुछ कहना है।

ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा और कैसा

४५६—ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा और कैसा ये पांचो तथा इनके बहुवचन और स्त्रीलिंग रूप सादृश्यवाचक विशेषण हैं और विशेष्यके पहले आनेसे 'इस प्रकारका', 'उस प्रकारका', 'जिस प्रकारका', 'तिस

प्रकारका' और 'किस प्रकारका' अर्थ देते हैं; जैसे, ऐसा मनुष्य नहीं देखा, वैसा फल नहीं खाया; जैसा काम करते हो, वैसी मजूरी कहां पाते हो; कैसा माल चाहते हो?

४५७—यद्यपि 'तैसा' 'जैसा' शब्दके जोड़का है, तथापि आजकल उसका काम 'वैसा' शब्दसे लिया जाता है, जैसे, जैसी करनी, वैसी पार उतरनी।

४५८—कभी कभी उपमा सादृश्यवाचक विशेषणसे पहले रखी है; जैसे, वह किलेके ऐसा क्या दिखाई देता है, है तो वह मनुष्य, पर बन्दरके जैसा जान पड़ता है।

४५९—बहुधा सम्बन्ध प्रत्यय लुप्त रहता है; जैसे, किले ऐसा, बन्दर जैसा।

४६०—सादृश्य दिखानेके समय जैसा, ऐसा इत्यादिके बदले केवल सादृश्यवाचक प्रत्यय 'सा' कहनेसे भी काम चल जाता है और यह शिष्ट प्रयोग समझा भी जाता है; जैसे, किलेसा, बन्दरसा।

४६१—'ऐसा वैसा' और 'ऐसा तैसा' प्रयोग नीच, निर्लज्ज, नगण्य जैसे अर्थोंमें आते हैं और उस समय ये सर्वनाम होते हैं, जैसे, मैं ऐसा वैसा नहीं हूं; ऐसा तैसा हो, जो तुम्हारे यहां फिर आवे।

४६२—ऐसे, वैसे, जैसे, तैसे और कैसे क्रियाविशेषण रूपसे प्रकार वा अवस्था बतानेको आते हैं; जैसे, ऐसे क्यों बोलते हो? वैसे तो तुम हमारे सिर आंखोंपर हो; जैसे बताओ, तैसे (वैसे) करूँ, मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?

४६३—'कैसा' अवस्था वा स्वरूप जाननेके लिये प्रश्नमे आता है; जैसे, वह कैसा है? बीमारके विषयमें प्रश्न होगा, तो अर्थ होगा कि

रोगके आक्रमण वा निवारणसे उसकी अवस्था कैसी है। मनुष्यके शील स्वभावके विषयमे प्रश्नका अर्थ होगा कि वह दुष्ट है या शिष्ट।

४६४—'कैसा ही' या 'कैसा कोई' का प्रयोग 'चाहे जैसा' अर्थमें होता है, जैसे, वह कैसा ही क्यों न हो, मैं काम बना लूंगा, कैसा कोई बुद्धिमान क्यों न हो।

इतना, उतना आदि

४६५—इतना, उतना, जितना, तितना और कितना परिणामवाचक विशेषण हैं; जैसे, इतना गहरा पानी; उतना बड़ा मुंह; जितना सुन्दर रूप, तितना हो कठोर हृदय, कितना सरल स्वभाव। 'तितना' का प्रयोग आजकल बन्दसा हो गया है, उसके बदले 'उतना' लिखा और बोला जाता है।

४६६—'इतना उतना' नगण्य वा न कुछ अर्थमें आते हैं, जैसे, मैं इतने उतनेकी परवाह नही करता।

४६७—'इतना', 'उतना' और 'जितना' पांचवीं विभक्तिमें 'इस बीच', 'दाम' और 'पर्याप्ति' बतानेके काममें आते हैं; जैसे, इतनेमें चोर भाग गये; इतनेमें हम मोटर न बेचेंगे, जितनेमें काम बन जाय; उतने में माल महँगा नहीं है।

४६८—'दाम' और 'गहराई' पूछनेमें कितना और उत्तर देनेमें 'इतना' शब्दका प्रयोग किया जाता है; जैसे, वह घोडा कितनेका है? कुएँमें कितना पानी है?

इत्ता, उत्ता इत्यादि

४६९—'इत्ता', 'उत्ता', जित्ता', 'तित्ता' और 'कित्ता' इतना इत्यादि के बदले बोलचालमे आते हैं, परन्तु लेखमे इनका प्रयोग नहीं होता; जैसे, मछली मछली कित्ता पानी? इत्ता पानी।

एक

४७०—एक संख्यावाचक विशेषण आता है।

(अ) अनेक वा बहुका विपरीत अर्थ बतानेमें; जैसे, एक आदमी और एक बैल।

(आ) कोई अज्ञात अर्थमें; जैसे, एक गांव दिखाई दिया।

(इ) 'प्रथमतः' अर्थमें; जैसे, एक करेला, दूसरे नीम चढा।

(ई) समान वा एक ही अर्थमें; जैसे, चारो एक मां के बेटे थे।

४७१—'एक आध', 'अत्यल्प संख्या' अर्थमें आता है; जैसे, उस गांवमें एक आध ही भलामानस निकलेगा।

४७२—'एक तो' प्रथम कारण अर्थमें आता है; जैसे, एक तो रुलासी थी ही, उसपर आ गया भैया।

दसो, दसों, बीसो, बीसों आदि

४७३—दसो, बीसो और दसों बीसों सदृश पदोंके अर्थोंमें बहुत बारीक भेद है। दसो और बीसोके अर्थ है 'कुल एक दस' और 'कुल एक बीस'; परन्तु दसों और बीसोंके अर्थ हैं 'कई दस' और 'कई बीस'। ऐसा ही अन्तर 'सौओ' और 'सैकडों' में भी है तथा 'हजारो', 'हजारों' इत्यादिमें भी समझना चाहिए। यहाँ अनुस्वार दहाई और कोडीको बहुवचन बनाता है; जैसे, दसो दिशाएँ गूँज उठीं; दसों पाँतें लग गयीं; बीसो आदमी बैठ गये; बीसों पत्तलें पड़ गयीं; सौओ आदमी उठ खड़े हुए; सैकड़ों आदमी जमा हो गये।

अब

४७४—'अब' समयवाचक क्रियाविशेषण है, पर जब उसमें सम्बन्धवाचक 'का' प्रत्यय वा उसके रूप जुड़ते हैं, तब 'इस' वा 'इस बार' अर्थ होता है; जैसे, अबके चुप रहो; अबकी मेरी बात मानलो।

अभी, जभी, तभी और कभी

४७५—'अब', 'जब', 'तब' और 'कब' समयवाचक क्रियाविशेषणों-में निश्चयार्थक क्रियाविशेषण 'ही' जोडनेसे अभी, जभी, तभी, और कभी रूप बनते हैं, जिनका अर्थ क्रमश होता है 'ठीक अब' (just now), 'ठीक जब' (just when), 'ठीक तब' (just then) और 'ठीक कब' (just when). कुछ लोग बिना विचारे 'अभी' इत्यादिके बाद अवधारणबोधक क्रियाविशेषण 'भी' लगा देते हैं, जिससे उनकी समझ-से उसमें और जोर आ जाता है। पर वास्तवमे यह बात नहीं है और यह शिष्ट प्रयोग भी नहीं है।

जहाँ, कहाँ और तहाँ

४७६—'जहाँ' और 'कहाँ' स्थानवाचक क्रियाविशेषण हैं और 'जिस स्थानमे' और 'किस स्थानमे' अर्थ देते हैं; जैसे, जहाँ जाय भूखा, वहाँ पडे सूखा, वह कहाँ रहता है ?

४७७—'जहाँ' के बाद यदि 'तक हो सके' रहे तो 'यथासम्भव' वा 'यथाशक्ति' अर्थ होते है, जैसे, जहाँ तक हो सके, तुम जाओ।

४७८—'कहाँ' प्रश्नवाचक क्रियाविशेषणका प्रयोग 'नहीं' अर्थमें भी होता है, जैसे, यह घर कहाँ बडा है अर्थात् नहीं बडा है।

४७९—'कहाँ' के बाद 'तक' रहनेसे 'कितनी देर तक' अर्थ होता है जैसे, उनकी बडाई कोई कहाँतक करे अर्थात कितनी देर तक करे, क्योंकि वह समाप्त नहीं होती।

४८०—दो वस्तुओं वा मनुष्योंमें बडा अन्तर दिखानेको दोनोंके पहले 'कहाँ' क्रियाविशेषण लिखते और बोलते हैं; जैसे, कहां राजा राव और कहाँ गाँगू तेली !

४८१—'जहाँ' के बाद 'तहाँ' रहनेसे 'सर्वत्र' और 'कहीं कहीं' अर्थ

होता है; जैसे, जहाँ तहाँ विचित्र दृश्य दिखते थे, इस पुस्तकमें जहाँ तहाँ भूलें हैं।

कहीं

४८२—'कहाँ' क्रियाविशेषण के पीछे निश्चयार्थक अव्यय 'ही' रहनेसे 'कहीं' बनता है और 'बहुत', कदाचित्' या शायद' अर्थ देता है, जैसे, यह मकान कहीं बडा है अर्थात् बहुत बडा है, कहीं कोई हमारी बातें सुन न ले।

जिधर, तिधर

४८३—'जिधर तिधर' 'जहाँ तहाँ' अर्थमें आते हैं; जैसे, जिधर तिधर लोग भागने लगे।

कि

४८४—'कि' क्रियाविशेषण और समुच्चयबोधक उभयान्वयी अव्यय, दोनों रूपोंसे आता है। क्रियाविशेषण होनेपर 'त्योंही', 'तभी' वा 'तुरन्त' अर्थ देता है, जैसे, वह घरसे निकला ही था कि मूसलाधार पानी बरसने लगा।

४८५—जब 'कि' उभयान्वयी अव्यय होता है, तब 'या', 'ताकि' अथवा 'जिससे' अर्थ बताता है और कर्मप्रदर्शक भी होता है, जैसे, तुम चलते हो कि मैं जाऊँ? मैं जाता हूँ कि वहाँकी दशा देख आऊँ। वह बोला कि घर खाली हो गया।

तो

४८६—'तो' समुच्चयबोधक-उभयान्वयी अव्यय 'जो' के जोडेके रूपमें आता है; जैसे, जो मुझे चाहते होते, तो क्यों मेरी बात न मानते? कभी कभी 'जब' के जोडेमें भी 'तो' आता है और 'तब' अर्थ देता है, जैसे, जब लड़का हो, तो यहाँ ले आना।

४८७—वाक्यमें जोर देने अथवा श्रोता का ध्यान आकर्षित करनेके लिये भी 'तो' लाया जाता है; जैसे, मेरी बात तो सुनो, हम तो तुम्हारा जयजयकार ही करते हैं।

और

४८८—'और' समुच्चयबोधक उभयान्वयी अव्यय दो शब्दों वा वाक्योंको जोडनेके लिये आता है; जैसे, राम और लक्ष्मण वनको गये; राम लक्ष्मण और सीता सहित वनमें रहे और भरत नन्दिग्राममें मुनिवेष में रहे।

४८९—'और' इन अर्थोंमें भी आता है—(१) अन्य, (२) अधिक, (३) अतिरिक्त और (४) भिन्न; जैसे, (१) मुझे और न तुझे ठौर, (२) एक और मुश्किल आ पड़ी; (३) गिलोय और नीम चढ़ी; (४) यह मामला ही और है।

४९०—'और तो और' तथा 'और तो क्या' 'और' 'औरोंकी चर्चा न करके' तथा 'औरकी कौन कहे' अर्थों मे आते हैं; जैसे, और तो और तुमसे भी बोलते न बना; और तो क्या वह बापकी भी परवा नहीं करता।

४९१—'और भी' 'अतिरिक्त' वा 'सिवा' अर्थमें भी आता है; जैसे, और भी, तुम यह यंत्र सम्हाल कर रखना।

पर और तक

४९२—'पर' और 'तक' सम्बन्धसूचक अव्यय शब्दके सामान्य रूपमें प्रत्ययकी भांति लगाये जाते है; जैसे मुझपर, उसतक।

४९३—'पर' अव्ययका प्रयोग इन अर्थोंमें भी होता है:—(१) ऊपर, (२) अनुसार, (३) प्राधान्य, (४) अन्तर, (५) अनन्तर, (६) संलग्न, (७) दाम और (८) वार्तालाप का प्रसंग, जैसे, (१)

मुझपर दया करो; (२) धर्मपर चलो, (३) दण्ड सबपर है; (४) मगधसे २०० योजनपर, (५) दस दिनपर, (६) घरपर आना; (७) कितनेपर मोटर ली; (८) इसपर चिढकर वह बोला।

४६४—'पर' समुच्चयबोधक अव्यय रूपसे 'परन्तु' अर्थ मे भी आता है; जैसे, वह बोला नहीं, पर चिढ तो गया ही।

ओर

४६५—सम्बन्धसूचक अव्यय 'ओर' का प्रयोग (१) पक्षमे वा तरफ, (२) बदले, (३) किनारा और (४) अन्त अर्थोंमे होता है; जैसे, (१) महासमरमे रूस जर्मनी की ओर था, (२) तुम मेरी ओरसे चले जाओ, (३) तुम्हारी बातका तो ओर छोर ही नही है, (४) हंसते ठाकुर खांसते चोर इन दोनों का आया ओर।

लिये, वास्ते इत्यादि

४६६—लिये, निमित्त, हेतु, कारण और वास्ते, जैसे सम्बन्धसूचक अव्ययोंके पहले 'यह' शब्दका सामान्य रूप 'इस' आनेसे 'इसलिये' और 'कौन' शब्दका सामान्य रूप 'किस' आनेसे 'किसलिये' पद बनते हैं। 'इसलिये' का अर्थ 'अतः' वा 'अतएव' और 'किसलिये' का 'क्यों' होता है; जैसे, इसलिये तुम जल्दी न करो; मैं किसलिये उनकी बात मानूं?

४६७—'वजह' और 'सबब' भी इन्हीं अर्थोंमें आते हैं, परन्तु इनके पीछे 'से' विभक्ति लगाई जाती है; जैसे, इस वजहसे, किस सबबसे।

४६८—यद्यपि 'लिये' के पहले 'के' लुप्त अवस्था मे रहता है, तथापि 'किस लिये' और 'किसके लिये' पदोंके अर्थोंमे अनन्तर है। 'किस लिये' का अर्थ है 'क्यों' और 'किसके लिये' का अर्थ है 'किस व्यक्तिके लिये; जैसे, किस लिये धन एकत्र करूं अर्थात् मेरे धन एकत्र करनेका कोई

कारण नहीं है; मैं किसके लिये धन एकत्र करूं अर्थात् मेरे बाद मेरे संचित धनका भोग करनेवाला कोई नहीं है।

न, नहीं और मत

४९९—'न', 'नहीं' और 'मत' तीनों निषेधार्थक क्रियाविशेषण है, पर 'मत' मध्यम पुरुषके साथ ही प्रयुक्त होता है; जैसे, ऐसा काम मत करना।

५००—'न' और 'नहीं' दोनोंमें 'नहीं' ज्यादा जोरदार है, जैसे, मैं न जाऊँगा और मैं नहीं जाऊँगा।

५०१—'न तो' और 'और न' अर्थोंमें भी न आता है, जैसे, वह न गया; न जायगा।

५०२—जब निषेध किसी विशेषतासे नहीं होता, तब हेतुहेतुमद्भूत सामान्य भूत, सम्भाव्य भूत, सन्दिग्ध वर्त्तमान और सन्दिग्ध भूत तथा भविष्य कालोंमें और विधिमें 'न' और अन्य कालोंमें 'नहीं' आता है; जैसे, वह न आता; मैं न गया; तू न जाता होता; वह न गया होता; मैं न जाता हूँगा; वह न गया होगा; मैं न जाऊँगा; वह न जाय।

५०३—जब सामान्य वर्त्तमानमें निषेधार्थक 'नहीं' आता है, तब 'ह' धातुके रूप लुप्त रहते हैं जैसे मैं नहीं जाता (हूँ)।

५०४—'न' प्रश्न रूपसे 'क्या' अर्थमें भी आता है; जैसे, बाजार चलते हो न? (देखो नियम ५९५ और ४९८)

लोग

५०५—'लोग' शब्द पुंलिंग है और इसका स्त्रीलिंग 'लुगाई' है। परन्तु जब इसके आगे 'घरके' विशेषण लगा दिया जाता है, तब 'घरके लोग' का अर्थ 'स्त्री' वा 'पत्नी' होता है; परन्तु क्रिया, पुंलिंग हो रहती है, जैसे, घर के लोग बीमार रहते हैं। 'घरके लोग' पत्नीवाचक अत्यन्त शिष्ट प्रयोग है।

२०६—कितने ही लेखक 'लोग' शब्द किसी और शब्दके पीछे लगाकर बहुवचन बनाते हैं; जैसे, स्त्री लोग, लड़का लोग, जानवर लोग पर यह शिष्ट प्रयोग नहीं है।

घर

२०७—'घर' शब्दका प्रयोग भी पत्नी अर्थमें किया जाता है, पर उसमें विभक्ति-चिह्न लगाकर ही यह काम लिया जाता है। इस प्रकार 'घरसे' का प्रयोग किया जाता है, पर क्रिया स्त्रीलिंग ही होती है; यद्यपि वचन इच्छानुसार रख सकते हैं; जैसे, मेरे घरसे आयी थीं, पर चली गयीं।

क्यों और काहे

२०८—'क्यो' और 'काहे' दोनो 'किस लिये' अर्थ बतानेवाले अव्यय है। ये सर्वत्र प्रचलित हैं, परन्तु 'काहे' का प्रयोग पूर्वी युक्तप्रदेश और बिहारमें बहुत अधिक देखा जाता है, जैसे, क्यों आये? काहे आये?

२०९—'क्यों' में तो कोई विभक्ति चिह्न वा प्रत्यय नहीं लगता, परन्तु 'काहे' में प्राय: सभी लगते हैं; जैसे, काहेको चिन्ता करते हो? काहेसे ऐसा कहते हो? 'किस कारण' दोनोका मोटा अर्थ है; परन्तु सूक्ष्म अर्थों में कुछ भिन्नता है। 'काहेको' 'किस लिये' और 'काहेसे', 'किस बातसे' अर्थ बताता है।

२१०—'क्यों' में 'कर' प्रत्यय लगाकर 'क्योंकर' बना लेते हैं, परन्तु इसका प्रयोग 'कैसे' अर्थमें ही होता है; जैसे, आपने क्योंकर जाना कि वह चोर है?

अभ्यास

१—आप और अपना शब्दो के प्रयोगो और अर्थों मे क्या अन्तर है?

२—'यह' किन किन अर्थोंमे प्रयुक्त होता है?

३—'क्या' और 'काहे' क्या एक ही अर्थ देते हैं ? कारण सहित उत्तर दो।

४—कि, ओर, पर, लोग और घर शब्दोंके प्रयोग किन किन अर्थों में होते हैं ? उदाहरण सहित बताओ।

५—न, नहीं और मत अव्ययोंके अर्थोंमें क्या भेद है ?

४—शब्दों की पुनरुक्ति

४११—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, सम्बन्धसूचक अव्यय और कृदन्त क्रियापद जब दुहराये जाते हैं, तब उनके अर्थों और रूपों में अन्तर पड़ता है।

४१२—संज्ञा शब्द तीन रूपोंमें दुहराये जाते हैं, (१) जब दोनों एकसे रहते हैं, (२) जब दोनों रूपोंमें यह अन्तर होता है कि पहला या तो स्पष्ट ही सविभक्ति पद होनेपर भी उसका विभक्ति चिह्न अनुक्त रहता है और (३) दोनोंके बीचमें 'ही' अव्यय रहता है। जब दोनों रूपोंमें अन्तर नहीं होता, तब प्रत्येक वा भिन्न भिन्न अर्थ होता है। इस अवस्थामें दूसरे शब्दका विभक्ति चिह्न अनुक्त रहता है; जैसे, घर घर आनन्द बधाये होने लगे अर्थात् घर घरमें या प्रत्येक घरमें। देश देशके राजा एकत्र हुए अर्थात् प्रत्येक देश वा भिन्न भिन्न देशोंके। पांत पांत बगुले बैठ गये अर्थात् कई वा भिन्न भिन्न पांतोंमें।

४१३—जब दोनों रूपोंमें अन्तर होता है, अर्थात् एक प्रत्यय वा विभक्तियुक्त होता है और दूसरेके लिये ऐसा होना आवश्यक नहीं होता, तब पहला 'के' वा 'से' अर्थमें और दूसरा 'में' अर्थमें आता है, जैसे, सबने हाथों हाथ माल उठा लिया अर्थात् हाथोंसे हाथमें; बातकी बातमें लाठी चल गयी।

५१४—जब बहुवचनान्त सम्बन्धपदके बाद वही शब्द पहली बिभक्ति के एकवचनमें आता है, तब सम्बन्धपद 'अत्यन्त' अर्थ देता है, जैसे, वह मूर्खोंका मूर्ख है अर्थात् अत्यन्त मूर्ख है।

५१५—जब दोनोंके बीचमें 'ही' आता है, तब दृढता वा स्वगत् अर्थ प्रकट करता है; जैसे, राजा मन ही मन सोचने लगा।

५१६—सर्वनामोंकी द्विरुक्तिसे प्रत्येकता और भिन्नता तो प्रकट होती ही है, परन्तु उसके रूपमें विशेष अन्तर नहीं पडता। फिर भी कुछ तो पडता ही है; जैसे, जो जैसा चाहता है, वह वैसा फल पाता है अथवा उसे वैसा ही फल मिलता है; उसकी दशा जैसीकी तैसी बनी हुई है।

५१७—दो सर्वनामोंके बीचमें कभी कभी 'न' अव्यय भी रहता है, जो 'अवश्य' वा 'निश्चय' बताता है; जैसे, कोई न कोई वहां होगा अर्थात् कोई अवश्य वा कोई निश्चय होगा। कुछ न कुछ इसमें रहस्य है अर्थात् कुछ अवश्य है।

५१८—'कुछ' जब दुहराया जाता है, तब सदा उसका अर्थ 'बहुत नहीं' होता है, जैसे, कुछ कुछ तो मैं समझ गया अर्थात् बहुत नहीं।

५१९—जब 'कुछ' और 'कुछ' के बीचमें 'न' क्रियाविशेषण रहता है, तब उसका अर्थ होता है थोडेमें थोड़ा; जैसे, इसमें कुछ न कुछ दोष तुम्हारा भी है।

५२०—विशेषणोंकी द्विरुक्ति भी (१) प्रत्येकता (२) विभिन्नता और (३) दृढता बताती है जैसे, बडे बडे राजा आये; नये उत्सव होने लगे; मन्द मन्द हवा चलने लगी।

५२१—संख्यावाचक विशेषणोंकी द्विरुक्ति प्रत्येकता बताती है; जैसे, पांच पांच बेटे और दो दो बेटियां हुईं; दस दस लड़कोंकी टोलियां आयीं।

५२२—जब रुपये, आने या मन सेर दुहराने होते हैं, तब आने और सेर ही दुहराये जाते हैं; जैसे, दो रुपये दस दस आने, पांच मन छ छ सेर।

५२३—'जब' और 'तब' क्रियाविशेषण जब दुहराये जाते हैं; तब 'जब जब' का अर्थ 'जब कभी' और 'तब तब' का 'तभी तब' होता है; जैसे, जब जब धर्मकी ग्लानि होती है, तब तब भगवान्‌का अवतार होता है।

५२४—'ज्यों' द्विरुक्तिमें उत्तरोत्तर अर्थ देते हैं जैसे, ज्यों ज्यों उनका धन बढता गया, त्यों त्यों उन्होंने आदर सत्कार कम कर दिया।

५२५—जब किसी वस्तुके गुण या दोषकी विशेषता दिखानी होती है, तब भी विशेषण दुहराया जाता है; परन्तु पहला विशेषण चौथी विभक्ति में रखा जाता है; जैसे, बडेसे बडे बदमाश मैंने ठीक किये हैं; अच्छीसे अच्छी चीज ले लो।

५२६—सम्बन्धसूचक अव्यय बहुधा 'लगातार' अर्थमें दुहराये जाते हैं; जैसे, किनारे किनारे चलो; पीछे पीछे आओ।

५२७—असमापिका क्रिया तथा हेतुहेतुमद्भूत और भूतकालिक बहुवचनकी द्विरुक्ति 'बारम्बार' अर्थ देती है; जैसे, बहुत चल चलकर वहां पहुंचे; बैठे बैठे मुझे पूर्वकालकी सुध आ गयी।

५२८—'होते होते' 'क्रमशः' वा 'धीरे धीरे' अर्थमें क्रियाविशेषणवत् आते हैं; जैसे, होते होते हम श्रीनगर पहुचे। इसी अर्थमें 'रामराम करके' 'रो रोकर' का भी प्रयोग होता है।

५२९—क्रियापदोंमें द्विरुक्ति तीन प्रकारसे होती है:—(१) जिसमें एक क्रियापद पुंलिंग और दूसरा स्त्रीलिंग होता है; जैसे, हमारी उनकी देखादेखी नहीं है अर्थात् आपसमें परिचय नहीं है। (२)

जिसमें पुंलिंग स्त्रीलिंग क्रियापद तो साथ साथ रहते हैं, पर दोनो विरोधार्थ क्रियाओंके रूप होते हैं; जैसे, बाजारमें अच्छी लेवाबेची हुई; कुछ घटाबढी नहीं हुई। (३) जिनमें पहला क्रियापद साधारण और दूसरा प्रेरणार्थक होता है; जैसे, उसने बैठे बिठाये एक आफत मोल ले ली; तुम्हें जाना जवाना या जानावाना नहीं है।

२३०—क्रियाकी तरह संज्ञा शब्दके साथ भी भिन्न शब्द रखे जाते हैं। इनमें अन्तिम शब्दका अन्तिम अक्षर प्रथम शब्दके अन्तिम अक्षरसे मिलता है और दूसरा शब्द आदि, इत्यादि या वगैरह अर्थ देता है; यहां पानवान नहीं है; बड़ी टीमटाम, डांटडपट इत्यादि।

२३१—'हो' धातुके विधिके मध्यम पुरुष एकवचनका रूप 'हो' जब बीचमें 'न' रखकर दुहराया जाता हैं, तब 'सम्भव है' अर्थ देता है; जैसे, हो न हो, वह आज न जा सकेगा। 'हो न हो' जैसा उसके गठनसे जाना जाता है, अनिश्चयवाचक वाक्य है, इसीलिये उसमें सम्भावनाका समावेश माना जाता है।

अभ्यास

१—विशेषण और क्रियापदोकी पुनरुक्तिके प्रयोग और विशेपत्व उदाहरण सहित बतलाओ।

२—सज्ञा शब्दोकी द्विरुक्ति कैसे कैसे अर्थ देती है?

३—'हो न हो' का प्रयोग किस अर्थमे होता है?

५—वाक्य

२३२—प्रत्येक वाक्यमें दो बातें आवश्यक होती हैं, (१) कुछ कहा जाय और (२) किसीके विषयमें कहा जाय।

२३३—जो कहा जाता है, वह विधेय (predicate) और जिसके

विषयमें कहा जाता है, वह उद्देश्य (subject) कहाता है; जैसे, 'बादल गरजता है' वाक्यमें बादलके बारेमें कुछ कहा गया है, इसलिये 'बादल' उद्देश्य और 'गरजता है' कहा गया है, इसलिये यह विधेय है।

५३४—उद्देश्यमें ये हो सकते हैं :—

(१) एक वा अनेक संज्ञाएं; जैसे, श्रीकृष्ण द्वारकाको गये; सीता, राम और लक्ष्मण बनको गये। पहले वाक्यमें एक और दूसरेमें तीन संज्ञाएं हैं।

(२) एक वा अनेक सर्वनाम; जैसे, ये बातोंसे न मानेंगे; हम, तुम और वह चलेंगे। पहलेमें एक सर्वनाम और दूसरेमें तीन है।

(३) संख्यावाचक विशेषण; जैसे, जो पंच कहें, वही मानो।

(४) विशेषण संज्ञावत्; जैसे, सुन्दरको सुन्दर ही अच्छा लगता है।

(५) कृदन्त संज्ञा; जैसे, दिया लिया ही संग जाता है।

(६) वाक्य वा वाक्यांश, जैसे, सन्तसमागम बड़े पुण्यसे प्राप्त होता है।

५३५—कभी कभी उद्देश्य अनुक्त भी रहता है; जैसे, चल, दूर हो यहांसे। इस वाक्यमें उद्देश्य 'तू' अनुक्त है।

५३६—जब किसीसे प्रश्न किया जाता या कोई बुलाया जाता है, तब प्रश्न और उत्तर दोनोंमे उद्देश्य अनुक्त रहता है; जैसे, बाजार चलते हो? हाँ चलता हूं। प्रश्नमें उद्देश्य 'तुम' और उत्तरमें उद्देश्य 'मैं' अनुक्त है।

५३७—सम्बोधनसे जो वाक्य आरम्भ होता है, उसका उद्देश्य भी अनुक्त रहता है; जैसे, बेटा, मेरा कहना नहीं मानते, पछताओगे। इस वाक्यमे उद्देश्य 'तुम' अनुक्त है।

५३८—विधेयमें ये हो सकते हैं :—

(१) क्रियापद; जैसे, वह आता है।

(२) किसी विभक्तिमें संज्ञा या सर्वनाम; जैसे, मेरा नाम हनुमान है; वह आगरे जायगा; वे तुम्हारे कौन हैं ?

(३) संख्यावाचक विशेषण; जैसे' सत्युगमे मेरे चरण चार थे ,

(४) विशेषण; जैसे, राजा कर्ण बड़ा दानी था।

(५) संज्ञावत् शब्द वा वाक्यांश; जैसे, मैं राजा जनकका दूत हूँ।

५३६—उद्देश्यकी भांति विधेय भी अनुक्त रह सकता है;जैसे, दोनो महारथी आये, एक हाथीपर और दूसरा रथपर। वाक्यके पिछले अंशमे 'आया' विधेय अनुक्त है।

५४०—विधेयका अंगभूत 'है', 'था' वा 'होगा' क्रियापद तो बहुधा विशेषकर कहावतोंमें अनुक्त ही रहता है; जैसे, इन नैनोंमें नीद कहाँ (है) ? अब रणभूमिसे लौटना कैसा (होगा) ? मेरी बातपर उसका ध्यान नहीं (है); छछूँदरके सिरपर चमेलीका तेल (है); चोरीका गुड़ मीठा (होता है)।

५४१—*उद्देश्य और विधेय बढाये भी जा सकते हैं।* जिन शब्दों वा पदोंसे वे बढाये जाते हैं, वे सम्प्रसारक (adjuncts) कहाते हैं,

५४२—उद्देश्यके सम्प्रसारक ये होते हैं :—

(१) संज्ञा वा संज्ञारूपी विशेषण; जैसे, राजा दशरथके पुत्र रामचन्द्र आये हैं।

(२) विशेषण; जैसे, सच्चरित्र मनुष्य ही आदर पाते हैं।

(३) संख्यावाचक विशेषण; जैसे, चार आदमियोंकी रायसे काम करो।

(४) सम्बन्धवाचक विशेषण; जैसे, तुम्हारा घर कहां है ?

(५) कृदन्त विशेषण, जैसे, कोई मरा सांप डाल गया।

(६) विशेषण भावापन्न वाक्यांश; जैसे, विज्ञानवेत्ता जगदीशचन्द्र वसु जगत्प्रसिद्ध थे।

(७) सर्वनाम वाक्यका वाक्यांश; जैसे, जो कुछ तुम कहते हो, मैं समझता हूँ।

(८) क्रियायुक्त वाक्यांश, जैसे, मंत्रियोंसे परामर्श करके राजा शासन करता है।

(९) क्रियाविशेषण भावापन्न वाक्यांश; जैसे, सीता और लक्ष्मण सहित राम वनको गये थे।

५४३—विधेयके सम्प्रसारक ये होते हैं:—

(१) संज्ञा कर्मपद; जैसे, द्वारपालने संदेसा कह दिया।

(२) सर्वनाम कर्मपद; जैसे राजाने कुछ न कहा।

(३) क्रियाविशेषणात्मक वाक्य; जैसे, राम वन जायँगे सुनते ही सब अधीर हुए।

(४) क्रियाविशेषण; जैसे, वह तुरत चला गया; और लोग एक एक कर जाने लगे।

(५) सम्बन्धपद; जैसे, सत्य ही सब धर्मों का मूल है।

(६) अन्य कारकपद; जैसे नन्दने सब ब्राह्मणोंको न्योता भेज दिया; रामने बाणोंसे राक्षसों को मारा; पेडसे पत्ते गिरे।

(७) संख्याका विशेषण; जैसे, यह मेरा सतखंडा है।

(८) विशेष्यका विशेषण; जैसे, मेरा घर पवित्र कीजिये।

(९) सम्बन्धसूचक अव्ययका योग; जैसे, सब गोपियाँ यशोदाके पास गयीं।

५४४—वाक्य के ३ भेद होते हैं:—(१) सरल वाक्य (simple sentence), (२) जटिल या मिश्र वाक्य (complex or mixed sentence) और (३) संयुक्त वाक्य (compound sentence).

५४५—जिस वाक्यमें एक उद्देश्य और एक बिधेय हो, वह सरल

वाक्य है; जैसे, राम रोटी खाता है; श्याम सोता है; हरी घर गया; भले आदमी गाली नहीं देते।

४४६—जब दो या अधिक सरल वाक्योंसे कोई वाक्य बनता है और उनमें किसीसे निरपेक्ष वा मुख्य (independent or principal) और किसीसे सापेक्ष वा आश्रित (dependent or subordinate) भाव प्रकाशित होता है, तब वह सारा वाक्य जटिल वा मिश्र वाक्य कहाता है, जैसे, सभ्य वह है जो सभा मे बैठकर सबको सन्तुष्ट करता है। इसमें पहला अंश 'सभ्य वह है' मुख्य वा निरपेक्ष भाव प्रकट करता है और 'जो सभा में······करता है' सापेक्ष वा आश्रित वाक्य है।

४४७—जब दो वा अधिक सरल वाक्य वा जटिल वाक्य मिलकर एक वाक्य बनाते हैं और उनमें प्रत्येक निरपेक्ष भाव प्रकट करता है, तब ऐसा वाक्य संयुक्त वाक्य कहाता है; जैसे, जब जर्मनी का क्रूजर एमडेन बंगालकी खाड़ीमे आया, तब यहाँ बड़ी हलचल मच गयी और बहुतसे लोग भागने लगे।

अभ्यास

१—वाक्य के प्रकारका होता है? २—भिन्न भिन्न वाक्यो के उदाहरण सहित लक्षण बताओ। ३—जटिल वाक्य और सयुक्त वाक्यमे अन्तर क्या है? ४—उद्देश्य और विधेयसे क्या अभिप्राय है? ५—क्या ये बढाये भी जा सकते है? यदि हाँ, तो कैसे?

वाक्य-रचना वा पदयोजना

४४८—शब्दों वा पदोंको इस क्रमसे रखना कि उनसे रखनेवालेके मनका अभिप्राय अच्छी तरह प्रकट हो जाय, वाक्य रचना वा पदयोजना

(collocation of words) कहाता है। इस विषयका विचार संश्लेषणात्मक पद्धतिसे (synthetical method) होता है।

५४९—वाक्यमें शब्दों वा पदोंको यथास्थान रखनेको क्रम (order) और स्वाभाविक सम्बन्धको अन्वय (natural connection) कहते हैं।

५५०—प्रत्येक वाक्यमें एक कर्त्ता और एक क्रिया का होना आवश्यक है, चाहे वह उक्त हो वा अनुक्त। ऐसा वाक्य सरल वाक्य (simple sentence) कहाता है; जैसे, मैं जाता हूँ; वह गया, तू जायगा, जाता हूँ, जा।

५५१—सकर्मक क्रियावाले वाक्यमें कर्म भी होता है; जैसे, श्याम रोटी खाता है। इस वाक्यमे 'श्याम' कर्त्ता, 'रोटी' कर्म और 'खाता है' क्रिया है।

५५२—पद्योजनाका साधारण नियम यह है कि पहले कर्त्ता, फिर कर्म और अन्तमें क्रिया रखी जाय। अन्य कारक होनेसे बहुधा कर्त्ता और क्रियाके बीचमें रखे जाते हैं; जैसे, 'रामने रावणको मारा' वाक्यमें 'रामने' कर्त्ताके बाद कर्मपद रावणको' और अन्तमें 'मारा' क्रिया है। 'नौकर मालीसे पेड़से फल तुड़वाता है' वाक्यमें 'नौकर' कर्त्ता, 'मालीसे' करण, 'पेड़से' अपादान, 'फल' कर्म और तुड़वाता है' क्रिया अन्तमें है। 'मालिकने नौकरको धोबीको कपड़े देनेका हुक्म दे दिया' वाक्यमें 'मालिकने' कर्त्ता 'नौकरको' कर्म, 'धोबीको' निमित्त अर्थमें दूसरी विभक्ति, 'कपडे देनेका' सम्बन्धपद विशेषण, 'हुक्म' दूसरा कर्म, 'दे दिया' क्रिया अन्तमें है।

५५३—वक्ता वा लेखक जिस शब्द वा पदपर जोर देना चाहता है, उसे हटाकर दूसरे स्थानमें भी रख सकता है; जैसे, धिक्कार है तेरे

जीवनको ! बेटे तो धृतराष्ट्रके सौ थे। जान तो ली मैंने उसकी चालाकी।

विशेष्य, विशेषण और सर्वनाम

५५४—वाक्यमें विशेषणका प्रयोग दो रूपोंसे होता है, एक गुण-दर्शक रूपसे (attributively) और दूसरा विधेयदर्शक रूपसे (predicatively), जैसे, 'वह सुन्दर लड़का है' वाक्यमें 'सुन्दर' विशेषण 'लड़का' कर्त्ताका गुण बताता है। परन्तु 'वह लड़का सुन्दर है' वाक्यमें 'सुन्दर' विशेषण विधेयद्योतक वा पादपूर्णार्थक (complementary) है।

५५५—लिंग और वचनमें विशेषण विशेष्यके अनुकूल रहता है; जसे, बहुतसे शेर, छोटे बड़े पेड़।

५५६—विशेषणके लिङ्गवचन उसी विशेष्यके अनुकूल रहते हैं, जो उसके पहले रहता है, दूसरे विशेष्योंके नहीं; जैसे सर्कसमें इतने बड़े हाथी और हथिनियां थीं। ऐसी अवस्था में 'हथिनियां' पदका विशेषण 'बड़ी' अनुक्त समझ लिया जाता है।

५५७—जब विशेष्य पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्गोंमें होते हैं, तब विशेषण बहुधा पुंलिङ्ग बहुवचनमें होता है, जैसे, मेरे स्त्री पुत्र आदि हैं। यहां 'मेरे' सम्बन्धपद, स्त्रीपुत्रादिका विशेषण है।

५५८—जब विशेषणका विशेष्य नहीं होता, तब विशेषणका ही प्रयोग संज्ञाकी भांति होता है, जैसे, बड़ोंका कहना मानो; दुष्टका संग न करो।

५५९—विशेषणका प्रयोग जब क्रियाविशेषणकी भांति होता है, तब क्रियाके पहले आता है और उसमें विकार नहीं होता, जैसे, वह खूब नाचा; उसने अच्छा गाया।

५६०—जब विशेषण संज्ञा और क्रिया दोनोंकी विशेषता दिखाता है, तब संज्ञाके लिंगवचनानुसार उसके लिंगवचन होते हैं; जैसे, मुझे मीठा भोजन अच्छा लगता है।

५६१—'सरीखा' शब्द और 'सा' प्रत्ययसे बननेवाले शब्द सामान्य रूपमें होते है; जैसे मुझसरीखा आदमी, तुम्हारासा बदमाश लड़का।

५६२—सम्बन्धसूचक 'भर' अव्यय यदि संज्ञा शब्दमें प्रत्ययकी भांति जुड़ता है, तब आकारान्त शब्दका सामान्य रूप करके 'भर' जोड़ा जाता है और उस समय 'भर' युक्त शब्द विशेषण माना जाता है, जैसे, कटोरेभर रस, प्यालेभर चाय। जब केवल व्याप्ति बतानेको 'भर' का प्रयोग होता है, तब वह विशेषण नहीं होता और उसका अर्थ 'केवल' होता है; जैसे, लड़के भर वहां थे।

५६३—जिस संज्ञा शब्द के बदले सर्वनाम आता है, लिंग वचनमें उसीके अनुकूल रहता है; जैसे, जब रामलक्ष्मण छोटे थे, तभी वे विश्वामित्रके साथ गये थे।

कर्त्ता और क्रिया

५६४—जब उद्देश्यमें दो तीन संज्ञा वा सर्वनामपद भिन्न भिन्न लिंगोंके हों, तो जो क्रियाके अत्यन्त निकट होता है, उसीके अनुसार क्रियाके लिंगवचन होते हैं; जैसे, रावणके दस सिर और बीस भुजाएँ थीं। यहाँ 'थीं' क्रिया 'भुजाएँ' कर्त्ताके लिंगवचनके अनुसार हुई, 'सिर' कर्त्ताके अनुसार नहीं, क्योंकि यह क्रियासे दूर और वह निकट है।

५६५—हिन्दीमें क्रियाकी अनुकूलता (agreement) कभी कर्त्ताके साथ और कभी कर्मके साथ होती है और कभी न कर्त्ताके और न कर्मके।

५६६—अकर्मक क्रियाके सब कालों तथा सकर्मक क्रियाके वर्त्तमान

और भविष्यकालोंमे क्रिया लिंगवचनमे कर्त्ताके अनुकूल रहती है। इसे क्रियाका कर्तृप्रयोग कहते हैं। इसमे कर्त्तामें पहली विभक्ति और कर्ममें पहली या दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, राम आता है; गया गया गया; मैं रोटी खाता हूँ; हम खाना खायँगे।

५६७—सकर्मक क्रिया भूतकालमे लिंगवचनमें कर्मके अनुकूल रहती है, जैसे, मैंने आम खाये; सीताने भात खाया। इसे क्रियाका कर्मप्रयोग कहते हैं। इसमें कर्ममें पहली और कर्त्तामे तीसरी विभक्ति होती है; जैसे, कृष्णने धर्मकी स्थापना की।

५६८—जब किसी वाक्यका कर्म एक वाक्य होता है, तब पहले वाक्यकी भूतकालिक क्रिया सदा पुंलिंग एकवचनमे होती है; जैसे, जानकीने रावणसे कहा, रे दुष्ट, तू रामको नहीं जानता!

५६९—जब कर्त्तामें तीसरी और कर्ममें दूसरी बिभक्ति होती है, तब क्रिया न तो कर्त्ताके अनुकूल रहती है और न कर्मके ही। इसे क्रियाका भावप्रयोग कहते हैं; जैसे, राधारानीने पोथियोंको बाँधा; सीताने गायोंको दुहा; रामने रोटियोंको खाया।

५७०—जब वाक्यमें दो वा अधिक कर्त्ता हों और सब एक ही लिंगके हों, तब उसी लिंगकी क्रिया बहुबचनमें रखी जाती है, चाहे अन्तिम कर्त्ताके पहले संयोजक अव्यय 'और' हो या न हो; जैसे, जर्मनी और आस्ट्रिया महासमरमे एक ओर थे; राधा और गोपियाँ एक साथ आयीं।

५७१—जब वाक्यमें भिन्न भिन्न लिगोंके कर्त्ता हों और उनके बीचमें 'और' न हो, तब द्वन्द्व समासके अनुसार उनकी क्रिया बहुधा पुंलिग शब्द की प्रधानताके कारण उसके बहुवचन में होती है; जैसे, राजारानी आये; नरनारी मोहे; बापमाँ गये।

५७२—जब भिन्न भिन्न लिगों और वचनोंके हों और अन्तिम कर्त्ताके पहले 'और' हो, तो क्रिया लिंगवचनमें अन्तिम कर्त्ताके अनुकूल होती है; जैसे, चार पुरुष और पाँच स्त्रियाँ गयीं; दस बैल और बीस गायें आयीं।

५७३—जब कर्त्ता भिन्न भिन्न पुरुषों और वचनोंके हों और उनके बीचमें 'और' हो वा न हो, तब उत्तम पुरुष कर्त्ता होनेपर क्रिया उत्तम पुरुष बहुवचनमें और मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष होनेपर मध्यम पुरुष बहुचनमें होगी; जैसे, मैं तुम चलेंगे, तुम और वह वहां जाओगे।

५७४—आदर दिखानेके लिये एकवचन कर्त्ताके लिये भी बहुबचन क्रियाका प्रयोग किया जाता है; जैसे, आप जानते हैं कि श्रीकृष्ण अवतार माने जाते हैं।

५७५—परमेश्वरके लिये अथवा किसीका अनादर करनेके लिये एकवचनकी क्रियाका प्रयोग किया जाता है; जैसे, परमेश्वर घट घटकी जानता है; वह पागलकी तरह बकता है।

५७६—शासक, राजा, सम्राट्, सम्पादक, सरकारें और किसी संस्था वा परिवारके प्रतिनिधि वा नेता अपने लिये बहुवचनकी क्रिया का प्रयोग करते हैं; पड़ोसी राज्योंसे हमारा मेल है; हम किसीपर अन्याय न होने देंगे।

५७७—यदि किसी वाक्य मे दो शब्द भिन्न लिंगों और वचनोंके हों और कर्त्तासे जान पड़ते हों, तो जो मुख्य होगा, वही कर्त्ता माना जायगा; जैसे, इसका कारण आपकी दुर्बलता नहीं माना जा सकता। यदि दुर्बलताको कर्त्ता मानकर 'मानी जा सकती' क्रिया बनावें, तो अशुद्ध होगा।

अभ्यास

१—पदयोजनाका मुख्य नियम क्या है? २—अन्वय और क्रममे

क्या अन्तर है ? ३--वाक्यमे विशेषण जिन दोनो रूपोसे आता है, उन्हे अच्छी तरह समझाओ। ४--कर्त्ताका साथ क्रिया कब देती है और कब नही ? ५—जब वाक्यमे भिन्न भिन्न लिगोके कर्त्ता हो, तब क्रिया किसके अनुकूल होगी ? अथवा भिन्न भिन्न वचनोके कर्त्ता हों तो क्रिया किसका साथ देगी ? ६--जब कर्त्ताओके बीचमे संयोजक अव्यय 'और' होगा तब क्या होगा जब न होगा, तब क्या होगा ?

वाच्यपरिवर्त्तन

५७८—हिन्दीमे कर्त्तृवाच्यको कर्मवाच्यमें और कर्मवाच्यको कर्त्तृवाच्यमें नहीं बदल सकते; क्योंकि कर्मवाच्य भूतकालिक सकर्मक क्रियामे ही होता है। पर अंग्रेजी ढगका वाच्यपरिवर्त्तन (change of voice) संयुक्त क्रियाको सहायता से हो सकता है, जैसे, 'मैने भात खाया' यह कर्मवाच्यका उदाहरण है। पर अंग्रेजीमे यह कर्त्तृवाच्य (active voice) है। इसे (passive voice) बनावें, तो रूप होगा, 'मुझसे भात खाया गया।

५७९—वर्त्तमान और भविष्य कालोंके active voice को हम इसी प्रकार passive voice में बदल सकते हैं; जैसे, 'मैं आम खाता हूँ' active voice है। इसका passive voice होगा 'मुझसे आम खाये जाते हैं।' भविष्य कालमें active voice होगा 'मैं आम खाऊँगा।' इसका passive voice बनेगा, मुझसे आम खाये जायँगे। परन्तु हिन्दीमें इस प्रकारके passive voice के अर्थमें कुछ विशेषता रहती है। इसका अर्थ होता है 'मुझे आम खानेमें कष्ट नहीं है' 'या नहीं होगा'।

५८०—कर्मवाच्यको भाववाच्यमे और भाववाच्यको कर्मवाच्यमें

बदल सकते हैं और इसमें अर्थोंमें अन्तर भी नहीं पड़ता, जैसे, मैंने रोटी खायी' कर्मवाच्य है, जिसमें 'रोटी' कर्मपद पहली विभक्तिमें है। यदि हम इस कर्मपदको दूसरी विभक्तिमें 'रोटीको' कर दें और क्रिया पुंलिंग एकवचन कर दें, तो 'मैंने रोटीको खाया' भाववाच्य (impersonal voice) बन जायगा।

५८१—इस प्रकार 'मैंने पोथी को पढ डाला' भाववाच्यको कर्मवाच्यमे बदलने के लिए कर्मपद 'पोथीको', जो दूसरी विभक्ति मे है, पहली विभक्तिमें करके इसके अनुकूल क्रिया स्त्रीलिंग कर दें, तो 'मैंने पोथी पढ डाली' कर्मवाच्य हो जाता है।

५८२—इससे यह न समझना चाहिए कि हिन्दीमें passive voice है ही नहीं, क्योंकि बहुतसे उदाहरण मिलते हैं, जो 'जाना' क्रियाके योगसे बनते हैं; जैसे, चिट्ठी लिखी जाती है; रामायण पढ़ी जाती है; चोर पीटे जाते हैं। इनमे वास्तविक कर्त्ता लुप्त है और कर्म ही कर्त्ता बना है; जिससे ये passive voice हैं।

५८३—इनको कर्मकर्त्तृवाच्यके उदाहरण समझनेकी भूल न करनी चाहिये, क्योंकि यद्यपि कर्मकर्त्तृवाच्यमे कर्त्ता लुप्त रहता है और कर्म ही कर्त्ता बन जाता है, तथापि उसमें 'जाना' क्रियाके संयोगसे संयुक्त क्रिया नहीं बनती। उक्त passive voice से तो जाना जाता है कि कर्त्ता तो कोई अवश्य है, पर हमें बताया नहीं गया और कर्मकर्त्तृवाच्यसे जान पड़ता है कि काम आपसे आप (automatically) होता है, उसका कर्त्ता कोई नहीं है, जैसे, पानी बरसता है; भोजन बनता है; खेत कट रहे हैं। इन वाक्योंसे जान पड़ता है कि पानीका बरसानेवाला, भोजनका बनानेवाला और खेतोंका काटनेवाला कोई नहीं है, ये सब काम आप ही आप होते हैं।

५८४—हिन्दीमें संयुक्त क्रियाके योगसे जो भाववाच्य बनता है, उसमें कर्त्तामें चौथी विभक्ति और क्रियामें भाव रहता है तथा यह क्रिया सामर्थ्यद्योतक होती है, जैसे मुझसे चला नहीं जाता; उससे अब खाया जाता है।

५८५—जब कोई क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनो तरहकी क्रियाओं के योगसे बनती है, तब उसमें कर्मवाच्य नहीं होता; जैसे, मैं रुपया दे आया; वह चल दिया, तुम पोथी लाये (ल्याये = ले आये)।

५८६—परन्तु जिस संयुक्त क्रियाके पहले भागमें कृदन्त संज्ञा सामान्य रूपमें और दूसरे भागमें 'देना' क्रिया रहती है, उसमें अर्थात् अनुमतिद्योतक संयुक्त क्रियामें कर्मवाच्य होता है, पहले भागमें चाहे अकर्मक क्रियाका ही कृदन्त क्यों न हो; जैसे, उसने मुझे जाने दिया।

५८७—परन्तु जब संयुक्त क्रियाके दोनो भाग सकर्मक होते हैं, तब उनमें बहुधा कर्मवाच्य ही होता है; जैसे; तुमने मेरी किताब छीन ली; मैंने रोटी खा ली; उसने सब बातें जान लीं।

५८८—परन्तु जिस किसी संयुक्त क्रियाके अन्तिम भागमें "पाना" क्रिया हो और उसके प्रथम भागमें कृदन्त संज्ञा सामान्य रूपमें हो और जिस संयुक्त क्रियाके अन्तिम भागमें 'करना' क्रिया हो और पूर्व भागमें सकर्मक क्रियाका भूतकालिक एकवचनान्त कृदन्त ही क्यों न हो, उन दोनोंमें अर्थात् प्राप्तिद्योतक और स्वभाव वा अभ्यासद्योतक संयुक्त क्रियाओं में कर्मवाच्य नहीं होता; जैसे, वह जाने पाया; वह खाया किया।

अभ्यास

१—वाच्यपरिवर्त्तनके नियम क्या हैं?

२—हिन्दी और अंगरेजीके वाच्योंमें कहां कहां अन्तर पड़ता है, अच्छी तरह समझाओ.

३—सामान्य क्रिया और सयुक्त क्रियाके वाच्यपरिवर्तनके नियमोमे कोई अन्तर है या नही और है तो क्या ?

४—कर्मकर्तृवाच्य और अग्रेजी ढगका जो passive voice हिन्दी मे बनता है, उसमे क्या अन्तर है ?

संयुक्त वाक्य

५८९—संयुक्त वाक्य दो प्रकारका होता है (१) समानाधिकरण संयुक्त वाक्य (co-ordinate compound sentence) और (२) असमानाधिकरण वा आश्रित संयुक्त वाक्य (subordinate compound sentence).

५९०—जब किसी संयुक्त वाक्यके सब वाक्यका परस्परमें प्रधान (principal) और गौण अथवा सापेक्ष (dependent) वा निरपेक्ष (independent) भाव न हो, तब वह समानाधिकरण संयुक्त वाक्य (co-ordinate compound sentence) कहाता है। परन्तु जब किसी संयुक्त वाक्यका कोई अंश मुख्य वा प्रधान (principal) और दूसरा गौण वा आश्रित (subordinate) होता है, तब वह आश्रित संयुक्त वाक्य (subordinate compound sentence) कहाता है। पिछलेको मिश्र वा जटिल वाक्य (mixed or complex sentence) भी कहते है।

समानाधिकरण संयुक्त वाक्य

५९१—समानाधिकरण संयुक्त वाक्य चार प्रकार का होता है, (१) संयोजक (copulative), (२) वियोजक (disjunctive), (३) विरोधदर्शक (adversative) और (४) हेतुदर्शक (causal)

५९२—जो संयुक्त वाक्य 'और', 'फिर', 'तथा', 'एवं', 'फिर भी

अथवा 'तथापि' से जुड़ा रहता है और जिसका एक अंश दूसरेका आश्रित नहीं रहता तथा दोनों अंशोंका अधिकार समान रहता है, वह समानाधिकरण संयोजक संयुक्त वाक्य (co-ordinate copulative compound sentence) कहता है, जैसे, तुम गये और एकको और ले गये, अभी बैठो, फिर न आना, तुम्हारी बातों तथा (एव) तुम्हारे कार्योंमे अन्तर है, तुमको मैंने बहुत समझाया, फिर भी तुम ध्यान नहीं देते; यह बालक है, तथापि बुद्धिमान है।

५९३—'तथापि' के बदले तिसपर भी' का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे, रामजी विनय करते थे, तिसपर भी परशुरामजी बिगड़ते ही जाते थे।

५९४—वियोजक संयुक्त वाक्य (disjunctive compound sentence) के अंश 'वा', 'अथवा', 'किंवा', 'कि' और 'या' वियोजक अव्ययोंसे अलग किये जाते हैं। इनके अर्थोंमें कोई अन्तर नहीं पड़ता जैसे, तुम जाओगे वा (अथवा, किंवा, कि, या) मैं जाऊँ।

५९५—निषेधार्थक 'न' का प्रयोग 'और न' अर्थमें वियोजक संयुक्त वाक्यमें होता है, जैसे, न तुम काम करोगे, न किसीको करने दोगे। यहां दूसरा 'न' 'और न' अर्थमें आया है।

५९६—पहला 'न' कहीं अनुक्त भी रहता है और एक ही 'न' दोनों का काम करता है; जैसे, श्रीरामको राज्य पानेका हर्ष था न वन जानेका विषाद।

५९७—'नहीं तो' भी वियोजक रूपसे प्रयुक्त होता है, जैसे, तुम रामजीकी शरण जाओ, नहीं तो तुम्हारा कल्याण नहीं।

५९८—'चाहे' का प्रयोग भी वियोजक अव्यय रूपसे वाक्यमें किया जाता है; जैसे, तुम दो, चाहे कोई और दे।

५९९—कविता और कहावतमें एक ही 'न' अथवा 'नहीं' दोनों वाक्योंमें अर्थ करनेके समय लगा लिया जाता है; जैसे, 'मनमहं हर्ष न विषाद कछु बोले श्रीरघुवीर', 'साँच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप', 'मुझे और न तुझे ठौर।'

६००—विरोधदर्शक समानाधिकरण संयुक्त वाक्यमें (adversative co-ordinate compound sentence) दो परस्पर विरोधी वाक्य रहते हैं। जब यह विरोध साधारण होता है, तब पहले वाक्यका अर्थ सीमित कर देता है और यह विरोध 'पर' 'परन्तु', किन्तु', 'लेकिन', और 'मगर' अव्ययोंसे प्रकट किया जाता है; जैसे, तुम जाते तो हो, पर (परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर) सोच समझ कर जाओ।

६०१—परन्तु विरोध जब तीव्र होता है और पहलेसे पिछले वाक्यमें विशेष अच्छाई या बुराई बतानी होती है, तब "वरं" 'वरञ्च', 'वरन्', 'प्रत्युत' और 'बल्कि' जैसा कोई अव्यय दोनो वाक्योंके बीचमें रखा जाता है; जैसे, उसने मेरी राय नहीं मानी, बल्कि (वरं वरंच, वरन्, प्रत्यत, अपितु) उसका विरोध भी किया।

६०२—हेतुदर्शक सामानाधिकरण संयुक्त वाक्यमें (causal co-ordinate compound sentence) एक अंश पहलेका कारण वा परिणाम बताता है और दोनोको जोड़नेके लिये 'कारण', 'जिससे, 'इससे', 'इसलिये', 'इस वास्ते' जैसा अव्यय रखा जाता है; जैसे, हम अपने मातापिताको सुख देंगे, क्योंकि (कारण) उन्होंने हमारे लिये बड़ा कष्ट सहा है; ऐसा काम न करना चाहिये, जिससे बदनामी हो; बेईमानी करनेसे दुख मिलता है, इसलिये तुम्हे समझाता हूँ।

६०३—कभी कभी ये संयोजक अव्यय अनुक्त भी रहते हैं; जैसे, भक्तोंपर कष्ट है, इस समय चलकर उनकी रक्षा किया चाहिये। यहाँ

अथवा 'तथापि' से जुड़ा रहता है और जिसका एक अंश दूसरेका आश्रित नहीं रहता तथा दोनों अंशोंका अधिकार समान रहता है, वह समानाधिकरण संयोजक संयुक्त वाक्य (co-ordinate copulative compound sentence) कहता है, जैसे, तुम गये और एकको और ले गये, अभी बैठो, फिर न आना, तुम्हारी बातों तथा (एवं) तुम्हारे कार्योंमें अन्तर है, तुमको मैंने बहुत समझाया, फिर भी तुम ध्यान नहीं देते; यह बालक है, तथापि बुद्धिमान है।

५६३—'तथापि' के बदले तिसपर भी' का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे, रामजी विनय करते थे, तिसपर भी परशुरामजी बिगड़ते ही जाते थे।

५६४—वियोजक संयुक्त वाक्य (disjunctive compound sentence) के अंश 'वा', 'अथवा', 'किंवा', 'कि' और 'या' वियोजक अव्ययोंसे अलग किये जाते हैं। इनके अर्थोंमें कोई अन्तर नहीं पड़ता जैसे, तुम जाओगे वा (अथवा, किंवा, कि, या) मैं जाऊँ।

५६५—निषेधार्थक 'न' का प्रयोग 'और न' अर्थमें वियोजक संयुक्त वाक्यमें होता है, जैसे, न तुम काम करोगे, न किसीको करने दोगे। यहां दूसरा 'न' 'और न' अर्थमें आया है।

५६६—पहला 'न' कहीं अनुक्त भी रहता है और एक ही 'न' दोनों का काम करता है; जैसे, श्रीरामको राज्य पानेका हर्ष था न वन जानेका विषाद।

५६७—'नहीं तो' भी वियोजक रूपसे प्रयुक्त होता है; जैसे, तुम रामजीकी शरण जाओ, नहीं तो तुम्हारा कल्याण नहीं।

५६८—'चाहे' का प्रयोग भी वियोजक अव्यय रूपसे वाक्यमें किया जाता है; जैसे, तुम दो, चाहे कोई और दे।

५९९—कविता और कहावतमें एक ही 'न' अथवा 'नहीं' दोनों वाक्योंमें अर्थ करनेके समय लगा लिया जाता है; जैसे, 'मनमहं हर्ष न विषाद कछु बोले श्रीरघुवीर', 'साँच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप', 'मुझे और न तुझे ठौर।'

६००—विरोधदर्शक समानाधिकरण संयुक्त वाक्यमें (adversative co-ordinate compound sentence) दो परस्पर विरोधी वाक्य रहते हैं। जब यह विरोध साधारण होता है, तब पहले वाक्यका अर्थ सीमित कर देता है और यह विरोध 'पर' 'परन्तु', किन्तु', 'लेकिन', और 'मगर' अव्ययोंसे प्रकट किया जाता है; जैसे, तुम जाते तो हो, पर (परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर) सोच समझ कर जाओ।

६०१—परन्तु विरोध जब तीव्र होता है और पहलेसे पिछले वाक्यमें विशेष अच्छाई या बुराई बतानी होती है, तब "वरं" 'वरञ्च', 'वरन्', 'प्रत्युत' और 'बल्कि' जैसा कोई अव्यय दोनो वाक्योंके बीचमें रखा जाता है; जैसे, उसने मेरी राय नहीं मानी, बल्कि (वरं वरंच, वरन्, प्रत्यत, अपितु) उसका विरोध भी किया।

६०२—हेतुदर्शक सामानाधिकरण संयुक्त वाक्यमें (causal co-ordinate compound sentence) एक अंश पहलेका कारण वा परिणाम बताता है और दोनोको जोडनेके लिये 'कारण', 'जिससे, 'इससे', 'इसलिये', 'इस वास्ते' जैसा अव्यय रखा जाता है; जैसे, हम अपने मातापिताको सुख देंगे, क्योंकि (कारण) उन्होंने हमारे लिये बड़ा कष्ट सहा है; ऐसा काम न करना चाहिये, जिससे बदनामी हो; बेईमानी करनेसे दुख मिलता है, इसलिये तुम्हे समझाता हूँ।

६०३—कभी कभी ये संयोजक अव्यय अनुक्त भी रहते हैं; जैसे, भक्तोंपर कष्ट है, इस समय चलकर उनकी रक्षा किया चाहिये। यहाँ

'इस समय' के पहले कारण वा हेतुदर्शक 'इससे' वा 'इसलिये' अनुक्त है।

आश्रित संयुक्त वाक्य

६०४—आश्रित संयुक्त वाक्य (subordinate compound sentence) तीन प्रकारका होता है (१) विशेष्यभावापन्न (substantive), (२) विशेषणभावापन्न (subjective or relative) और (३) क्रियाविशेषणभावापन्न (adverbial)

६०५—विशेष्यभावापन्न वाक्य वह है, जिसमें वाक्य ही विशेष्यके समान होता है; जैसे, सत्यसे बढ़कर कुछ नहीं है यह सब धर्मों का सार है। इसमें 'सत्यकी श्रेष्ठता' की ही व्याख्या 'सत्यसे बढकर नहीं है' वाक्य में बतायी गयी है।

६०६—विशेष्यभावापन्न वाक्य दो प्रकारके होते हैं (१) उद्देश्य द्योतक (subjective) और (२) विधेयद्योतक (predicative).

६०७—उद्देश्यद्योतक विशेष्यभावापन्न वाक्य वह कहाता है जो या तो वाक्यका उद्देश्य होता है वा उद्देश्यका समानाधिकरण (inapposition with the subject).

६०८—विधेयद्योतक विशेष्यभावापन्न वाक्य वह है, जो मुख्य वाक्य के विधेय अथवा उस विधेयके किसी सम्प्रसारककी सीमा बाँधता या व्याख्या करता है।

विशेष्यभावापन्न वाक्य

६०९—उद्देश्यद्योतक विशेष्यभावापन्न वाक्योंके पहले 'कि' संयोजक अव्यय रहता है; जैसे, भेद खुल गया कि बटोही अयोध्याके राजकुमार हैं; तुम जान लो कि सत्य सब धर्मोंका मूल है।

६१०—कभी कभी संयोजक अव्यय 'कि' अनुक्त भी रहता है; जैसे, 'तुम समझो यही मेरा उपदेश है' वाक्यमें 'यही' के पहले 'कि' अनुक्त है।

६११—कभी कभी 'कि' के बदले उपमावाचक 'मानो' अव्ययका प्रयोग किया जाता है; जैसे, राम और लक्ष्मणके बीच सीता ऐसे शोभा देती थीं, मानो कामदेव और वसन्तके बीच रति हो।

६१२—आवश्यकता वा औचित्य बतानेवाले वाक्यके पहले भी बहुधा 'कि' अनुक्त रहता है; जैसे, आवश्यक है, वहाँ तुम जाओ; उचित है, वहाँ कोई भेजा जाय।

६१३—विधेयद्योतक विशेष्यभावापन्न संयुक्त वाक्य कई प्रकारके होते हैं। इनमें प्रायः सभीके पहले 'कि' रहता है।

६१४—अनेक वाक्योंमे उक्त वा अनुक्त 'वह' कर्त्ताका कर्म आश्रित वाक्य होता है; जैसे, यह, खुल गया कि नौकर बादशाह अलफ्रेड हैं; सिद्ध है कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है।

६१५—कभी कभी 'कि' के बदले 'जो' भी आता है; जैसे, तुम बताओ जो कलकत्ते और हवड़े क्या अन्तर है?

६१६—कभी कभी विधेयद्योतक वाक्य मुख्य क्रियाका कारण बताता है; जैसे, मैं वहाँ गया था कि तुम्हे काममें लगा दूँ।

६१७—जब विशेष्यभावापन्न वाक्य किसी कार्यका फल या परिणाम बताता है, तो यदि वह (१) आशा प्रकट करता हो, तो क्रिया भविष्य-कालिक विधि रूपमें होना चाहिये, (२) वास्तविक बात बताता हो, तो सामान्य वर्त्तमान कालमें होनी चाहिये और (३) अचिन्तनीय वा अप्राप्य हो तो अनिश्चित अपूर्ण भूतमें होनी चाहिये।

विशेषणभावापन्न वाक्य

६१८ विशेषणभावापन्न वाक्य वह कहाता है, जो मुख्य वाक्यके

किसी शब्द वा वाक्यांशका विशेषण होता है; जैसे; तुमने वे बातें सुन लीं, जो नाई कह गया था। इसमे 'जो नाई कह गया था' वाक्य 'बातें' शब्दका विशेषण है।

६१६—सभी विशेषणभावापन्न वाक्य सम्बन्धवाचक सर्वनाम व सार्वनामिक विशेषणसे आरम्भ होते हैं, जिसके जोड़का निश्चयवाचक सर्वनाम मुख्य वाक्यमें रहता है। सम्बन्धवाचक वाक्य निश्चयवाचक सर्वनामका सम्प्रसारित रूप समझा जाता है; जैसे, जैसी तेरी दशा है, वैसी ही बात तू कहती है।

६२०—कभी सम्बन्धवाचक सर्वनाम वा सार्वनामिक विशेषण और कभी निश्चयवाचक सर्वनाम अनुक्त भी रहता है; जैसे, जो तुम्हारे मनमें आवे, सो करो।

६२१—कभी कभी आश्रित वाक्यका सम्बन्धवाचक सर्वनाम और मुख्य वाक्यका निश्चयवाचक सर्वनाम दोनो अनुक्त रहते हैं; जैसे, कृष्णने अच्छा किया, कंसको मारा। इसमें 'कंसको' पदके पहले 'जो' सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम अनुक्त है।

६२२—कभी कभी मुख्य वाक्यमे प्रश्नवाचक सर्वनाम निश्चयवाचक वा सम्बन्धवाचक सर्वनामके बदले आता है; जैसे, कौन ऐसा शूर है, जो श्रीरामको रणमें जीत सकता है?

क्रियाविशेषणभावापन्न वाक्य

६२३—क्रियाविशेषण-भावापन्न उपवाक्य सम्प्रसारित क्रियाविशेषण ही होता है, इसलिये वह मुख्य वाक्यके विधेयके समय, स्थान, प्रकार, कारण आदिकी विशेषता दिखाता है; जैसे, जब गोपियोंने कृष्णको वहाँ न पाया, तो आपसमें कहने लगीं; जहाँ कस देखता, वहीं उसको कृष्ण ही कृष्ण दिखाई देते थे; ज्यों ज्यों दिन बीतने लगे, त्यों-त्यों दुःख घटने

लगा; जैसे विष्णुने मधुकैटभको मार देवोंका उद्धार किया था, वैसे ही भगवती ने शुम्भनिशुम्भको मार देवताओंको निर्भय कर दिया।

६२४—कभी कभी तात्कालिकता जतानेके लिये मुख्य वाक्यके आरम्भमें 'कि' अव्यय लगाया जाता है; जैसे शेर भूखा बैठा ही था कि खरहा आ पहुँचा।

६२५—हेतुदर्शक क्रियाविशेषणवाले आश्रित वाक्यसे मुख्य वाक्यके (१) कारण, (२) परिणाम अथवा (३) नियम या शर्तका पता लगता है; जैसे, (१) जो हमें अपना मित्र जानो, तो बात मानो; जो जानते कि प्रीतिका ऐसा फल होगा, तो क्यों प्रीति करते ? (२) प्राणीको संसार में दुख ही बदा है, तो उपाय ही क्या है ? (३) कल जो शत्रु चढ आवेगा, तो प्रजा बेतरह लुटे और पिटेगी।

६२६—नियम या शर्तें भी तीन तरहकी होती हैं, (१) सम्भव (२) असम्भव और (३) वास्तविक; जैसे, (सम्भव) जो कल चार पाहुने आ गये, तो कैसे खिलाओगी ? (असम्भव) जो मैं उनकी बात मान लेता, तो क्या न पाता ? (वास्तविक) जो मैं तुम्हारा काम बना दूँगा, तो मिहनताना जरूर लूँगा।

६२७—नियमवाचक क्रियाविशेषणवाले वाक्यका एक रूप और है, जिससे जान पड़ता है कि कुछ बात मानी जाती है और कुछ नहीं। इसमें आश्रित वाक्य 'यद्यपि' 'जो' वा 'जो भी' जैसे, किसी अव्यय से प्रारम्भ होता है और मुख्य वाक्यका आरम्भ 'तथापि', 'तो' वा 'तो भी', 'पर' वा 'परन्तु' से होता है; जैसे, यद्यपि देहकी रक्षाका बड़ा यत्न किया जाता है, तथापि यह नष्ट होती ही है; जो मैं समझता कि तुम धोखा दोगे, तो कभी तुम्हारा साथ न करता; तुम ज्ञानी हो, फिर भी अज्ञानीकी सी बातें करते हो।

६२८—इस प्रकार का भाव आश्रित वाक्यको 'चाहे' से और मुख्य वाक्यको 'पर' वा 'परन्तु' से प्रारम्भ करनेसे भी प्रकट होता है; जैसे चाहे जितनी सफाई दो, पर तुम्हारी चोरी खुल गयी।

६२९—आश्रित और मुख्य वाक्य समुच्चयबोधक अव्ययसे रहित भी हो सकते हैं; जैसे, चुनाव में हार गये, तो क्या हुआ ? यद्यपि वसंत नहीं है, आम बौरने लग गया; मार न पड़गी जो झूठ न बोलोगे।

प्रश्नवाले वाक्य

६३०—प्रश्नवाले वाक्य (interrogative sentence) दो तरहके होते हैं। एकमें तो प्रश्नका चिह्न स्पष्ट रहता है और दूसरेमें पूछनेके ढंगसे प्रश्नका स्वरूप जाना जाता है। पहले तरहके वाक्योंमें 'क्या', 'कैसे', 'कभी', 'कहाँ', 'तो' और 'न' अव्यय रहते हैं; जैसे, क्या कहा ? कैसे जाना ? कभी देखा भी है ? कहीं जाओगे ? बाजार चलते हो तो ? छुट्टीमें घर गये थे न ?

६३१—दूसरे ढंगके वाक्य लिखनेके समय तो उनके पीछे प्रश्नका चिह्न लगा दिया जाता है और बोलनेमें मुखकी आकृति और बोलनेका ढंग उसे प्रश्न बताता है, जैसे, चलते हो ?

अभ्यास

१—समानाधिकरण और असमानाधिकरण संयुक्त वाक्योंमें क्या अन्तर है, उदाहरण सहित बताओ। २—आश्रित संयुक्त वाक्यके कितने प्रकार होते हैं और उनकी विशेषताएँ क्या हैं ?

वाक्यविश्लेषण

६३२—वाक्यके प्रत्येक अंगको अलग अलग करके दूसरे अंग व अंगोंसे उसका सम्बन्ध बताना वाक्यविश्लेषण (analysis) कहाता

है। वाक्यविश्लेषण करनेके पहले यह बताना चाहिये कि वाक्य सरल है या जटिल वा संयुक्त और संयुक्त या जटिल हो, तो पहले उसके खंड करके विश्लेषण करना चाहिये।

६३३—वाक्यविश्लेषणमें ये बातें बतानी चाहियेः—(१) उद्देश्य, (४) विधेय और (३) उनके सम्प्रसारक यदि हों; जैसे, (१) सब लोग पण्डित नहीं होते, (२) साँझकी हवासे पेड़ोंकी डालियाँ हिलने-पर जान पड़ा कि पक्षियों को बुलानेको वे इशारा करते हैं।

(१) सरल वाक्य—

सब लोग—उद्देश्य

नहीं होते—विधेय

पण्डित—कर्मपद—विधेयका सम्प्रसारक

(२) संयुक्त वाक्य—

पक्षियोंका बुलानेको वे इशारा करते (मुख्य वाक्य)

और—साँझकी हवासे पेडोंकी डालियाँ हिलनेपर जान पड़ा (आश्रित वाक्य)

मुख्य वाक्य—

वे—उद्देश्य

इशारा करते हैं—विधेय

पक्षियोंको बुलानेको—विधेयका सम्प्रसारक

आश्रित वाक्य—

यह (अनुक्त)—उद्देश्य

जान पड़ा—विधेय

साँझकी हवासे पेड़ोंकी डालियां हिलनेपर-विधेयका सम्प्रसारक

सम्प्रसारकका विश्लेषण—

साँझकी—सम्बन्धपद, 'हवासे' पदका विशेषण

पेड़ोंकी—सम्बन्धपद, 'डालियाँ' पदका विशेषण

डालियाँ हिलनेपर—विधेयका सम्प्रसारक

अभ्यास

१—वाक्यविशेषण किसे कहते हे ?

२—वाक्यविश्लेपण किस प्रकार करना होता हैं ?

पदच्छेद वा पदपरिचय

६३४—वाक्यके प्रत्येक पदको अलग अलग करके उसका स्वरूप और दूसरे पदसे सम्बन्ध बताना पदच्छेद वा पदपरिचय (parsing) कहाता हैं; जैसे, (१) आकाशकी लहरें आकर आँखोंमें लगकर मस्तिष्कको हिलाती हैं। (२) रामचन्द्रने बानरोंकी सेना लेकर लंकापर चढाई की और रावण सहित राक्षसों को मार डाला।

पदच्छेद (१) आकाशकी—सम्बन्धपद, 'लहरें' कर्त्ताका विशेषण।

लहरें—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, पहली विभक्ति 'हिलाती हे' क्रियाका कर्त्ता।

आकर—असमापिका क्रिया, कर्त्तासे सम्बद्ध।

आँखोंमें—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, पाँचवी विभक्ति, अधिकरण कारक।

लगकर—असमापिका क्रिया, अधिकरणसे सम्बद्ध।

मस्तिष्कको—जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, दूसरी विभक्ति 'लहरें' कर्त्ताका कर्मपद।

हिलाती हैं—सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्त्तमानकाल, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'लहरें' कर्त्ताकी क्रिया।

पदच्छेद (२) रामचन्द्रने—नामवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, तीसरी विभक्ति, 'चढाई की' क्रियाका कर्त्ता।

वानरोंकी—जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, बहुवचन, सम्बन्धपद 'सेना' पदका विशेषण।

सेना—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, पहली विभक्ति कर्मपद।

लेकर—असमापिका क्रिया, कर्त्तासे सम्बद्ध।

लंकापर—नामवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पर' के योगसे अव्ययीभाव समास, अधिकरण कारक।

चढाई की—सकर्मक क्रिया, कर्मवाच्य, भूतकाल, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'रामचन्द्रने' कर्त्ताकी क्रिया।

और—समुच्चयबोधक संयोजक अव्यय।

रावणसहित—नामवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, सहितके योगमे चौथी विभक्ति।

राक्षसोंको—जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, बहुवचन, दूसरी विभक्ति, कर्मपद 'मार डाला' क्रियाका कर्म।

मार डाला—सकर्मक क्रिया, भाववाच्य, भूतकाल, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन।

अभ्यास

१— पदपरिचयका क्या अभिप्राय है और वह कैसे किया जाता है?

न्यूनपदपूरण

६३१—किसी वाक्यमें कोई अनुक्त वा न्यून पद रह जाय या छोड़ दिया जाय, तो उसे रख देने वा भर देनेको न्यूनपदपूरण वा अनुक्त-

पदपूरण (filling the ellipsis) कहते हैं। अर्थकी ओर ध्यान देकर न्यूनपद की पूर्ति करनी होती है।

६३६—नीचे लिखे नियम न्यूनपदपूरणमें सहायक होते है :—

(१) वाक्यके आरम्भमे न्यूनपद रहे और उसके बाद विशेष्य हो तो वह (अ)सम्बन्धसूचक अव्यय, (आ) सर्वनामपद, (इ) अधिकरण कारक (ई) कर्त्तृपद अथवा इसका विशेषण हो सकता है।

(२) यदि विशेष्यके बादका पद विशेषण हो, तो विशेषणका विशेषण हो सकता है।

न्यून पदोंके उदाहरण

—परमेश्वर कृपा कर। —पुरुष किसीको गाली नहीं देते।

—मनुष्य देह पाकर भगवानका भजन नहीं करता। —जन्म वृथा है।

—कोई भेद अवश्य है। —जर्मनीको जीता। —बड़ी इज्जत पायी।

(३) विशेष्यके पहले न्यूनपद विशेषण होता है।

(४) विशेषणके बादका न्यूनपद विशेष्य या विशेषण होता है।

(५) क्रियापदके पहलेका पद न्यून हो, तो क्रियाविशेषण वा अधिकरण कारक होता है।

(६) पहले वाक्यमें 'यदि', 'यद्यपि', 'जो', आदिसा कोई अव्यय रहे, तो दूसरे वाक्यका आरम्भ 'तो' 'तथापि' जैसे अव्यय होगा।

(७) 'अपेक्षा', 'से' प्रभृतियुक्त पदके बाद 'वर', 'वरञ्च', 'बल्कि' वा 'अपितु' अव्यय रहेगा।

(८) आगे 'जितना', 'जब', 'जैसे' वा 'जहाँ' रहनेसे बाद 'उतना', 'तब', 'तैसे', वा 'वहां' रहेगा।

अभ्यास

१—पदपूरण किसे कहते हैं ।

२—पदपूरण करनेके उपाय क्या हैं ?

सामान्य अशुद्धियोंका शुद्धिकरण

Correction of Common Errors

पटना विश्वविद्यालय की गत कई वर्षोंकी मेट्रिक, आई० ए० और बी० ए० परीक्षाओं तथा डिपार्टमेंटल परीक्षाओंके प्रश्नपत्रोंमें जो अशुद्ध वाक्य शुद्ध करनेको दिये गये थे, वे इस प्रकार थे :—

(अ) जब नलका अयसा दुर्दशा हुई तब उसने दमेन्तीसे बोला कि अयसी आपतीमें हम और तू अलग हो जायं। दमेन्ती कहा हे राजा तेरा बात सुनकर मेरा छाती फटता है। ऐसे बिपत्तीमे हम तुमको छोड़कर किस तरह जा सकते हैं। जब तुम मारगका थाका अउर भूखा अपना पूरब अवस्थाका सुध समरन करेगा तो हम तेरे दुःखका साथी हूंगा।

(आ) मंदीरका भीतरवाला चारिका भीतपर पाथरमें खोदा हुआ अनेक प्रकारका देवमूर्तियाँ बना हैं जिनका आकित आरजोंका मूरतियोंसे बहुत मिलते हैं। इनके अतीरक्त उश मंदीरमें पाथरोंपर अयसी अदभुत चितकारियां हैं जिसको देखनेसे अचरज होती है।

(इ) बिल्ली उत्तर दी—हाँ, आपकी प्रभूता मुझे शक्तिमान बिल्ली बनायी है। अभी मैं दूसरे विल्लियोंसे डर नहीं करता हूं, पर मैं एक नयी वैरी पायी हूं।

(ई) एक राजा जब नींदमे पडा था की उनका परम भक्त सेवक एक वानर उन्हें पंखा झल रहा था। एक मक्खीको बार बार उसके छाती

पर बैठता देख बानर तलवार चलाया। राजा मर गया। मक्खी तो पहले ही उड़ गया।

(उ) रामचन्द्र लंकाको घेर लिये।

(ऊ) उन एक ग्रन्थके विषयमें पंडितजी कौनसी सम्मति दिये हैं?

(ए) उस लड़केने इस पुस्तकको पढ़े हुए थे।

(ऐ) मैं आपका कृपापत्र पाया। बांचके बड़ा प्रसन्न हुआ। आप जो पुस्तकें मेरे पास ऐसे कृपासे भेजे हैं, सो बहुत ही अच्छे हैं, मैंने संस्कृतमें दो नवीन ग्रन्थ बनाया हूं।

शुद्ध रूप और उनके कारण

(अ) जब नलकी ऐसी दुर्दशा हुई, तब वे दमयन्तीसे बोले कि ऐसी आपत्तिमें हम और तुम अलग हो जायं। दमयन्ती ने कहा कि राजा तुम्हारी बात सुनकर मेरी छाती फटती है। ऐसी विपत्तिमें हम तुमको छोड़कर किस तरह जा सकती हैं? जब तुम मार्गके थके और भूखे अपनी पूर्व अवस्थाकी सुध करोगे वा अवस्था का स्मरण करोगे, तो हम तुम्हारे दुःखकी संगिनी होंगी।

'दुर्दशा' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसका विशेषण स्त्रीलिंग 'ऐसी' रखा। 'बोलना' सकर्मक क्रिया है, पर उसका प्रयोग कर्मवाच्यमें नहीं होता, इसलिए पहली विभक्तिमें कर्त्ता रखा और राजा थे, इसलिए आदरार्थ बहुवचन दिया। 'बात' स्त्रीलिंग है, इसलिए पहले आया हुआ सम्बन्धपद विशेषण होनेके कारण 'तेरी' होना चाहिये, परन्तु राजा और पति है, इसलिए बहुवचन 'तुम्हारी' पद दिया। 'छाती' स्त्रीलिंग है, इसलिए पहला रखा हुआ सम्बन्धपद विशेषण 'मेरी' दिया और इसी प्रकार 'फटती है' स्त्रीलिंग क्रियापद दिया। विपत्ति स्त्रीलिंग है, इसलिए साहश्यवाचक विशेषण भी स्त्रीलिंग कर दिया। बोलनेवाली

स्त्री है, इसलिए 'हम' का क्रियापद भी स्त्रीलिंग बहुवचनमें किया। उर्दू तथा बोलचालमे बहुवचन पुंलिंग क्रियापद भी देते हैं। 'तुम' के अनुसार 'मार्गके थके और भूखे' बहुवचनका रूप दिया। 'सुख'के पूर्व संबंध प्रत्यय स्त्रीलिंग दिया, क्योंकि वह स्त्रीलिंग है, इसीसे 'अपना' 'अपनी' किया। 'तुम' मध्यमपुरुष बहुवचन है; इसलिए उसके अनुकूल क्रिया दी गयी। बोलनेवाली स्त्री है, इससे 'दुखकी संगिनी हूंगी' स्त्रीलिंग क्रियापद और सम्बन्धपद दिया।

(आ) मन्दिरके भीतरवाली चौथी भीतपर पत्थरपर खुदी हुई अनेक प्रकारकी देवमूर्त्तियां हैं, जिनकी आकृति आर्योंकी मूर्त्तियोंसे बहुत मिलती है। इसके अतिरिक्त उस मन्दिरमें पत्थरोंपर ऐसी चित्रकारी है, जिसको देखनेसे अचरज होता है।

'भीत' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसके विशेषण भी स्त्रीलिंग होने चाहिये। 'भीतरवाली' और 'चौथी' दोनो विशेषण स्त्रीलिंग दिये। 'भीतर' सम्बन्धसूचक अव्यय है, जिससे उसके योगमें सम्बन्ध प्रत्यय सामान्यरूपमें 'मन्दिरके' किया। इसी प्रकार देवमूर्त्तियोंके विशेषण भी स्त्रीलिंग होने चाहिये, जो 'खुदी हुई अनेक प्रकारकी' किये गये। 'चित्रकारी' का बहुवचन अनावश्यक है। 'अचरज' पुंलिंग एकवचन है, इसलिये उसके अनुकूल क्रियापद दिया गया।

(इ) बिल्लीने उत्तर दिया, हां, आपकी प्रभुताने मुझे शक्तिमती बिल्ली बनाया है। अब मैं दूसरी बिल्लियोंसे नहीं डरती, पर मुझे एक नया वैरी मिला है।

'देना' क्रिया सकर्मक है, इसलिये कर्त्तापद 'बिल्लीने' तीसरी विभक्ति की। 'बनाना' क्रिया सकर्मक है, इसीलिये उसके कर्त्तामें तीसरी विभक्ति 'प्रभुताने' की। शक्तिमान् पुंलिंग है और यहाँ बिल्लीका विशेषण होना

पर बैठता देख वानर तलवार चलाया। राजा मर गया। मक्खी तो पहले ही उड़ गया।

(उ) रामचन्द्र लंकाको घेर लिये।

(ऊ) उन एक ग्रन्थके विषयमें पंडितजी कौनसी सम्मति दिये हैं?

(ए) उस लड़केने इस पुस्तकको पढ़े हुए थे।

(ऐ) मैं आपका कृपापत्र पाया। बांचके बड़ा प्रसन्न हुआ। आप जो पुस्तकें मेरे पास ऐसे कृपासे भेजे हैं, सो बहुत ही अच्छे हैं, मैंने संस्कृतमें दो नवीन ग्रन्थ बनाया हूं।

शुद्ध रूप और उनके कारण

(अ) जब नलको ऐसी दुर्दशा हुई, तब वे दमयन्तीसे बोले कि ऐसी आपत्तिमें हम और तुम अलग हो जायं। दमयन्ती ने कहा कि राजा तुम्हारी बात सुनकर मेरी छाती फटती है। ऐसी विपत्तिमें हम तुमको छोड़कर किस तरह जा सकती हैं? जब तुम मार्गके थके और भूखे अपनी पूर्व अवस्थाकी सुध करोगे वा अवस्था का स्मरण करोगे, तो हम तुम्हारे दुःखकी संगिनी होंगी।

'दुर्दशा' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसका विशेषण स्त्रीलिंग 'ऐसी' रखा। 'बोलना' सकर्मक क्रिया है, पर उसका प्रयोग कर्मवाच्यमें नहीं होता, इसलिए पहली विभक्तिमें कर्त्ता रखा और राजा थे, इसलिए आदरार्थ बहुवचन दिया। 'बात' स्त्रीलिंग है, इसलिए पहले आया हुआ सम्बन्धपद विशेषण होनेके कारण 'तेरी' होना चाहिये, परन्तु राजा और पति है, इसलिए बहुवचन 'तुम्हारी' पद दिया। 'छाती' स्त्रीलिंग है, इसलिए पहला रखा हुआ सम्बन्धपद विशेषण 'मेरी' दिया और इसी प्रकार 'फटती है' स्त्रीलिंग क्रियापद दिया। विपत्ति स्त्रीलिंग है, इसलिए सादृश्यवाचक विशेषण भी स्त्रीलिंग कर दिया। बोलनेवाली

स्त्री है, इसलिए 'हम' का क्रियापद भी स्त्रीलिंग बहुवचनमें किया। उर्दू तथा बोलचालमें बहुवचन पुंलिंग क्रियापद भी देते हैं। 'तुम' के अनुसार 'मार्गके थके और भूखे' बहुवचनका रूप दिया। 'सुख'के पूर्व संबंध प्रत्यय स्त्रीलिंग दिया, क्योंकि वह स्त्रीलिंग है, इसीसे 'अपना' 'अपनी' किया। 'तुम' मध्यमपुरुष बहुवचन है; इसलिए उसके अनुकूल क्रिया दी गयी। बोलनेवाली स्त्री है, इससे 'दुखकी संगिनी हूंगी' स्त्रीलिंग क्रियापद और सम्बन्धपद दिया।

(आ) मन्दिरके भीतरवाली चौथी भीतपर पत्थरपर खुदी हुई अनेक प्रकारकी देवमूर्त्तियां हैं, जिनकी आकृति आर्योंकी मूर्त्तियोंसे बहुत मिलती है। इसके अतिरिक्त उस मन्दिरमें पत्थरोंपर ऐसी चित्रकारी है, जिसको देखनेसे अचरज होता है।

'भीत' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसके विशेषण भी स्त्रीलिंग होने चाहिये। 'भीतरवाली' और 'चौथी' दोनो विशेषण स्त्रीलिंग दिये। 'भीतर' सम्बन्धसूचक अव्यय है, जिससे उसके योगमे सम्बन्ध प्रत्यय सामान्यरूपमें 'मन्दिरके' किया। इसी प्रकार देवमूर्त्तियोंके विशेषण भी स्त्रीलिंग होने चाहिये, जो 'खुदी हुई अनेक प्रकारकी' किये गये। 'चित्रकारी' का बहुवचन अनावश्यक है। 'अचरज' पुंलिंग एकवचन है, इसलिये उसके अनुकूल क्रियापद दिया गया।

(इ) बिल्लीने उत्तर दिया, हां, आपकी प्रभुताने मुझे शक्तिमती बिल्ली बनाया है। अब मैं दूसरी बिल्लियोंसे नहीं डरती, पर मुझे एक नया वैरी मिला है।

'देना' क्रिया सकर्मक है, इसलिये कर्त्तापद 'बिल्लीने' तीसरी विभक्ति की। 'बनाना' क्रिया सकर्मक है, इसीलिये उसके कर्त्तामें तीसरी विभक्ति 'प्रभुताने' की। शक्तिमान् पुंलिंग है और यहाँ बिल्लीका विशेषण होना

चाहिये स्त्रीलिंग, इसलिये 'शक्तिमती' किया। 'अभी' ठीक नहीं है, क्योंकि उसी समयसे प्रयोजन नहीं है, उसके बादसे भी है, इससे 'अब' किया। 'डरना' क्रियासे 'डर करना' अर्थ होता है, इसलिये 'नहीं डरती' कर दिया। अन्तिम वाक्य अंग्रेजीका उल्था जान पड़ता है; हिन्दीमें उसका जैसा रूप होता है, वह दे दिया है।

(ई) एक राजा जब नींदमें पड़ा (सोता) था, तब उसका परम-भक्त सेवक एक बानर उसपर (वा उसके) पंखा झल रहा था। एक मक्खी उसकी छाती पर बार बार बैठती देख बानरने तलवार चलायी। राजा मर गया। मक्खी पहले ही उड़ गयी थी।

'सोता' बढ़ा देनेसे भाव बहुत अच्छा हो जाता है। पंखा किसीपर वा किसीके झला जाता है, इसलिये वैसा ही कर दिया। मक्खी स्त्रीलिंग है, इसलिये उसका पदपूरक विशेषण भी स्त्रीलिंग होना चाहिये। वह 'बैठती' किया गया। 'तलवार' कर्मपद स्त्रीलिंग है, इसलिये कर्मवाच्य होनेके कारण इसीके अनुसार क्रियापद 'चलायी' भी स्त्रीलिंग हुआ। 'तो' अनावश्यक था, इसलिये हटा दिया। पर उसके उड़ जाने बाद राजा मरा, इसलिये उसका क्रियापद पूर्णभूतमें कर दिया।

(उ) रामचन्द्रजी ने लंकाको घेर लिया या रामचन्द्रजीने लंका घेर ली।

पहला भाववाच्यमें और दूसरा कर्मवाच्यमें है, इसलिये पहलेमें कर्त्तामें पहली और कर्ममें दूसरी विभक्ति है तथा क्रियापद पुंलिंग एक-वचनमें है। दूसरेमें कर्त्तामें तीसरी और कर्ममें पहली विभक्ति है तथा कर्मके लिंगवचनके अनुसार क्रियापद है।

(ऊ) उस एक ग्रन्थ के विषयमें पण्डितजीने क्या सम्मति दी है?

"ग्रन्थ" एक वचन है, इसलिये उसका विशेषण भी एकवचन

सामान्य रूपमें होना चाहिये, इससे 'उन'' हटाकर ''उस'' किया। ''सम्मति'' स्त्रीलिंग है और कर्मवाच्यमें कर्मपदके अनुसार क्रियापदके लिंगवचन होने चाहियें, इसलिये ''दिया'' हटाकर ''दी'' स्त्रीलिंग क्रियापद रख दिया। ''कौनसी'' पद कई वस्तुओंमें एककी पहचानके लिये आता है। यहां बहुतसी सम्मतियां होतीं, तो ''कौनसी'' प्रयोग ठीक था, पर ऐसा नहीं है, इसलिये प्रश्नवाचक दूसरा सर्वनाम ''क्या'' उसकी जगह बैठा दिया।

(१) वह लड़का इस पुस्तकको पढे था वा वह लड़का यह पुस्तक पढे था।

यह कर्तृवाच्य है, इसलिये कर्त्तामें पहली विभक्ति और कर्ममें दूसरी या पहली विभक्ति हुई तथा संयुक्त क्रियाका पूर्व अंश अपरिवर्त्तनीय कृदन्त होनेके कारण ज्योंका त्यों रहा और क्रियाका उत्तर अंश कर्त्ताके लिंगवचनानुसार बदला।

(ऐ) मैंने आपका कृपापत्र पाया। बांचकर बड़ा प्रसन्न हुआ। आपने जो पुस्तकें मेरे पास ऐसी कृपासे भेजी हैं, वे बहुत ही अच्छी हैं। मैंने संस्कृतमें दो नवीन ग्रन्थ बनाये हैं।

पहले वाक्यमें 'पाया' सकर्मक क्रिया भूतकालमें है, इसलिये वह कर्मवाच्यमें होगा, जिसमें कर्त्तामें तीसरी विभक्ति होती है, इसलिये उसे 'मैंने' किया। दूसरे वाक्यमें कोई अशुद्धि नहीं है, परन्तु असमापिका क्रियाका प्रत्यय 'के' 'पुराना' पड गया है। आजकल उसकी जगह 'कर' लिखा बोला जाता है, इसलिये 'कर' कर दिया। 'भेजना' क्रिया भी सकर्मक है और तीसरे वाक्यमें 'पुस्तकें' उसका कर्म है, इसलिये यह भी कर्मवाच्यमें होना चाहिये। इस कारण कर्त्तामें तीसरी विभक्ति 'आपने' की। 'कृपा' स्त्रीलिंगका विशेषण 'ऐसे' अशुद्ध था, इससे 'ऐसी' किया।

"पुस्तकें' स्त्रीलिंग है। इसलिये उसका पदपूरक विशेषण 'अच्छे' अशुद्ध था। उसे 'अच्छी' कर दिया। अन्तिम वाक्यमें 'बनाना' क्रिया सकर्मक है, इसलिये भूतकालमें यह कर्मवाच्यमें होगी। 'ग्रन्थ' पुंलिंग बहुवचनमें है, इसलिये क्रियापद 'बनाये हैं' भी पुंलिंग बहुवचन कर दिया,

कलकत्ता विश्वविद्यालयकी बी० ए०, आई० ए० और मैट्रिककी गत कई वर्षोंकी परीक्षाओंके हिन्दी प्रश्नपत्रोंमें शुद्ध करनेके लिये ये अशुद्ध वाक्य दिये गये थे :—

१—इतना बात सुनकर वह विचारने लगे कि यह कौन हैं ?

२—यहां रात दिन बहुत सा लोग आया जाया करता है।

३—आप जो काम करनेका मुझे आज्ञा करेगा, मैं वह काम तुरन्त करेंगे।

४—मैंने तो दो महिना हुआ चिट्ठी लिखा था, अबतक उसका जवाब नहीं मिली।

५—वह लड़का मार खाया।

६—रात हो गया इसलिये आ नहीं सकुंगा।

७—साहबने बोला कि तुम दोषी है।

८—पिताजी आज मुझे एक रुपया दिये है।

९—मैं उनको कहा था कि तुम मत जाओ।

१०—आज मुझे बहुत चिट्ठी मिली है।

११—कोई देशमें मनुष्यका सब आवश्यक वस्तु नहीं मिलता।

१२—कौन आदमीने यह किताब चुरा लायी है।

१३—मैं मेरे भाईको देखनेको जाती हूं।

१४—यह लकड़ीने दही गिरा दी।

१५—वह नौकरने हां ना कुछ न बोला।

१६—बालिकाओं, मन देकर पढ़ो।

१७—वह हरेक कामोंसे भागती है।

१८—वह कौन आदमीकी लड़की हैं।

१९—मेरा पिताजी यह किताब पढ़े थे।

२०—वह इतना उन्नति कर ली जिसका हद नहीं।

२१—हम कल बनारससे आया है।

२२—रामका घरमें आजकल कोई आदमी नहीं है।

२३—वह आदमियोंने रामको कल बहुत मारा था।

२४—हम रामको पूछा कि तुम कैसा है?

२५—मास्टर साहब आज मुझे यहां आनेको कहे थे।

२६—आज बहुत गर्मी है, चलो बागका ठंडा हवा खा आऊं।

२७—रामकी मां दस रुपये भेजी है।

२८—आज सवेरे मैं चार गरम जलेबी खाये थे।

२९—तुमने यह किताब कौन दूकानसे लाया था या किससे लिया था।

३०—भाई बहनें आ रहे है।

३१—रावनने बोला कि तुम हमारा बात मान लो, नहीं तो हम जरूर मार डालूँगा।

३२—आपका दर्शन मिले बहुत दिन हुए।

शुद्ध रूप और उनके कारण

१—इतनी बात सुनकर वह विचारने लगा कि यह कौन है? अथवा इतनी बात सुनकर वह विचारने लगे कि यह कौन है?

पहले वाक्यमें 'बात' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसका पुंलिंग 'इतना' न होकर स्त्रीलिंग 'इतनी' होना चाहिये। 'वह' एक वचन है, इससे संयुक्त क्रिया 'बिचारने लगा' भी एकवचनमें होनी चाहिये। 'यह' भी एकवचन

है, इसलिये उसका क्रियापद भी बहुवचन 'हैं' न रखकर एकवचन होना चाहिये। उर्दूवाले 'वह' और 'यह' दोनो सर्वनामोंका प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनोमें करते हैं और हिन्दीके कई प्रसिद्ध लेखकोंने भी उनका अनुकरण किया है, इसलिए 'विचारने लगे' और 'हैं' बहुवचनकी क्रियाएँ भी शुद्ध मानी जा सकती हैं।

२—यहाँ रात दिन बहुतसे लोग आया जाया करते हैं।

रातदिन अशुद्ध नहीं है, परन्तु प्रयोगमें 'दिनरात' पद विशेष देखा जाता है। 'लोग' शब्द हिन्दीमें सदा पुंलिग बहुवचनमें होता है, इसका विशेषण भी पुंलिंग वहुवचन 'बहुतसे' होना चाहिये।

३—आप जो काम करनेकी मुझे आज्ञा करेंगे (देंगे), मैं वह तुरन्त करूँगा।

'आप' मध्यम पुरुषका आदरसूचक सर्वनाम है और सदा बहुवचनमें प्रयुक्त होता है, इसलिये इसकी क्रिया भी बहुवचन 'करेंगे' होनी चाहिये। 'मैं' एकवचन है, इसलिये इसकी क्रिया एकवचन 'करूँगा' होना चाहिये। 'काम' के बदले 'वह' सर्वनाम है ही।

४—मैंने तो दो महीने हुए चिट्ठी लिखी थी, (पर) अबतक उसका जवाब नहीं मिला।

'दो' विशेषणका विशेष्य एकवचनमें नहीं रह सकता, इसलिये 'महिना' न होकर 'महीने' होना चाहिये। 'जवाब' पुंलिंग है, इसलिये उसकी क्रिया पुंलिंग ही होनी चाहिये।

५—उस लड़केने मार खायी।

यह वाक्य कर्मवाच्यमें होना चाहिये, क्योंकि 'खाना' सकर्मक क्रिया है। कर्मवाच्यमें कर्त्ता तीसरी विभक्तिमें और कर्म पहली विभक्तिमें रहता है तथा क्रिया लिगवचनमें कर्मके अनुसार रहती है। यहां 'मार'

कर्मपद स्त्रीलिंग एकवचन है, इसलिये क्रिया 'खायी' हुई और कर्त्ता तीसरी विभक्तिमें 'उस लड़केने' हुआ।

६—रात हो गयी, इसलिये न आ सकूंगा।

'रात' स्त्रीलिंग है, इससे क्रिया 'हो गयी' भी स्त्रीलिंग हुई। 'नहीं' भविष्यकालिक क्रियाके साथ बहुधा नहीं लिखा जाता, 'न' ही रहता है।

७—साहब बोला कि तुम दोषी हो अथवा तू दोषी है।

'बोलना' क्रिया सकर्मक है, पर इसका कर्मवाच्यमे प्रयोग नहीं होता, कर्तृवाच्यमें ही होता है, इसलिये कर्त्तामें पहली विभक्ति 'साहब' ही शुद्ध है, 'साहबने' अशुद्ध है। 'तुम' बहुवचन है, इसलिये इसकी क्रिया भी 'है' न होकर 'हो' हुई। हां, एकवचन कर्त्ता 'तू' कर दें, तो 'है' क्रिया होसकती है।

८—पिताजीने आज मुझे एक रुपया दिया है।

'देना' क्रिया सकर्मक है, जिसका प्रयोग भूतकालमें कर्मवाच्यमें होता है। 'रुपया' कर्म पुंलिंग एकवचनमें है, इसलिये क्रिया भी पुंलिंग एकवचनमें होनी चाहिये और कर्त्ता तीसरी विभक्तिमे होना चाहिये।

९—मैंने उनसे कहा था कि तुम मत जाओ।

'कहना' सकर्मक क्रियाका भूतकालमे कर्मवाच्यमें प्रयोग होता है, इसलिये कर्तामें तीसरी विभक्ति हुई। इस क्रियाके योगमें 'को' आज्ञा-सूचक होता है और साधारण अर्थमें 'से' ही आता है, इससे 'से' क्रिया।

१०—आज मुझे बहुत चिट्ठियां मिली हैं।

'बहुत' विशेषणका विशेष्य एकवचनमे नहीं रह सकता, इसलिये 'चिट्ठियां' बहुवचन पद दिया गया।

११—किसो देशमें मनुष्यको सब आवश्यक वस्तुएं नहीं मिलतीं।

'देशमें' का विशेषण सामान्य रूपमें होना चाहिये, इसलिये 'किसी देशमें' किया। 'वस्तु' स्त्रीलिंग एकवचन है, पर उसका विशेषण 'सब'

बहुवचन है, इसलिये 'वस्तुएं' बहुवचन किया। इसीसे क्रिया 'मिलती' भी स्त्रीलिंग बहुवचनमें हुई।

१२—कौन आदमी वह किताब चुरा लाया है।

'लाना' संयुक्त क्रिया कर्मवाच्यमें प्रयुक्त नहीं होती, इसलिये क्रिया कर्त्ताके अनुसार पुंलिंग एकवचन 'चुरा लाया' की गयी। 'आदमी' कर्त्ता कर्तृवाच्य है, इसलिये वह तीसरी विभक्तिमें नहीं होना चाहिये।

१३—मैं अपने भाईको देखने जाती हूं।

हिन्दीमें निजत्ववाचक शब्द है, इसलिये सम्बन्धवाचक पदके बदले निजत्ववाचक शब्द विशेषणकी भाँति प्रयुक्त हुआ। 'देखनेको' अशुद्ध नहीं है, पर 'देखने' से ही उसका अर्थ निकल आता है।

१४—वह नौकर हाँ ना कुछ न बोला।

'बोला' क्रिया सकर्मक होने पर भी अकर्मकवत् कर्तृवाच्यमें व्यवहृत होती है, इसलिये तीसरी विभक्तिमें कर्त्ता नहीं होता।

१५—इस लड़कीने दही गिरा दिया।

'दही' कर्म पुंलिंग है, इसलिये उसकी क्रिया भी पुंलिंग 'गिरा दिया' हुई। 'लड़कीने' तीसरी विभक्तिमें है, इसलिये उसका विशेषण सामान्य रूपमें होना चाहिये।

१६—बालिकाओ, मन लगाकर पढो।

सम्बोधनका बहुवचन जिस प्रकारसे बनता है, उसमें अनुस्वार नहीं लगता। मन देना अशुद्ध नहीं है, पर मुहावरा 'मन लगाना' है।

१७—वह हरेक कामसे भागती है।

'हरेक' विशेषण एकवचनमें है,इसका विशेष्य बहुवचनमें नहीं होसकता।

१८—वह किस आदमीकी लडकी है, या वे किस आदमीकी लडकी हैं या वह किस आदमीकी लड़की हैं।

'आदमीकी' सम्बन्धपदका विशेषण सामान्यरूपमें होना चाहिये और 'वह' एकवचन कर्त्ताको क्रिया भी एकवचनमें होनी चाहिये, इसलिये क्रिया 'हैं' न करके 'है' की गयी। बहुवचन क्रिया रखी जाय, तो कर्त्ता भी बहुवचनमें होना चाहिये, इसलिये दूसरे वाक्यमें 'वे' कर्त्ता कर दिया। यदि 'वह' बहुवचन मान लिया जाय, तो बहुवचनको क्रिया ठीक ही है।

१९—मेरे पिताजीने यह किताब पढी थी।

'पढ़ना' क्रिया सकर्मक है, इसलिये उसके भूतकालमें कर्मवाच्य होगा अर्थात् कर्मके अनुसार क्रिया होगी और कर्मपद 'किताब' स्त्रीलिंग है, इसलिये 'पढे थे' के बदले 'पढी थी' किया। कर्मवाच्यमे कर्त्तामे तीसरी विभक्ति होती है, इसलिये 'पिताजीने' पद दिया और इसका विशेषण 'मेरा' भी सामान्यरूपमें होना चाहिये, इसलिये 'मेरे' कर दिया।

२०—उसने इतनी उन्नति कर ली जिसकी हद नहीं।

वाक्यका पहला अंश कर्मवाच्य होना चाहिये, इसलिये कर्म 'उन्नति' की क्रिया स्त्रीलिंगमें और कर्त्ता तीसरी विभक्तिमें कर दिया। 'हद' स्त्रीलिंग है, इसलिये इसके विशेषणको भी स्त्रीलिंग रखा।

२१—हम कल बनारससे आये हैं।

'हम कर्त्तापद बहुवचनमें है और कर्तृवाच्यमें होनेके कारण इसकी क्रिया भी बहुवचन 'आये है' कर दी।

२२—रामके घरमे आजकल कोई आदमी नहीं है।

सम्बन्धपद विशेषण होते हैं और विभक्तियुक्त पदके आगे रहनेसे सामान्यरूपमें रखे जाते है। इसलिये 'रामके' किया गया।

२३—उन आदमियोंने कल रामको बहुत मारा था।

'आदमियोंने' कर्त्ता तीसरी विभक्ति बहुवचनमें है, इसलिये उसका विशेषण भी सामान्य रूप बहुवचनमें 'उन' हुआ।

२४—हमने रामसे पूछा कि तुम कैसे हो ?

'पूछना' क्रिया सकर्मक होनेसे भूतकालमें कर्मवाच्य होना चाहिये, इसलिये कर्त्तामें तीसरी विभक्ति की गयी। पूछना क्रिया के साथ दूसरी नहीं, चौथी विभक्ति होती है, इससे 'रामसे' पद दिया। तुम बहुवचन कर्त्ताके साथ क्रिया विशेषण 'कैसे' भी बहुवचन रखा गया और क्रिया भी बहुवचनमें रखी गयी।

२५—मास्टर साहबने आज मुझे यहां आनेको कहा था।

'कहना' क्रिया सकर्मक है, जिससे उसके भूतकालमें कर्मवाच्य होना चाहिये, इसलिये कर्त्तामें 'मास्टर साहबने' तीसरी विभक्ति की गयी और क्रिया पुंलिंग एकवचन की गयी तथा कर्त्ताके अनुसार नहीं रखी गयी।

२६—आज बहुत गर्मी है, चलो बागकी ठंडी हवा खा आवें।

'हवा' स्त्रीलिंगका विशेषण 'ठंडी' किया गया और इसीसे 'बागकी' विशेषण, जो सम्बन्धपदके रूपमें है, स्त्रीलिंगमें रखा गया। दो आदमी हवा खा आवेंगे, इसलिये क्रिया बहुवचनमें की गयी।

२७—रामकी माँने दस रुपये भेजे हैं।

'भेजना' क्रिया सकर्मक है और उसका कर्म रुपये है। पर कर्म पदका विशेषण 'दस' बहुवचन है, इसलिये कर्मपद भी बहुवचन 'रुपये' किया गया। सकर्मक क्रियाके भूतकालिक प्रयोगोंमें कर्मवाच्य होता है, जिसमें क्रियाके लिंगवचन कर्मके अनुसार होते हैं और कर्त्तामें तीसरी विभक्ति होती है, इसलिये इस वाक्यमें 'मांने' कर्त्तापद और 'भेजे हैं' क्रियापद किया गया।

२८—आज सवेरे मैंने चार गरम जलेबियां खायी थीं।

'खाना' सकर्मक क्रिया है जिसके भूतकालका प्रयोग कर्मवाच्यमें होता है और कर्मवाच्यमें कर्त्तामें तीसरी और कर्ममें पहली विभक्ति होती

है तथा कर्मके लिंगवचनके अनुसार क्रिया पदके लिंगवचन होते हैं। 'जलेबी' शब्दके दो विशेषण हैं 'चार' और 'गरम'। 'गरम' से तो एकवचन और बहुवचनका पता नहीं लगता, पर 'चार' शब्द कहता है कि 'जलेबी' नही 'जलेबियां' बहुवचन होना चाहिये और चूंकि 'जलेबियाँ' स्त्रीलिंग बहुवचन है, इसलिये क्रियापद उसके अनुसार 'खायी थीं' हुआ। फिर कर्त्ता भी तीसरी विभक्तिमे 'मैंने' किया गया।

२९—तुम यह किताब किस दूकानसे लाये थे या तुमने यह किताब किस दूकानसे ली थी।

यों तो देखनेमे 'लाना' क्रिया सकर्मक है, परन्तु वास्तवमें वह संयुक्त क्रिया है और 'ले आना' क्रियाका रूपान्तर है, जिसका प्रयोग कर्मवाच्यमें नहीं होता। इसलिये कर्तृवाच्यके अनुसार क्रियापद कर्त्तापदके अनुकूल पुंलिंग बहुवचनमें किया गया। 'दूकानसे' अपादान कारक चौथी विभक्तिमे है, इसलिये इसका विशेषण 'कौन' सामान्य रूपमें होना चाहिये जो 'किस' है।

दूसरे वाक्यमें 'लेना' क्रिया सकर्मक है और उसके भूतकालमें कर्मवाच्य होता है। इसका कर्मपद 'किताब' स्त्रीलिंग एकवचन है, इसलिये कर्मानुसार क्रिया भी स्त्रीलिंग एकवचन हुई और कर्त्तामें तीसरी विभक्ति की गयी।

३०—भाई बहनें आ रही हैं।

'भाई बहनें' द्वन्द्व समास है और इसमें बहुधा अन्तिम पदके अनुसार क्रियाके लिंगवचन होते हैं। इसलिये यह समस्त पद स्त्रीलिंग है और इसके लिंगवचनके अनुसार ही क्रियाके लिंगवचन हैं। यदि 'भाई बहन' पद होता, तो भाईकी प्रधानता के कारण क्रिया पुंलिंग बहुवचन होती, परन्तु 'बहनें' बहुवचन स्त्रीलिंग है, इसलिये इसीके अनुसार क्रिया हुई।

३१—रावन बोला कि तुम हमारी बात मान लो, नहीं तो हम जरूर मार डालेंगे अथवा तुम मेरी बात मानलो, नहीं तो मैं जरूर मार डालूंगा।

'बोलना' क्रिया सकर्मक होनेपर भी इसका प्रयोग कर्मवाच्यमें नहीं होता, इसलिये कर्त्तामें पहली विभक्ति की गयी। 'बात' स्त्रीलिंग है, इसलिये उसका विशेषण-सम्बन्धपद भी स्त्रीलिंगमें 'हमारी' किया गया। 'हम' बहुवचन पुंलिंग है, इसलिये इसकी क्रिया भी पुंलिंग बहुवचनमें रखी गयी। यदि रावन अपने लिये एकवचनका प्रयोग करता, तो वाक्य दूसरे प्रकारका होता।

३२—आपके दर्शन मिले बहुत दिन हुए।

'दर्शन' शब्दका प्रयोग बहुधा बहुवचनमें होता है, इसलिये उसका विशेषण-सम्बन्धपद सामान्य रूपमें किया गया। 'दिन' का विशेषण 'बहुत' तो स्पष्ट ही बहुवचन है, इसलिये क्रिया भी बहुवचन पुंलिंग दी गयी। 'दर्शन' को एकवचन मानना अशुद्ध नहीं है, पर शिष्ट सम्प्रदाय बहुवचनके पक्षमें है।

नीचे लिखे वाक्य भी अशुद्ध हैं:—

१—मुझे क्यों बुलाया गया ?

२—उसको लडका नहीं है।

३—मेरी बातें भली प्रकार सुनो।

४—तुम कभी भी न समझोगे।

५—उसकी कोई भी बात ठीक नहीं।

६—आप आपका काम करो।

७—हम हमारी कहते हैं, तुम तुम्हारी जानो।

८—कलकत्तासे खबर गयी कि चोर थानामें है।

९—आपकी विद्वानता जैसी है, वैसी महानता भी है।

१०—विष्णु दिगम्बरका गायन बहुत कर्णमधुर होता था।

इनके शुद्ध रूप कारण सहित नीचे दिये जाते हैं:—

१—मैं क्यों बुलाया गया ?

अशुद्ध वाक्यमे कर्त्ता नहीं है और ऊपरसे बैठाया भी नहीं जासकता। ऐसा प्रयोग पंजाबियोंके लेखों और भाषणोंमें बहुत होता है और वहींसे हिन्दी उर्दूमें आकर जोरोंसे चल पड़ा है, पर यह अशुद्ध ही है। मुझे हटा कर 'मैं' कर्त्ता कर देनेसे वाक्य शुद्ध हो जाता है और कोई त्रुटि वा अन्तर भी अर्थमे नहीं पड़ता।

२—उसके लड़का नहीं है।

अशुद्ध वाक्य पूरबी जिलोंमे बहुत सुनाई देता है। यहाँ शुद्ध सम्बन्ध जताना है, जिससे अस्तित्व सिद्ध हो। यह काम सम्बन्धपदसे ही सम्भव है। इस वाक्यका अर्थ है, 'उसके घर वा कुलमें लड़का नहीं है।' कर्मपद वा दूसरी विभक्तिसे यह काम नहीं हो सकता।

३—मेरी बातें भले प्रकार सुनो।

'प्रकार' पुंलिंगका विशेषण भी पुंलिंग होता है और चूंकि 'प्रकार' चौथी विभक्तिमें है जिसका चिह्न 'से' अनुक्त है, इसलिये विशेषण भी सामान्य रूपमे रखा गया है।

४—तुम कभी न समझोगे।

'भी' निर्थक है, पर अज्ञानके कारण कुछ लोग यह समझकर लिख देते हैं कि इससे जोर बढ़ता है।

५—उसकी कोई बात ठीक नहीं।

'कोई' शब्दमे 'भी' घुसा हुआ है, क्योंकि संस्कृतका 'कोपि' प्राकृतमे 'कोवी' और हिन्दीमे 'कोई' हुआ है, इसलिये 'भी' निरर्थक है और डबल हो जाता है।

६—आप अपना काम करो।

आप शब्दका सम्बन्ध पद 'आपका' है, उसलिये उससे मध्यम पुरुष का बोध होता है। निजत्वदर्शक शब्द 'अपना' है।

७—हम अपनी कहते हैं, तुम अपनी जानो।

'अपना' 'अपनी' शब्दमें निजत्व है, 'तुम्हारी' 'हमारी' में नहीं। इस तरहकी भूलें राजपूताने और गुजरातके लोग अधिक करते हैं।

८—कलकत्ते से खबर गयी कि चोर थानेकी हवालातमें हैं।

विभक्ति चिह्न लगानेके पूर्व आकारान्त पुंलिंग शब्द एकारान्त कर दिये जाते हैं।

९—आपकी विद्वत्ता जैसी है, वैसी महत्ता भी है।

संस्कृतके विद्वत् शब्द और महत् शब्दोंमें 'तो' प्रत्यय लगनेसे विद्वत्ता और महत्ता शब्द बनते हैं। विद्वान् और महान् पहली विभक्तिके एक वचनके रूप हैं। इनमें भाववाचक प्रत्यय नहीं लगता।

१०—विष्णु दिगम्बरका गान बहुत कर्णमधुर होता था।

गायन शब्द गान वा गाना अर्थमें अशुद्ध है; क्योंकि उसका अर्थ गानेवाला है।

वाक्सम्प्रदाय या मुहावरे

मुहावरा अभ्यास वा आदतको कहते हैं। किसी बातको जिस प्रकार बहुतसे लोग कहते वा लिखते हैं, उसका नाम भी मुहावरा है। किसी बातको उन शब्दों द्वारा न प्रकट करके जिनसे सहजमें उसका बोध हो जाय, अन्य ऐसी शब्दावलीका व्यवहार करना, जिसमें चमत्कार हो, मुहावरा कहाता है। उसके दूसरे नाम वाक्सम्प्रदाय, वाक्रीति, वाक्पद्धति, और वाग्धारा हैं। मुहावरे और कहावतमें अन्तर होता है, यद्यपि कहावतकी तरह उसका भी कुछ न कुछ इतिहास रहता है। कहावत वाक्य रूपमें रहती है और मुहावरेदार वाक्यांशके रूपमें। यह मुहावरा ही

भाषाकी जान है। जो मुहावरेदार भाषा बोल लिख नहीं सकता अथवा जिसकी भाषामें दस पांच मुहावरे भी न हों, उसका भाषा जाननेका दावा कुछ अर्थ नहीं रखता।

विद्यार्थियोंके लाभार्थ मुहावरे नीचे दिये जाते हैं :—

अंगूठा दिखाना = तिरस्कार पूर्वक न देना, छकाना।

अन्धेके हाथ बटेर लगना = भाग्यवश योग्यतासे अधिक पाजाना।

अन्धेकी लकड़ी = असहायका सहारा।

अक्लके पीछे लट्ठ लिये घूमना = बुद्धिके विपरीत कार्य करना।

अक्ल चरने जाना = बुद्धि का अभाव।

अक्लपर पत्थर पड़ना = बुद्धिनाश।

अगर मगर करना = आगा पोछा या पसोपेश करना।

अपना उल्लू सीधा करना = किसीको मूर्ख बनाकर काम निकालना।

अपनासा मुँह लेकर रह जाना = विफलताके कारण लज्जित होना।

अपने पांवों कुल्हाड़ी मारना = आप अपनी हानि कर लेना।

अपने मुँह मियांमिट्ठू बनना = आपही अपनी प्रशंसा करना।

अरण्य रोदन = निष्फल उद्योग।

आँख उठाकर न देखना=(१) अभिमानमें चूर रहना, (२) सलज्ज रहना।

आँखका अन्धा गाँठ का पूरा = धनी मूर्ख।

आँख खुलना = ज्ञान होना।

आँख लगना = (१) नींद आना, (२) प्रेम होना।

आँखें चार होना = साक्षात होना।

आँखें दिखाना = डांटना।

नोट—'हिन्दुस्तानी मुहावरे' नामकी ग्रन्थकारी पुस्तकसे इस विषय का अधिक ज्ञान हो सकता है।

आँखें पथरा जाना = थक जाना ।

आँखोंका तारा = बड़ा प्यारा

आँखोंपर पर्दा पड़ना = दिखाई न देना परिणाम न सूझना ।

आँखोंका कांटा होना या खटकना = बुरा लगना ।

आँच न आने देना = विपद्का वा कष्टका लवलेश न आने देना ।

आँसू पोछना = दिलासा देना, कष्ट करना ।

आकाश पाताल का अन्तर }
जमीन आसमान का फर्क } = बहुत अधिक अन्तर ।

आकाशसे बातें करना = बहुत ऊँचे ।

आगबबूला होना = क्रोधसे भड़क उठना ।

आगमें घी या घीकी आहुति डालना = क्रोध बढाना

आटे दालका भाव मालूम होना = कठिनाईका अनुभव होना ।

आड़े हाथों लेना = सख्त सुस्त कहना या खरी खोटी सुनाना ।

आसन डोलना = चित्तपर प्रभाव पडना ।

आसमानपर चढ़ाना = अत्यन्त प्रशंसा करना ।

आस्तीनका सांप = मित्र के रूपमे शत्रु ।

इज्जत दो कौड़ीकी कर देना = बिलकुल बेइज्जत कर देना ।

ईदका चाँद या दूज का चाँद होना=बडी प्रतीक्षाके बाद दिखाई देना।

उँगली उठाना = दोष देना ।

उँगली पकड़ते पहुंचा पकड़ना = थोड़ासा सहारा मिलते ही चढ बैठना ।

उठा न रखना = कसर न बाकी रखना ।

उड़ती चिड़िया पहचानना = देखते ही समझ लेना ।

उधार खाये बैठना = प्रतीक्षामें रहना ।

उधेड़ बुन करना = सोचना विचारना ।

उलटी गंगा बहाना = बड़े आदमीका छोटेको बड़प्पन देना ।
एकही लकड़ीसे हाँकना = समान व्यवहार करना ।
सब धान बाइस पसेरी समझना = अच्छे बुरेमें भेद न करना ।
कमली डालकर लूटना, खूब हजामत बनाना = उलटे अस्तुरेसे मूंड़ना या खूब ठगना ।
कमर टूटना = असहाय हो जाना ।
कमर सीधी करना=आराम करना ।
कलम तोड़ देना=ऐसा अच्छा लिखना कि वैसा फिर कोई न लिख सके।
कलेजा, छाती या दिल ठंडा होना=शान्ति मिलना ।
कलेजा थामकर या मन मसोसकर रह जाना=विपत्तिका धीरजसे सामना करना ।
कलेजा, हृदय या छाती फटना=अत्यन्त व्याकुल होना ।
कलेजेपर सांप लोटना=ईर्ष्यासे जलना ।
कलेजा मुंह को आना=बड़ा कष्ट होना, घबराना ।
कागज काला करना=व्यर्थ लिखना ।
कागजी घोड़े दौड़ाना=क्रियात्मक कुछ न करना ।
कान काटना=जीतना, बढकर काम करना ।
कानपर जूं न रेंगना=चेत न होना; खबर या पता न लगना ।
कानाफूसी करना=धीरे धीरे कहना ।
कूच कर जाना, गुजर जाना=जाता रहना, मर जाना ।
कुत्ता काटना=पागल होना ।
खटाईमें पड़ना=झंझटमें फँसना ।
ख्याली पुलाव पकाना, हवाई महल बनाना, आकाशमें उड़ना या मनके लड्डू खाना=निराधार कल्पनाएँ करना ।

गड़े मुर्दे उखाड़ना=बीती बातोंकी याद दिलाना।
गुड़ गोबर करना या रंगमें भंग करना=बनी बातको बिगाड़ना।
गरीबीमें आटा गीला=मुसीबत पर मुसीबत आना।
गला घोंटना, गर्दन मारना=अत्यन्त पीड़ित कर हानि पहुँचाना।
गांठ बाँधना=याद रखना
गाल बजाना, डींग हांकना, दूनकी लेना, लखपचोतरी बातें करना=बहुत असत्य बातों द्वारा अपना बड़प्पन जताना।
गुल खिलना=रहस्य प्रकट करना।
गुलछर्रे उड़ाना=मौज करना।
गेहूंके साथ घुन पिसना=सबलके साथ निर्बलका मारा जाना।
गोबर गणेश, मिट्टीका धोंधा, मिट्टीकी मूरत=निकम्मा।
घड़ों पानी पड़ना=बहुत लज्जित होना।
घोड़ा बेंचकर सोना=निश्चिन्त हो जाना।
चंडूखाने की गप्प=निराधार बात।
चिड़िया फँसाना=किसीको स्वार्थ साधनके लिये हाथमें करना।
चिराग बुझना=वंश नाश होना।
चुल्लूभर पानीमें डूबना या डूब मरना=अत्यन्त लज्जित होना।
चेहरेपर हवाइयां उड़ना=घबराना।
चैनकी बशी बजाना=सुखसे दिन बिताना।
चोटी हाथमें होना=अधीन होना।
चोली दामनका साथ=अभिन्न सम्बन्ध।
छठींका दूध याद आना या नानी याद आना=वस्तुतस्थितिका ज्ञान होना।
छातीपर मूंग दलना=अत्यन्त क्लेश देना।
जान हथेलीपर लेना=प्राणोंकी परवा न करना।

जान होठों पर आ जाना=मरण समान कष्ट होना।
जानमें जान आना, जीमें जी आना=मन शान्त होना।
जामेसे या आपेसे बाहर होना=क्रोधमें आकर कुछ विचार न करना।
जी खट्टा होना=असन्तुष्ट व अप्रसन्न होना, प्रीति न रहना।
जी चुराना=काम न करनेको बहाने खोजना।
जीती मक्खी निगलना=जानबूझकर झूठ बोलना।
जूतियाँ चटकाते फिरना=फटे हालों घूमना, दरिद्रतामें रहना
टक्करें मारना=भटकते फिरना।
टट्टीकी ओट शिकार करना=लुक छिपकर वार करना।
टससे न मस होना=न डिगना।
टाट उलटना=दिवाला निकलना।
टायँ टायँ फिस=व्यर्थ।
टुकड़े तोड़ना=रोटी खाना।
टेढ़ी उँगलियों बिना घी न निकलना=सीधेपनसे काम न होना
टेढ़ी खीर=पेचीला मामला।
डंका पीटना=प्रसिद्ध करना।
डूबतेको तिनकेका सहारा=अत्यन्त कष्टमें अत्यल्प सहायता।
ढेढ़ ईंटकी मस्जिद उठाना, डेढ़ चावलकी खिचड़ी पकाना=सबसे अलग रहना।
डेराडंडा उठाना, बोरिया बदना उठाना=रवाना होनेकी तैयारी करना।
तलवे या पैर चूमना=बहुत खुशामद करना।
तिलका ताड़ या राईका पर्वत करना=छोटी चीजको बहुत बढ़ा देना।
तिलांजलि देना=सम्बन्ध तोड़ना।
तूती बोलना, बोलबाला होना, चलता चलना=प्रभुत्व होना।

थूककर चाटना=निन्दा करके गले लगाना।
दम भरना=दावा करना।
दम मारनेकी फुर्सत न होना=अत्यन्त व्यस्त रहना।
दाईसे पेट छिपाना=जानकारसे भेद छिपाना।
दाँतों तले उँगली दबाना=आश्चर्य प्रकट करना।
दालमें काला होना=कोई संदेहजनक बात दिखना।
दाल गलना=काम निकलना।
दिन काटना=बुरे दिन बिताना।
दिमाग चाटना, खोपड़ी चाटना=किसी तरहकी वाहियात ब तें करना।
दिमाग लड़ाना=खूब सोचना विचारना।
दिया बढ़ाना=चिराग ठंढा करना।
दिल गवाही देना, मन बैठना=निश्चय होना।
दिल या तबियत या जी फड़क उठना=चित्तमें प्रसन्नताका संचार होना।
दिल भर जाना, दिलजमई होना=विश्वास होना।
दुखड़ा रोना, राम कहानी कहना=अपने कष्ट सुनाना।
दुम दबाकर भागना=चुपचाप भाग जाना।
दूकान बढ़ाना=दूकान बन्द करना।
दो कौड़ीका कर देना=बहुत बेइज्जत करना।
दो नावोंपर पैर रखना, दो घोड़ोंपर सवार होना=दो भिन्न मनुष्यों या मतों का एक साथ सहारा लेना।
धज्जियाँ उड़ाना=चूर-चूर कर डालना या फाड़ डालना।
धाक या रोब जमाना=प्रभुत्व स्थापित करना या दिखाना।
धोती ढीली होना=घबराहट प्रकट होना।
नमक मिर्च लगाना=बढ़ा चढ़ाकर बताना।

नाक पर मक्खी बैठना=बदनामी होना।
नाक रगड़ना=दीनता दिखाना।
नाकों चने चबाना=अत्यन्त कष्ट भोगना।
नानी मरना, सिट्टी गुम होना, बोलती बन्द होना=निरुत्तर होना।
नाम रख लेना=प्रतिष्ठारक्षा करना।
निन्नानबे का फेर=रुपये जोड़ने या धन कमानेका चक्कर।
नीचा दिखाना=अपमानित करना।
नौ दो ग्यारह होना, लम्बे पड़ना, रफू या रफूचक्कर होना, काफूर होना=भाग जाना या गायब होना।

पट्टी पढ़ाना=सिखलाना।
पतेकी कहना=भेद खोलना।
पत्थर पसीजना=कंजूस का दान करना।
पर्दा डालना, धूल डालना=बात खत्म कर देना।
पर्दा करना=छिपना।
पल्ला छुड़ाना, पिंड छुड़ाना=पीछा छुड़ाना, जान छुड़ाना।
पहाड़ टूट या फट पड़ना, वज्र पड़ना, गाज पड़ना=बड़ी विपत्ति आना।
पाँचो घीमें होना=चारो ओरसे लाभ होना।
पापड़ बेलना=बड़े कष्ट झेलना।
पाला पड़ना=(१) काम बिगड़ जाना; (२) काम पड़ना।
पास न फटकने देना=निकट न आने देना।
पीछे पड़ना=तंग करना।
पीठ ठोंकना=उत्साहित करना।
पुल बांधना=तार लगाना।
पेट काटना=भरपेट न खाना।

पेट चलना=दस्त होना ।
पेटमें चूहे कूदना=भूख लगना ।
पैर उखड़ जाना=निराश हो जाना ।
पोल खोलना=छिपी बात प्रकट करना ।
पौ बारह होना=लाभ होना
फूँक फूँक पैर रखना=बड़ी सावधानीसे चलना ,
बंदर घुड़की=धमकीका दिखाव, दिखाऊ धमकी ।
बगलें झाँकना=कोई उत्तर न बन पड़ना ।
बढाव देना=उत्साहित करना ।
बट्टा लगाना=फर्क आना ।
बलि चढ़ना=कुर्बान होना, शिकार होना, मारा जाना।
बाज आना=छोड़ बैठना ।
बाजार गरम होना=खूब बिकना, बड़ी चर्चा होना।
बाजी मारना, पाला मारना, मैदान मारना=जीतना ।
बातका बतंगड़ करना, बतबढ़ाव करना=छोटी बात को बढ़ाना ।
बायें हाथका खेल=अत्यन्त सहज ।
बालकी खाल निकालना=निरर्थक सूक्ष्म तर्क करना ।
बाल बांका करना=हानि पहुंचाना ।
बालूकी भीत=निकम्मा आधार।
बीड़ा उठाना=प्रतिज्ञा करना।
भंडा फूटना=रहस्य प्रकट होना ।
भिड़ या बर्रके छत्तेको छेड़ना, आफत मोल लेना=दुष्टसे झगड़ना ।
भाग्यचक्र घूमना, भाग्य का पाँसा पलटना, भाग्य फिरना, सितारा चमकना=उन्नति होना ।

भीगी बिल्ली बनना=दबकर बैठना।
भेड़ियाधसान=अन्ध अनुकरण।
मक्खियां मारना=बेकार रहना।
मजा किरकिरा करना=रंगमें भंग करना।
मनकी कली खिलना=अन्तःकरण का प्रसन्न होना।
मसें भीगना, रेख आना=मूछें निकलने लगना।
मात करना=आगे बढ़ जाना।
माल मारना=बहुत कमाना।
मुँहकी खाना=लाजवाब या निरुत्तर होना।
मुँह ताकना=प्रतीक्षा करना, आश्चर्य वा अज्ञान प्रकट करना।
मुँहतोड़ जवाब=निरुत्तरकारी उत्तर।
मुँह बनाना=असन्तोष प्रकट करना।
मुँहमें खून लगना=चस्का लग जाना।
मुँहमें पानी आना; लार टपकना=ललचाना।
मुँह मोड़ना=काम न करना।
मुँह सीना=मुँह बन्द करना।
मुट्ठी गर्म करना=घूस देना।
रंग बदलना=एकसा न रहना।
रंगा स्यार=छद्मवेशी।
रोंगटे खड़े होना=आश्चर्य वा भयके कारण उद्वेग आना।
लट्टू होना=आसक्त होना।
लेनेके देने पड़ना, घरके धान पयालमें मिलना, उलटे रोजे गले पड़ना या छब्बे बनने जाकर दुबे रह जाना=कमाने के बदले खोदेना।
लुटिया डुबाना=प्रतिष्ठा नष्ट करना।

लोहा मानना=उच्चता स्वीकार करना।

लोहा लेना=मुकाबला या सामना करना।

लोहेके चने चबाना=बड़ा कठिन काम करना।

विष (जहर) उगलना=अत्यन्त दूषित बातें कहना।

शहद लगाकर चाटना=किसी काम न आनेवाली वस्तुको महत्त्व देना।

श्रीगणेश करना=आरम्भ करना।

सत्तू बाँधकर पीछे पड़ना=किसी काममें लगनके साथ जुट जाना।

सब्ज बाग दिखाना=लालच दिखाकर फँसाना।

साँप छछूंदरकी गत होना=कुछ करते धरते न बनना, असमंजसमें पड़ना

सिर उठाना=मुकाबिला करनेको खड़ा होना।

स्वाहा करना=फूंकना।

हक्काबक्का रह जाना या दंग रह जाना=आश्चर्यचकित होना।

हजम कर जाना या डकार जाना=न देना।

हवासे बातें करना, उड़ना=बहुत तेज चलना।

हाथ धो बैठना=पानेसे निराश होना।

हाथ धोकर पीछे पड़ना=बेतरह तंग करना।

हाथ पैर फूलना=स्तम्भित होना।

हाथ पैर मारना=प्रयत्न करना।

हाथ बटाना=सहयोग देना।

हाथ साफ करना=ले जाना।